बैंक ऑफ़ बड़ौदा
Bank of Baroda
विजया VIJAYA | देना DENA

अक्षय्यम्

बैंक ऑफ़ बड़ौदा की हिंदी पत्रिका
अप्रैल–जून, 2022 अंक

बैंक द्वारा पद्मश्री मालिनी अवस्थी को ''महाराजा सयाजीराव लोकभाषा सम्मान''

बैंक ने दिनांक 27 मई, 2022 को प्रसिद्ध लोक गायिका पद्मश्री मालिनी अवस्थी को अपने लोक गीतों के माध्यम से भारतीय लोकभाषाओं के प्रसार में महत्त्वपूर्ण योगदान हेतु बैंक के संस्थापक महाराजा सयाजीराव गायकवाड़ तृतीय के नाम से स्थापित महाराजा सयाजीराव लोकभाषा सम्मान से सम्मानित किया. पद्मश्री मालिनी अवस्थी को यह सम्मान बैंक के कार्यपालक निदेशक श्री अजय के खुराना ने प्रदान किया. इस अवसर पर मुख्य महाप्रबंधक (परिचालन) अजय के खोसला एवं प्रमुख (राजभाषा एवं संसदीय समिति) श्री संजय सिंह भी उपस्थित रहे.

शिमला क्षेत्र की कुल्लू शाखा का राजभाषा विषयक निरीक्षण

दिनांक 13 अप्रैल, 2022 को संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप समिति द्वारा शिमला क्षेत्र की कुल्लू शाखा का राजभाषा विषयक निरीक्षण किया गया. इस अवसर पर समिति के माननीय सदस्यों तथा वित्तीय सेवाएं विभाग के पदाधिकारियों के अतिरिक्त अंचल प्रमुख, चंडीगढ़, श्री विमल कुमार नेगी, प्रमुख (राजभाषा एवं संसदीय समिति) श्री संजय सिंह, उप क्षेत्रीय प्रमुख, शिमला क्षेत्र, श्री भूपेन्द्र रोहिल्ला, शाखा प्रमुख, कुल्लू शाखा श्री रणजीत सिंह उपस्थित रहे.

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी का संदेश

प्रिय साथियो,

पत्रिका के इस अंक के माध्यम से आप सभी से पुन: जुड़ना मेरे लिए एक सुखद अनुभव है. एक वित्तीय संस्थान के लिए नए वित्तीय वर्ष की प्रथम तिमाही काफी महत्वपूर्ण होती है और पूरे वर्ष के लिए प्रदर्शन की आधारशिला तैयार करती है. यह अत्यंत हर्ष एवं संतोष का विषय है कि आपके बैंक ने आप सभी के प्रयत्न एवं योगदान के बल पर नए वित्तीय वर्ष का आग़ाज़ शानदार प्रदर्शन के साथ किया है. अप्रैल-जून 2022 तिमाही के परिणाम काफी उत्साहवर्धक रहे हैं. बैंक के सभी वर्टिकल के उत्कृष्ट कार्यनिष्पादन के आधार पर हम व्यवसाय के लगभग सभी मानदंडों पर उत्कृष्ट परिणाम दे पाए हैं. हमारा कुल वैश्विक व्यवसाय वर्ष-दर-वर्ष आधार पर 13.98% बढ़कर लगभग ₹18.72 लाख करोड़ हो गया है, घरेलू अग्रिमों में वर्ष-दर-वर्ष आधार पर जहां 15.7% की वृद्धि दर्ज की गई है वहीं घरेलू जमाएं 8.5% बढ़ी हैं, कासा जमाओं में वर्ष-दर-वर्ष के आधार पर 97 आधार बिंदुओं की बढ़ोत्तरी हुई है और यह 44.18% के सम्मानजनक स्तर तक पहुंच चुका है. बैंक ने आस्ति गुणवत्ता में भी लगातार सुधार करना जारी रखा है. सकल एनपीए में वर्ष-दर-वर्ष आधार पर 260 आधार बिंदु तथा शुद्ध एनपीए में 145 आधार बिंदुओं की गिरावट आई है. इन सभी का परिणाम आपके बैंक द्वारा ₹2168 करोड़ के शुद्ध लाभ के अर्जन के रूप में सामने आया है. इस बेहतरीन प्रदर्शन के लिए मैं आप सभी को बधाई देता हूं. मुझे पूरा विश्वास है कि भविष्य में भी आप अपने प्रयासों को इसी जोश एवं समर्पण के साथ जारी रखेंगे ताकि हमारे बैंक की टॉपलाइन एवं बॉटमलाइन दोनों में ही सतत् वृद्धि होती रहे.

वर्तमान की सफलता काफी महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे हमें और ज्यादा प्रयास करने की ऊर्जा मिलती है परंतु हमारे पास भविष्य की सफलता की नींव रखने की भी महती ज़िम्मेदारी है. मेरे विचार में भविष्य की सफलता की नींव की सर्वाधिक प्रमुख ईंट तकनीक है. भविष्य का हमारा बैंक तकनीक आधारित होगा परंतु हमारा लक्ष्य तकनीक मात्र को बैंक में लाना नहीं है. तकनीक तभी तक हमारे लिए सार्थक है जब इससे ग्राहक-संतुष्टि के स्तर में बढ़ोत्तरी आए, जोखिम प्रबंधन के कार्य को हम बेहतर ढंग से कर पाएं, बैंक के लिए नए आय के साधन जुटा सकें. इस दृष्टि से डिजिटल बैंकिंग हमारे लिए काफी महत्वपूर्ण है क्योंकि इसके माध्यम से ही हम ग्राहकों की सुविधा के लिए तकनीक का उपयोग करते हैं. ग्राहकों के लिए तकनीक के उपयोग का एक बेहतरीन उदाहरण 'बॉब वर्ल्ड' के रूप में आप सबके समक्ष है. मैं आप सभी का अत्यंत आभारी हूं कि आपने अपने अथक प्रयासों के द्वारा एक ही वर्ष में बैंक के आधे गैर-वित्तीय समावेशन ग्राहकों को बॉब वर्ल्ड से जोड़ने का काम किया है और उन्हें इसका लाभ उठाने का अवसर प्रदान किया है और यह बहुत ही बड़ी उपलब्धि है. इस चैनल को हम जितना आगे बढ़ाएंगे हमारा बैंक भी उसी गति से आगे बढ़ेगा.

मौजूदा दौर प्रत्येक भारतीय के लिए एक विशेष दौर है. इस दौर में हमारा देश अपनी आज़ादी के 75 वर्ष पूरे कर स्वतंत्रता की शताब्दी अर्थात् इंडिया@100 की ओर आगे बढ़ रहा है. इस दौर में हम सभी के स्तर पर किए गए परिश्रम से प्राप्त उपलब्धियां बेहतर भारत के निर्माण की नींव रखेंगी. भारत सरकार ने भी इस दौर को खास बनाने के लिए अपनी तरफ से कई पहलें की हैं. आज़ादी के इस अमृत महोत्सव के दौर में हम सभी से यह अपेक्षा है कि हम एक नागरिक की हैसियत से, संस्थान की हैसियत से, समाज का एक हिस्सा होने की हैसियत से देश हित में अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए भारत के भविष्य के निर्माण की ओर सुदृढ़ता से कदम आगे बढ़ाएं. देश को एक बेहतर कल का मजबूत आधार प्रदान करने के लिए हमारे कार्य में समावेशिता जरूरी है ताकि हम इस दौर में उपलब्ध नए संसाधनों के जरिए समाज के प्रत्येक वर्ग को देश की उन्नति का हिस्सा बनाएं.

आज़ादी के अमृत महोत्सव के इस दौर में आइए! हम सभी मिल कर इंडिया@100 के सपने को पूरा करने पर अभी से कार्य को आरंभ करें और अपने बैंक की प्रगति के जरिए राष्ट्र की प्रगति का अटूट हिस्सा बनें.

संजीव चड्ढा
प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी

कार्यपालक निदेशक की डेस्क से

प्रिय साथियो,

'अक्षय्यम्' के नवीनतम अंक के माध्यम से आपसे संवाद करना मेरे लिए हमेशा से विशेष रहा है. पत्रिका के प्रत्येक अंक में मैं बैंकिंग व्यवसाय के साथ-साथ अन्य महत्वपूर्ण विषयों जैसे कि भाषा, तकनीक, पर्यावरण, कृषि आदि पर लगातार अपने विचार आपसे साझा करता आया हूं. अपने विचारों के जरिए पाठकों के बीच कुछ विशेष विषयों के संबंध में जागरूकता उत्पन्न करना तथा एक सकारात्मक सोच का प्रसार करना मेरी प्राथमिकता रही है. मैं इसी माह यानी जुलाई 2022 में बैंक की सेवा से सेवानिवृत्त हो रहा हूं और इस प्रकार 'अक्षय्यम्' के इस अंक के साथ पत्रिका के इस पृष्ठ पर मेरा यह आखिरी संदेश होगा.

बैंक ऑफ़ बड़ौदा में अपने कार्यकाल के दौरान आप सभी के साथ कार्य करने का मेरा सुखद अनुभव रहा है. इस दौरान हम सभी ने बैंकिंग एवं अन्य अहम सामाजिक और आर्थिक परिवर्तनों को देखा और महसूस भी किया है. हम सभी ने बैंकिंग जगत में समामेलन जैसे ऐतिहासिक बदलाव को जीया है. तीन बैंकों की शक्ति के साथ हम आगे बढ़े तो हम बेहतर से बेहतरीन के स्तर पर पहुंचे. तीन संस्कृतियों के मिलन से देश भर में हमारी उपस्थिति और भी सुदृढ़ हुई. हमारा परिवार बढ़ा और उन्नति की राह में हमें और भी कई हुनर मिले जिससे अंततः हमारी कार्यप्रणाली और मजबूत हुई और बैंकिंग व्यवसाय की संभावनाएं बढ़ीं. हमने अपने स्टाफ सदस्यों के लिए तीनों इकाइयों की श्रेष्ठ सुविधाओं को अपनाया. हमारा ग्राहक आधार बढ़ा, साथ में ग्राहकों की विविधता भी बढ़ी. इस तरह पिछला समय बेहद चुनौती भरा रहा परंतु हमने रोमांचक रूप से समामेलन के कार्य को संपन्न किया. आज इस मोड़ पर हम बहुत ही मजबूत स्थिति में आगे की उड़ान भरने हेतु तैयार हैं.

पिछले कुछ वर्षों में हमने बहुत ही चुनौतीपूर्ण और संकट के समय को भी देखा है. हमने बहुत ही साहस के साथ इस दौर का सामना किया. निश्चित रूप से इस दौर में हमने काफी क्षति भी देखी परंतु निरंतर आगे बढ़ने का साहस और हमारी दृढ़ता ने हम सभी को फिर से नया मुकाम हासिल करने को अभिप्रेरित किया है. आज हम नए युग का बैंक बन कर उभरे हैं और भविष्य में होने वाले सारे जरूरी बदलावों की पृष्ठभूमि को पार कर अपने ग्राहकों के लिए नवीनतम और उन्नत उत्पाद एवं सेवाओं की पेशकश कर रहे हैं. हमारा बैंक डिजिटल बैंकिंग के क्षेत्र में बड़ी तेजी से आगे बढ़ा है और मोबाइल बैंकिंग ऐप बॉब वर्ल्ड के जरिए ग्राहकों को एक ही स्थान पर बैंकिंग से संबंधित कई सुविधाएं एक क्लिक में प्रदान कर रहा है. बैंक को नए युग का बैंक बनाने में आप सभी के योगदान की मैं सराहना करता हूं.

मुझे पूरा विश्वास है कि बैंक की उन्नति में आप सभी अपना योगदान पहले की तरह ही जारी रखेंगे. मैं आपसे यह भी आशा करता हूं कि बदलते दौर में आप सभी तमाम जरूरी बदलावों को आत्मसात करेंगे, वक्त के साथ अपडेट होते रहेंगे तथा अपना, अपने सहकर्मियों और परिवार के स्वास्थ्य का भी पूरा ध्यान रखेंगे. इन्हीं शब्दों के साथ मैं आपको पुनः अपनी तरफ से ढेर सारी शुभकामनाएं देता हूं.

शुभकामनाओं सहित,

विक्रमादित्य सिंह खीची

कार्यपालक निदेशक की डेस्क से

प्रिय साथियो,

बैंक की हिन्दी पत्रिका *'अक्षय्यम्'* के नवीनतम अंक के माध्यम से अपने विचार आपसे साझा करना मेरे लिए प्रसन्नता का विषय है. यह पत्रिका राजभाषा विषयक गतिविधियों के साथ-साथ सम सामयिक विषयों पर विविध आलेखों को प्रस्तुत करने का सशक्त माध्यम है.

बैंकिंग व्यवसाय का मूल कार्य जमा संग्रहण और ऋण वितरण है. ग्राहकों को आकर्षक ब्याज दरों पर जमा की सुविधा उपलब्ध कराने की दिशा में हमारा बैंक निरंतर प्रयासरत रहा है और इसमें हम सफल भी रहे हैं. हम ग्राहकों की आवश्यकता और अपेक्षाओं के अनुरूप जमा उत्पादों की पेशकश कर रहे हैं इससे हमारे बैंक के कासा आधार में आशानुरूप वृद्धि हुई है.

भारत सरकार की विभिन्न लोक कल्याणकारी योजनाओं जैसे कि मुद्रा ऋण, पीएम स्वनिधि ऋण योजना को ज़मीनी स्तर पर क्रियान्वित करने और अधिकतम लाभार्थियों तक इन सुविधाओं को पहुंचाने में हमारा बैंक पूरी प्रतिबद्धता के साथ अपनी भूमिका निभा रहा है. एमएसएमई बैंकिंग में उत्कृष्ट कार्यनिष्पादन के लिए बैंक को चार श्रेणियों में पुरस्कार प्राप्त हुए हैं. इसी तरह बैंक को सर्वश्रेष्ठ एमएसएमई बैंक के रूप में प्राप्त सम्मान एमएसएमई क्षेत्र के विकास के प्रति बैंक की प्रतिबद्धता का प्रमाण है.

हमारा बैंक कृषि ऋण और कृषि से संबद्ध उद्योग की आवश्यकताओं को भी ध्यान में रखते हुए आसान शर्तों पर कृषि ऋण सुविधाएं उपलब्ध करवा रहा है, बीकेसीसी, फूड एंड एग्रो, पशुपालन ऋण, बागवानी ऋण, स्वयं सहायता समूहों को वित्तपोषण इत्यादि ऋणों की प्रक्रिया को सरल बनाते हुए ऋण की सुविधा प्रदान कर रहा है. इसके साथ ही एसएचजी के लिए बाधारहित तत्काल बचत बैंक खाता खोलने के लिए टैब बैंकिंग की शुरुआत की गई है.

भूमंडलीकरण और बाजारवाद के दौर में किसी भी व्यावसायिक संस्थान के लिए मार्केटिंग और ब्रांडिंग की भूमिका महत्वपूर्ण है. बैंकिंग उद्योग में हमारा बैंक विशिष्ट पहचान रखता है. एक विश्वसनीय ब्रांडिंग की दृष्टि से हमारा बैंक शीर्ष स्थान पर है. टीम मार्क्समैन एवं एनडीटीवी 24X7 ने बैंक ऑफ़ बड़ौदा को भारत के 50 सबसे भरोसेमंद बीएफ़एसआई ब्रांडों में से एक के रूप में सम्मानित किया है.

जहां तक राजभाषा कार्यान्वयन की बात है तो हमारा बैंक इस दिशा में लगातार उत्कृष्ट कार्यनिष्पादन सुनिश्चित कर रहा है और ग्राहकों को उनकी भाषा में बैंकिंग सुविधाएं उपलब्ध कराने हेतु हमने बैंक की सेवाओं में हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं का समावेश किया है. बैंकिंग लेन-देन संबंधी एसएमएस, व्हाटसऐप बैंकिंग, इंटरनेट बैंकिंग, बॉब वर्ल्ड-मोबाइल बैंकिंग ऐप इत्यादि में प्रमुखता से हिंदी/ क्षेत्रीय भाषाओं की उपलब्धता सुनिश्चित की गई है.

बैंक ने नए वित्तीय वर्ष की शुरूआत अप्रैल-जून 2022 तिमाही के उत्कृष्ट वित्तीय परिणामों के साथ की है.

व्यवसाय के लगभग सभी मानदंडों पर हमने बेहतरीन प्रदर्शन किया है. कासा जमाओं में वृद्धि और एनपीए वसूली ऐसे दो क्षेत्र हैं जिसने बैंक की लाभप्रदता पर उत्साहजनक प्रभाव डाला है. साथ ही बैंकिंग व्यवसाय के धीरे-धीरे डिजिटल मोड में परिवर्तित होते जाने की प्रक्रिया से परिचालन लागत में कमी एवं परिचालन दक्षता में सुधार की व्यापक संभावनाएं पैदा हुई हैं. आइए! हम सभी मिलकर व्यवसाय विकास संबंधी अपने प्रयासों को निरंतर जारी रखते हुए वित्त-वर्ष 2023 को बैंक के लिए व्यावसायिक प्रदर्शन की दृष्टि से एक ऐतिहासिक वर्ष बनाने की दिशा में कार्य करें.

शुभकामनाओं सहित,

अजय के खुराना

कार्यपालक निदेशक की डेस्क से

प्रिय साथियो,

बैंक की हिंदी तिमाही पत्रिका **'अक्षय्यम्'** के माध्यम से आपसे संवाद करना मेरे लिए हर्ष की बात है. इस पत्रिका के माध्यम से जहां एक ओर तिमाही के दौरान आयोजित राजभाषा विषयक गतिविधियों को प्रस्तुत किया जाता है वहीं दूसरी ओर मातृ संस्था के अधिकारियों/ कर्मचारियों को अपनी रचनाधर्मिता, साहित्यिक अभिरुचि को साझा करने हेतु प्रभावी मंच प्रदान किया जाता है.

वित्तीय संस्थान होने के नाते ग्राहकों के हितों का ध्यान रखते हुए व्यावसायिक लक्ष्यों की प्राप्ति ही हमारा मूल ध्येय एवं लक्ष्य होना चाहिए. वर्तमान में डिजिटल माध्यम से ग्राहकों को सहज, सुलभ और सुरक्षित बैंकिंग की सुविधा प्रदान करना पूरे बैंकिंग उद्योग की प्राथमिकता बनकर उभरी है. आज डिजिटलीकृत बैंकिंग यात्रा में हमारा बैंक पूरी प्रतिबद्धता और नवोन्मेषिता की भावना के साथ कार्य कर रहा है तथा इस उद्देश्य की प्राप्ति हेतु बैंक **'बॉब वर्ल्ड'** मोबाइल बैंकिंग ऐप विकसित कर ग्राहकों तक बैंकिंग सुविधाएं आसानी से पहुंचाने के लिए मिशन मोड में कार्य कर रहा है.

बैंकिंग उद्योग में प्रौद्योगिकी को अपनाने और ग्राहकों के डिजिटल बैंकिंग अनुभव को सुगम बनाने की दिशा में हमारा बैंक अग्रणी रहा है तथा इस तथ्य को भारतीय बैंक संघ ने भी सराहा है और फलस्वरूप बैंक को **'बेस्ट टेक्नॉलॉजी बैंक ऑफ़ दि ईयर'** से सम्मानित भी किया है. प्रौद्योगिकी और तकनीक के प्रति हमारे बैंक का दृष्टिकोण सकारात्मक रहा है. भविष्य की बैंकिंग डिजिटल और तकनीक के आधार पर आगे बढ़ेगी और हमारे अधिकांश ग्राहक भी इसी प्लेटफॉर्म को महत्व देंगे. अतः हमें अपनी कार्यपद्धति को समयानुकूल बनाने की आवश्यकता है.

व्यवसाय विकास के लिए ग्राहकों के साथ निरंतर संवाद स्थापित करना जरूरी है. ग्राहकों से संवाद संबंधों में प्रगाढ़ता सृजित करती है और हमारे व्यावसायिक उद्देश्यों की प्राप्ति में इसका विशेष महत्व है. वर्तमान में बैंकिंग उद्योग का स्वरूप तेजी से बदल रहा है. तदनुसार, ग्राहकों के साथ समन्वय स्थापित करते हुए उत्पादों को ग्राहकों के अनुकूल बनाना और कर्मचारियों को इन उत्पादों की कुशल मार्केटिंग हेतु तैयार करना अत्यावश्यक है.

बैंक के उत्पादों का प्रचार-प्रसार हो या ग्राहकों तक पहुंच बनाने की पहल इन दोनों उद्देश्यों में ग्राहकों की पसंदीदा भाषा पर ध्यान देना अत्यंत ही महत्वपूर्ण है. हमारे बैंक द्वारा बैंकिंग सेवाओं में बहुभाषिकता को अपनाया गया है और ग्राहकों की भाषा में उन्हें बैंकिंग सुविधाएं उपलब्ध कराने की दिशा में प्रतिबद्धता के साथ कार्य किया जा रहा है. हम ग्राहकों को **12** भारतीय भाषाओं में ट्रांजेक्शन एसएमएस और हिंदी में व्हाटसऐप बैंकिंग सुविधा उपलब्ध करवा रहे हैं. हमारा बॉब वर्ल्ड ऐप भी हिंदी के साथ-साथ कई महत्वपूर्ण भारतीय भाषाओं में उपलब्ध है. हमें आम ग्राहकों के बीच भारतीय भाषाओं में उपलब्ध बैंकिंग सुविधाओं को व्यापक रूप से प्रचारित-प्रसारित करने की आवश्यकता है.

मुझे आशा ही नहीं बल्कि पूरा विश्वास है कि आप बैंक की तकनीकी परिवर्तन यात्रा के सहभागी बनने के साथ-साथ प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में बैंक को शीर्ष स्थान पर बनाए रखने में सहयोग देंगे और बैंक के व्यवसाय विकास में अपना बहुमूल्य योगदान पहले की तरह जारी रखेंगे. मैं आप सभी के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूं.

देबदत्त चांद

कार्यपालक निदेशक की डेस्क से

प्रिय साथियो,

'अक्षय्यम्' के माध्यम से आपसे संवाद करना मेरे लिए एक विशेष अवसर है. मैं इस पत्रिका के जरिए बैंक के स्टाफ सदस्यों के एक बड़े वर्ग तक अपने विचार साझा कर पाता हूं. हमारा देश अपनी स्वतंत्रता के 75 वर्ष पूरे कर *आज़ादी का अमृत महोत्सव* मना रहा है. आने वाले 25 वर्ष भारत के लिए बहुत ही अहम और निर्णायक हैं जो भारत की आज़ादी के एक शताब्दी पूरे होने के साक्षी बनेंगे. इसके साथ ही यह दौर हमारे देश के भविष्य के लिए एक मजबूत आधार-स्तंभ खड़ा करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगा. आने वाले दिनों में हम सभी के द्वारा किए गए सामूहिक प्रयासों से नई पीढ़ी के लिए एक ऐसे नए भारत का निर्माण होगा जिसकी एक सुदृढ़ अर्थव्यवस्था होगी.

बैंकिग क्षेत्र से संबद्ध होने के नाते हम देश की अर्थव्यवस्था के विकास के साथ जनमानस की सामाजिक और आर्थिक उन्नति के लिए हमेशा से अग्रणी भूमिका निभाते आए हैं. इस लक्ष्य के लिए हमने भारत सरकार द्वारा चलाई जा रही सभी वित्तीय योजनाओं और कार्यक्रमों को पूर्ण रूप से सफल बनाने में अथक प्रयास किए हैं. आने वाले दिनों में *इंडिया@100* को दृष्टिगत रखते हुए बड़े लक्ष्य के साथ हमें आगे बढ़ना होगा ताकि भविष्य इस दौर का मिसाल इस रूप में पेश कर सके कि हमने अपनी विरासत में मिली सुविधाओं को आम जनता के उत्थान के लिए और सुदृढ़ किया है.

हमारे बैंक ने समय रहते भविष्य की संभावनाओं पर सक्रियता से कार्य किया है और बैंकिंग उद्योग में अपनी स्थिति को बेहतर किया है. हमने व्यवसाय विकास के साथ-साथ अपने बैंक को *'कार्य करने के एक बेहतर स्थान'* के रूप में स्थापित किया है. हमने व्यवसाय और कर्मचारी-हित दोनों ही पक्षों में संतुलित रूप में कार्य करते हुए चुनौतीपूर्ण राह पर आगे बढ़ना जारी रखा है. बैंकिंग सुविधाओं को आसान और इसकी सर्वत्र उपलब्धता के लिए हमने बड़ी तेजी से डिजिटल माध्यम को अपनाया और अपने मोबाइल बैंकिंग ऐप - *बॉब वर्ल्ड* के जरिए बैंकिंग की सारी जरूरतों को एक ही स्थान पर उपलब्ध कराना सुनिश्चित किया. हमने अपनी संवितरण क्षमता में वृद्धि करते हुए विभिन्न बैंकिंग उत्पादों की उपलब्धता सुनिश्चित की है और इसके जरिए बैंक में बेहतर ग्राहक सेवा के मंत्र को अपनाया है.

भारत के संदर्भ में हम अपने ग्राहक वर्ग की बात करें तो हमारे बैंक में ग्रामीण से लेकर शहरी, महानगरीय, एनआरआई जैसे सभी वर्ग के ग्राहक हमारी बैंकिंग व्यवस्था का अहम हिस्सा हैं. आज उन्हें *'फिजिटल'* (भौतिक और डिजिटल दोनों तरह की बैंकिंग), कभी भी, कहीं भी बैंकिंग जैसी मिश्रित सुविधाएं पसंद आ रही हैं. इसके अलावा आज हमारे ग्राहक हमसे न केवल बैंकिंग के लिए जुड़ते हैं बल्कि इससे कहीं अधिक आज वे बैंकिंग सॉल्यूशन को तरजीह दे रहे हैं. मुझे प्रसन्नता है कि आप सभी के सहयोग से हम आज अपने ग्राहकों को ऐसी बैंकिंग सेवाएं प्रदान कर पा रहे हैं जो उनकी पसंद के मुताबिक हैं, परंतु हमारे लिए यह भी जरूरी है कि हम निरंतर अपने ग्राहकों की पसंद के अनुसार अपनी सेवाओं और उत्पाद को बेहतर बनाते हुए उनके लिए अनुकूल बनाएं तथा इस दिशा में बेहतर बैंकिंग सेवा को जारी रखें. ऐसा आप सभी के सामूहिक प्रयासों, सक्रियता और जागरूकता से ही संभव है.

अंत में मैं आप सभी से यही आह्वान करूंगा कि आप सभी बैंकिंग सेवाएं प्रदान करते हुए आपसी मेलजोल से संस्था की उन्नति के लिए बढ़-चढ़ कर कार्य करें और सदैव अपना तथा अपने सहयोगियों का ख़याल रखें.

शुभकामनाओं सहित,

जयदीप दत्ता राय

जयदीप दत्ता राय

बैंक ऑफ़ बड़ौदा Bank of Baroda

अक्षय्यम्

बैंक ऑफ़ बड़ौदा की हिंदी पत्रिका

वर्ष – 18 * अंक – 70 * अप्रैल–जून, 2022

–: कार्यकारी संपादक :–

संजय सिंह

प्रमुख – राजभाषा एवं संसदीय समिति

–: संपादक :–

पुनीत कुमार मिश्र

सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा एवं संसदीय समिति)

–: सहायक संपादक :–

अम्ब्रेश रंजन कुमार

मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)

डॉ. सुमेधा

वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)

–: संपर्क :–

राजभाषा विभाग

बैंक ऑफ़ बड़ौदा, बड़ौदा भवन, पांचवी मंजिल,
आर सी दत्त रोड, अलकापुरी, बड़ौदा – 390007

फोन : 0265–2316581

ईमेल : rajbhasha.ho@bankofbaroda.com
akshayyam@bankofbaroda.com

राजभाषा विभाग, बैंक ऑफ़ बड़ौदा,
पांचवी मंजिल, आर सी दत्त रोड, अलकापुरी,
बड़ौदा – 390007 से संपादित एवं प्रकाशित.

रुपांकन एवं मुद्रण

मे. प्रिंट प्लस प्रा.लि.,
212, स्वस्तिक चेंबर्स, एस.टी. रोड,
चेंबूर, मुंबई 400071.

प्रकाशन तिथि : 05/08/2022

सूचना :

बैंक के स्टाफ सदस्य पत्रिका में प्रकाशन हेतु अपनी रचनाएं/ सामग्री ई–मेल: akshayyam@bankofbaroda.co.in पर भेज सकते हैं.

अनुक्रमणिका

इस अंक में

जैविक खेती (ऑर्गेनिक फार्मिंग) : कृषि अर्थव्यवस्था के सुनहरे भविष्य की कुंजी 8–10

''मानव व्यवहार पर सोशल मीडिया का प्रभाव''... 11–14

कार्ड टोकनाइजेशन: एक आसान और सुरक्षित भुगतान की परिकल्पना 18–20

ई–कॉमर्स एवं ई–भुगतान की सुविधाएं 21–22

आइये ! सीखें भारतीय भाषाएं 26–27

देश के सांस्कृतिक विस्तार में हिंदी की भूमिका 28–29

बैंक गारंटियों में अनुपालन 30–31

बेटी का पिता 32–33

भारतीय अर्थव्यवस्था में ई–भुगतान का योगदान 34–35

बैंकिंग शब्द मंजूषा 42

आत्म अनुशासन और व्यक्तिगत सफलता 45–46

डिजिटल उत्पादों का उपयोग– कितना सार्थक..... 47–48

अपने ज्ञान को परखिए 49

चित्र बोलता है..... 50

अक्षय्यम्, बैंक ऑफ़ बड़ौदा की सभी शाखाओं/कार्यालयों में नि:शुल्क वितरण के लिये प्रकाशित की जाती है, इसमें व्यक्त विचारों से बैंक का सहमत होना आवश्यक नहीं है.

कार्यकारी संपादक की कलम से

'अक्षय्यम्' का नवीनतम अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है. हमारा यह प्रयास रहता है कि हम बैंक की पत्रिका के माध्यम से बैंक की राजभाषा संबंधी गतिविधियों को सभी कार्यालयों के साथ साझा करें ताकि इनमें से कुछ लाभप्रद कार्यक्रम बैंक के अन्य कार्यालयों में भी आयोजित किए जा सकें. इसके अलावा पत्रिका में भाषा, संस्कृति और बैंकिंग संबंधी विषयों पर भी नवोन्मेषी और उपयोगी सामग्री का प्रकाशन किया जाता है. हमारे इन प्रयासों का मकसद लोगों में लेखन-पठन संबंधी जागरूकता को बरकरार रखना है.

किसी भी प्रकाशन की अधिक से अधिक ग्राहकों तक पहुंच सुनिश्चित करना इसकी उपयोगिता को बढ़ाने के विभिन्न पहलों में से एक है. डिजिटलीकरण के दौर में पत्रिका के 'व्यूअर्स' की संख्या बढ़ी है और इसे और अधिक बढ़ाने की संभावनाएं भी बढ़ी हैं. आज विश्व के किसी भी कोने में रह कर हम सुदूर प्रदेशों की जानकारी चंद सेकेंड में हासिल कर सकते हैं. इंटरनेट के माध्यम से अब हम दुनिया भर के प्रकाशन को एक क्लिक में एक्सेस कर सकते हैं. आज हमें किसी भी प्रकाशन के लिए अधिक समय तक इंतजार नहीं करना पड़ता है. इस प्रकार से प्रकाशन से पठन तक की यात्रा की दूरी लगभग शून्य हो गयी है.

पाठकों तक बैंक की पत्रिकाओं की पहुँच को आसान बनाने तथा इस संबंध में भौगोलिक दूरी की चुनौती को समाप्त करने के लिए बैंक ने 'बड़ौदा अभिव्यक्ति' ऐप पर अपने विविध प्रकाशनों एवं पत्रिकाओं को एक ही स्थान पर डिजिटल रूप में उपलब्ध करवाया है. इस ऐप पर बैंक के मौजूदा एवं पूर्व स्टाफ सदस्य बैंक के न्यूजलेटर, पत्रिकाएं आदि अपनी सुविधानुसार न केवल एक्सेस कर सकते हैं बल्कि सामग्री पर अपनी राय एवं टिप्पणी भी दे सकते हैं. ज़रूरत है कि इस माध्यम का हम अधिक से अधिक इस्तेमाल करें और अपने सहकर्मियों एवं सहयोगी पूर्व स्टाफ़ सदस्यों को भी इस हेतु प्रेरित करें. यह डिजिटलीकरण एवं हरित पर्यावरण की दिशा में हम सभी का एक महत्वपूर्ण योगदान होगा.

पत्रिका के इस अंक में हमने आपके लिए समसामयिक, उपयोगी एवं रोचक सामग्री प्रकाशित की है. 'कार्ड टोकनाइजेशन' विषय पर अम्ब्रेश रंजन कुमार का लेख, 'ई-कॉमर्स एवं ई-भुगतान की सुविधा' विषय पर मिखिल गुप्ता का लेख, 'देश के सांस्कृतिक विकास में हिंदी की भूमिका' विषय पर श्री संतोष टेलकीकर की रचना, अनुभव-अभिव्यक्ति स्तंभ के तहत पूजा शर्मा की रचना- 'बेटी का पिता', गौतम कुमार 'सागर' द्वारा 'जैविक खेतीः कृषि अर्थव्यवस्था के सुनहरे भविष्य की कुंजी' पर आलेख सहित अन्य स्तंभ एवं कविताएं भी प्रकाशित की हैं. मैं आशा करता हूं कि पूर्व अंक की भांति यह अंक भी आपको रोचक और ज्ञानवर्धक लगेगा. कृपया पत्रिका के प्रत्येक आलेख एवं रचना के संबंध में अपनी टिप्पणी बॉब अभिव्यक्ति ऐप के माध्यम से अवश्य दें.

शुभकामनाओं सहित,

संजय सिंह

प्रमुख – राजभाषा एवं संसदीय समिति

इस अंक में विशेष

''मानव व्यवहार पर सोशल मीडिया का प्रभाव''..... 11-14

ई-कॉमर्स एवं ई-भुगतान की सुविधाएं.. 21-22

बेटी का पिता..... 32-33

डिजिटल उत्पादों का उपयोग- कितना सार्थक 47-48

जैविक खेती (ऑर्गनिक फार्मिंग) : कृषि अर्थव्यवस्था के सुनहरे भविष्य की कुंजी

गौतम कुमार
मुख्य प्रबंधक एवं संकाय
बड़ौदा अकादमी, वडोदरा

मनुष्य के शिकारी से कृषक बनने की यात्रा अपने आप में अनूठी है. प्राचीन सभ्यताएं कृषि आधारित थीं. तब कृषि, प्रकृति और मनुष्य के बीच विन-विन सिचुएशन वाली स्थिति थी. इस प्रकार से दोनों ही दूसरे से लाभान्वित होते थे.

जैविक एवं अजैविक पदार्थों के बीच आदान-प्रदान का चक्र जिसे हम पारिस्थितिकी तंत्र कहते हैं निरन्तर चलता रहता था. मिट्टी, जल, भूमि, वायु तथा वातावरण के साथ कृषि का अद्भुत तालमेल था. खेती के साथ-साथ पशुपालन के आरम्भ से मनुष्य और मनुष्येतर प्राणियों के बीच एक लाभकारी सूत्र की खोज हुई. प्राचीन भारतीय वांग्मय गौ पालन और इसकी कथाओं से भरा हुआ है. गोबर आदि का प्रयोग खेत की उर्वरा बढ़ाने में होता था. किन्तु समय के प्रवाह में मनुष्य के स्वभाव में स्वांत हिताय, स्वांत सुखाय की जगह निजस्वार्थों ने ले लिए. फलत: प्रकृति और प्राणियों का अत्यधिक दोहन आरम्भ हुआ. आधुनिकता और औद्योगीकरण ने कृषि को भी केवल और केवल आर्थिक लाभ की दृष्टि से उन्नत बनाने का भरसक प्रयास किया.

अंधाधुंध रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग

उन्नीसवीं सदी में मानव की विश्व जनसंख्या में भी बेतहाशा वृद्धि हुई. विशाल आबादी का भरण-पोषण हर देश के सामने विकट प्रश्न की भांति सामने आया. इसका हल यह निकला कि भूमि से ज्यादा से ज्यादा पैदावार की जाए. इसके तरीके खोजे जाने लगे. चूंकि पहले कीटों के प्रकोप से कई प्रकार की फसलें ख़राब हो जाती थी, इसका हल रासायनिक कीटनाशकों के रूप में खोजा गया. उसके बाद उत्पादन बढ़ने के लिए अंधाधुंध रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग होने लगा. इसके कई प्रकार के दुष्परिणाम देखने को मिले. जैसे कि मनुष्य के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव, मृदा की गुणवत्ता में गिरावट, भूमि, जल, वायु में प्रदूषण आदि. एक उदाहरण लें तो आज भारत में कई प्रदेश में मानक के अनुसार मिट्टी में कार्बन की मात्रा 0.80 फीसदी होनी चाहिए, जबकि क्षेत्रों से आई रिपोर्ट बताती है कि यह 0.18 से लेकर 0.25 तक है. यह स्थिति सोचनीय है. कार्बन की मात्रा अत्यधिक होना बहुत ही खतरनाक है.

केयर रेटिंग के अनुसार 1950 में देश में जहां 2000 टन कीटनाशक की खपत थी वहीं अब ये बढ़कर 90 हज़ार टन पर पहुंच गई है. 60 के दशक में देश में जहां 6.4 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में कीटनाशकों का छिड़काव होता था वहीं अब 1.5 करोड़ हेक्टेयर क्षेत्र में कीटनाशकों का छिड़काव हो रहा है. इसका परिणाम यह है कि भारत में पैदा होने वाले अनाज, सब्ज़ी, फलों व दूसरे कृषि उत्पादों में कीटनाशक की मात्रा तय सीमा से ज़्यादा पाई गई है. केयर रेटिंग ने इसको लेकर अपनी रिपोर्ट में बताया है कि भारतीय खाद्य पदार्थों में कीटनाशकों का अवशेष 20 फीसदी तक है जबकि वैश्विक स्तर पर यह सिर्फ 2 फीसदी तक होता है. भारत में केवल ऐसे 49 प्रतिशत ही खाद्य उत्पाद हैं जिनमें कीटनाशकों के अवशेष नहीं मिलते हैं जबकि वैश्विक स्तर पर 80 प्रतिशत खाद्य पदार्थों में कीटनाशकों के अवशेष नहीं हैं.

दुष्परिणाम के भुक्तभोगी

हालिया शोधों में पता चला है कि कैंसर एवं अन्य घातक रोगों के लिए ये कीटनाशक जिम्मेदार हैं. हम अब सतर्क होने शुरू हुए हैं और कीटनाशकों के अंधाधुंध प्रयोग पर लगाम लगाने की कोशिशें तेज हुई हैं.

रासायनिक उर्वरकों के इस्तेमाल से मिट्टी में सूक्ष्मजीवियों की संख्या कम हुयी है और मिट्टी की जलभराव क्षमता और रसाव भी कम हुई है. बहते पानी ने उपजाऊ उपरी मिट्टी को बहा दिया है. रासायनिक उर्वरकों से उपजी फसलों के उपयोग के कारण मानव को कई दीर्घकालिक बीमारियों से जूझना पड़ रहा है. इन्हीं रासायनिक उर्वरकों का दुष्परिणाम है कि नवजात बच्चे भी मधुमेह जैसी बीमारियों से पीड़ित होते हैं और 20 साल की आयु में ही जवानों के बाल सफेद होने लगते हैं. इसके अलावा कैंसर जैसी असाध्य बीमारी का भी इन सबसे सीधा संबध है.

अत्यधिक और अप्रमाणित कीटनाशकों का प्रयोग करने से उनकी जमीन तो बर्बाद होगी ही, साथ ही इनके उत्पादन से मिल रहे खाद्य पदार्थ भी जहरीले हो रहे हैं. जैविक खेती से भूमि की गुणवत्ता में सुधार होता है. जैविक कीटनाशकों के उपयोग से जमीन के उपजाऊपन में वृद्धि होती है. सिंचाई की कम लागत जैविक खेती में आती है, क्योंकि जैविक खाद जमीन में लम्बे समय तक नमी बनाए रखते हैं, जिससे सिंचाई की आवश्यकता रासायनिक खेती की अपेक्षा कम पड़ती है.

इसका एक ही उपाय है जैविक खेती या ऑर्गनिक फार्मिंग.

जैविक खेती (आर्गेनिक फार्मिंग) क्या है?

ऑर्गनिक फार्मिंग (Organic farming) कृषि की वह विधि है जो बिना संश्लेषित उर्वरकों एवं संश्लेषित कीटनाशकों के प्रयोग या न्यूनतम प्रयोग पर आधारित होते हैं तथा जो भूमि की उर्वरा शक्ति को बनाए रखने के लिये फसल चक्र, हरी खाद, कम्पोस्ट आदि का प्रयोग करती है. सन 1990 के बाद से विश्व में आर्गेनिक फार्मिंग का विस्तारित विकास हुआ है.

किन्तु पैदावार के असमान वितरण ने देश में जब भूखमरी जैसे हालत पैदा किये तो हम विदेशी पद्धति को बिना सोचे समझे अपना कर निश्चिन्त हो गए.

जैविक खेती या ऑर्गेनिक फार्मिंग शब्द 1990 के बाद अधिक प्रचलन में आया. आज अनुमानित तौर पर 150 से अधिक देशों में ऑर्गेनिक खेती की जा रही है. इनमें विकसित देश जैसे कि अमेरिका, जापान, ऑस्ट्रेलिया आदि शामिल है.

खेतों में नाइट्रोजन, सल्फर, कैल्शियम, बोरान व फास्फोरस की मात्रा के आधार पर ही किसी भी फसल की पैदावार होती है. खेतों में रासायनिक दवाओं व खादों की बजाय जीवांश तथा कंपोस्ट खाद के प्रयोग पर जोर देना ताकि मिट्टी की सेहत सुधर सके.

जैविक खेती के लाभ

जैविक खेती से भूमि की उपजाऊ क्षमता में वृद्धि हो जाती है फसलों की उत्पादकता में वृद्धि होती है.

भूमि की गुणवत्ता में सुधार आता है तथा भूमि की जल धारण की क्षमता बढती है. भूमि से पानी का वाष्पीकरण भी कम होता है.

मृदा की उर्वरता एवं कृषकों की उत्पादकता बढ़ाने में पूर्णत: सहायक है.

जैविक खेती से प्रदूषण में कमी आती है. रासायनिक खादों एवं कीटनाशकों से पर्यावरण प्रदूषित होता है. खेतों के आसपास का वातावरण विषैला हो जाता है, जिससे वहां की वनस्पति, जानवर एवं पशु-पक्षी मरने लगते है. जैविक खादों एवं कीटनाशकों के प्रयोग से वातावरण शुद्ध होता है.

जैविक खेती से उत्पादों की गुणवत्ता रासायनिक खेती की तुलना में कई गुना बेहतर होती है एवं ऊंचे दामों में बाजार में बिक्री होती है.

स्वास्थ्य की दृष्टि से जैविक उत्पाद सर्वश्रेष्ठ होते हैं एवं इनके प्रयोग से कई प्रकार के रोगों से बचा जा सकता है.

जैविक विधि द्वारा खेती करने से उत्पादन की लागत तो कम होती है तथा अंतराष्ट्रीय मानकों पर जैविक उत्पाद अधिक खरे उतरते है. जिसके फलस्वरूप सामान्य उत्पादन की अपेक्षा में कृषक अधिक लाभ प्राप्त कर सकते हैं.

आधुनिक समय में निरन्तर बढ़ती हुई जनसंख्या, पर्यावरण प्रदूषण, भूमि की उर्वरा शक्ति का संरक्षण एवं मानव स्वास्थ्य के लिए जैविक खेती की राह अत्यन्त लाभदायक है. मानव जीवन के सर्वांगीण विकास के लिए नितान्त आवश्यक है कि प्राकृतिक संसाधन प्रदूषित न हों, वातावरण शुद्ध रहे एवं पौष्टिक आहार मिलता रहे, इसके लिये हमें जैविक खेती की कृषि पद्धतियाँ अपनानी होगी जोकि हमारे नैसर्गिक संसाधनों एवं मानवीय पर्यावरण को प्रदूषित किये बिना समस्त जनमानस को खाद्य सामग्री उपलब्ध करा सकेगी तथा हमें खुशहाल जीने की राह दिखा सकेगी.

जैविक खेती में कोई जोखिम नहीं है. यह फायदे का सौदा है. इससे भूमि प्रदूषण तो रुकेगा ही साथ ही आपकी जमीन की उर्वरक शक्ति भी चौगुना बढ़ेगी. जैविक खेती के जरिए भी आप अपनी आय बढ़ा सकते हैं. अधिक उत्पादन के लिए खेती में अधिक मात्रा में रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशक का उपयोग करना ठीक नहीं है. इससे छोटे किसानों को तो अत्यधिक परेशानी हो रही है. जैविक खेती के लिए सरकार भी बढ़ावा दे रही है.

जैविक खेती और भारत

सन् 2004-05 में प्रथम बार जैविक खेती पर राष्ट्रीय परियोजना की शुरुआत की गई. सन् 2004-05 में जैविक

खेती को करीब 42 हजार हेक्टेयर में अपनाया गया, जिसका रकबा मार्च 2014 तक बढ़कर करीब 11 लाख हेक्टेयर हो गया. इसके अतिरिक्त 34 लाख हेक्टेयर जंगलों से फसल प्राप्त होती हैं. इस तरह कुल 45 लाख हेक्टेयर में जैविक उत्पाद उत्पन्न किये जा रहे हैं.

ऑर्गेनिक खेती को बढ़ावा देने के लिए कई योजनाएं बनाई गई हैं जैसे राष्ट्रीय जैविक खेती परियोजना, राष्ट्रीय बागवानी मिशन, एवं जैविक मूल्य श्रृंखला विकास इत्यादि. सिक्किम और उत्तराखंड राज्यों ने 2003 में जैविक राज्य बनने का संकल्प लिया था. सिक्किम ने 2016 में यह लक्ष्य हासिल कर लिया परन्तु उत्तराखंड अभी काफी पीछे है.

देश के पूर्वोत्तर क्षेत्र में जैविक कृषि की संभावना को पहचानते हुए कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय ने 2015-16 से 2017-18 के दौरान अरुणाचल प्रदेश, असम, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, नागालैंड, सिक्किम व त्रिपुरा में कार्यान्वयन के लिए केंद्रीय क्षेत्र योजना - 'पूर्वोत्तर क्षेत्र हेतु जैविक मूल्य श्रृंखला विकास मिशन' की शुरूआत की है. इस योजना का लक्ष्य मूल्य श्रृंखला मोड में प्रमाणित जैविक उत्पादन का विकास करना है ताकि किसानों को उपभोक्ताओं से जोड़ा जा सके और इनपुट, बीज प्रमाणीकरण से लेकर संकलन, समुच्चयन, प्रसंस्करण, विपणन व ब्रांड निर्माण पहल तक संपूर्ण मूल्य श्रृंखला के विकास में सहायता की जा सके. तीन वर्षों के लिए 400 करोड़ रुपये के परिव्यय से योजना को अनुमोदन दिया गया.

भारत विश्व में कपास का सबसे बड़ा जैविक उत्पादक है. विश्व में जैविक कपास का सबसे बड़ा जैविक कपास का 50% उत्पादन समूहों के अंतर्गत आने वाले करीब 6 लाख टन विभिन्न जैविक उत्पाद पैदा करते हैं.

जीरो बजट फार्मिंग

जैविक खेती को दूसरे शब्दों में जीरो बजट फार्मिंग भी कहा जाता है. इसमें खर्चा न के बराबर आता है और उत्पादन भी उच्च कोटि का होता है. जैविक कृषि को बढ़ावा देने से कृषक पर ऋण का दवाब घटेगा. सरकार की सब्सिडी आदि में खर्च होने वाली राशि बचेगी. साथ ही जो युवा कृषि को एक अलाभकारी पेशा मानकर बेरोजगारी के दुष्चक्र में फंसे हैं वे भी जैविक खेती में अपना भविष्य सुनहरा बना सकते हैं.

जैविक खेती से समृद्धि के कुछ उदाहरण

दंतेवाड़ा जिले में जैविक खेती कर किसान बने कंपनी मालिक:

जिले के रतिराम, लुदरू, शंभुनाथ अब केवल किसान नहीं रहे अब वे दंतेवाड़ा में जैविक उत्पाद बनाने और बेचने वाली कंपनी भूमगादी के हिस्सेदार हैं. इनके जैविक उत्पाद का ब्रांड नेम है- आदिम. आदिम में चावल की 34 प्रकार की वैरायटी होंगी. इसमें मेहेर तथा गुड़मा जैसी परंपरागत प्रजातियां भी होंगी. इनमें आयरन अधिक होता है.

तीन साल पहले दंतेवाड़ा के किसान केवल धान का उत्पादन कर पाते थे. आज उनके उत्पाद महानगरों के शॉपिंग मॉल में बिक रहे हैं. इनके उत्पादों की मांग काफी ज्यादा है और इसे पूरा करने तेजी से अन्य किसान भी जैविक खेती को अपना रहे हैं.

जैविक खेती से हजारों लाखों की कमाई:

राजस्थान के एक छोटे किसान रामकरण ने इसी तरकीब से महज छह साल में अपनी कमाई को हजारों से लाखों में पहुंचा दिया. रामकरण और उनकी पत्नी संतोष देवी को अब पूरा इलाका जानने लगा है. सिर्फ डेढ़ हेक्टेयर जमीन से दंपत्ति सालाना 13 लाख रुपये की कमाई करती है. छह साल पहले मुश्किल से 20-25 हजार रुपये की खेती थी. रामकरण ने सीकर के कृषि मेले में जैविक खेती के बारे में जाना और अनार की जैविक खेती शुरू की. आज इनके खेत में 220 अनार के पेड़ हैं, जिसकी फसल खरीदने के लिए लोग खुद इनके पास पहुंचते हैं.

उपसंहार :

जैविक खेती का उद्देश्य प्राकृतिक प्रणालियों के साथ कार्य करना है जिससे स्वदेशी तकनीकी ज्ञान को बढ़ावा मिलता है और एक पीढ़ी से जानकारी दूसरी पीढ़ी तक पहुंचती है. इससे सांस्कृतिक तौर-तरीकों के संरक्षण के साथ-साथ फसलों की किस्मों के संरक्षण में भी मदद मिलती है. जर्मप्लाज्म की सूची में वन्य प्रजातियां धरोहर की श्रेणी में रखी गई हैं क्योंकि ये बड़ी तेजी से नष्ट होती जा रही हैं. अगर किसानों को पौष्टिक आहार मिलता रहे और जैविक खेती को अपनाना जारी रखें तो उनके स्वास्थ्य का भी संरक्षण किया जा सकता है. इस तरह किसानों का जीवन-स्तर जैविक खेती के तौर-तरीके अपनाने से ऊँचा उठाया जा सकता है.

अंत में यह कहना चाहूंगा कि हर राज्य को सिक्किम से प्रेरणा लेनी चाहिए. दूसरे राज्य के किसान जहां रासायनिक और नकली कीटनाशकों के इस्तेमाल से फसलों में नुकसान झेल रहे हैं और बढ़ती समस्याओं से आत्महत्या करने को मजबूर होते हैं, वहीं सिक्किम ने पूर्ण जैविक प्रदेश होते हुए किसानों की आत्महत्या के आंकड़े से मुक्त होकर देश के किसानों के सामने एक अनुपम उदाहरण पेश किया है.

मानव व्यवहार पर सोशल मीडिया का प्रभाव

कौशल किशोर
वरिष्ठ प्रबंधक
बृहत्तर कोलकाता क्षेत्र

हमारे जीवन में सोशल मीडिया की दखल के बाद से ही, हमारे निजी रिश्तों, वास्तविक सोच आदि में बहुत अधिक परिवर्तन आ गया है. पहले समाज में बधाइयां देने लोग त्यौहारों पर एक दूसरे के घर जाया करते थे, अब लोगों को बीमारी के दौरान शुभकामनाएं और फूल भी सोशल मीडिया के माध्यम से पहुंचाए जा रहे हैं. स्थितियां इस कदर भी होती हैं कि हम लाखों किलोमीटर दूर अपने दोस्तों से बात करते हैं और घर में ही बीमार मां का हाल चाल पूछने के बारे में ध्यान भी नहीं देते. आज के समय में सोशल मीडिया ने एक ओर जहां हमारे रिश्तों एवं जरूरतों को सामंजस्य प्रदान किया है, वहीं दूसरी ओर अपनों से मिलने, उन्हें जानने की प्रथा को पूर्णतया खत्म कर दिया है. आज के दौर में तेजी से पांव फैला रही फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम, व्हाट्सऐप जैसी सोशल मीडिया साइट्स के सहारे लोगों ने एक पूरी आभासी दुनिया का निर्माण कर लिया है, जिसमें साथी, रिश्तेदार, मित्र, परिवारजन, शुभचिंतक इत्यादि की पूरी श्रृंखला का समायोजन भी किया है और दरकिनार भी.

सोशल मीडिया क्या है?

सोशल मीडिया एक गैरपरंपरागत मीडिया है. वास्तव में यह एक वर्चुअल वर्ल्ड है जिसमें लोग इंटरनेट के माध्यम से

आसानी से अपनी पहुंच बना सकते हैं. सोशल मीडिया एक विशाल नेटवर्क है, जो कि सारे संसार को जोड़े रखता है. यह संचार का एक बहुत अच्छा माध्यम है. सोशल मीडिया में तेज़ गति से सूचनाओं के आदान-प्रदान की क्रिया समाहित होती है. सोशल मीडिया, एक ऐसा मीडिया है, जो बाकी सारे मीडिया (प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक एवं समानांतर मीडिया) से अलग है. जिसे उपयोग करने वाला व्यक्ति सोशल मीडिया के किसी प्लेटफॉर्म (फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम) आदि का उपयोग कर अपनी पहुंच बना सकता है. मौजूदा दौर में सोशल मीडिया जिंदगी का एक अहम हिस्सा बन चुका है जिसकी बहुत सारी विशेषताएं हैं, जैसे कि सूचनाएं प्रदान करना, मनोरंजन करना और शिक्षित करना आदि.

सोशल मीडिया के माध्यम से आज के टेक्नो-सेवी युवा तो जुड़ ही रहे हैं, उनके साथ-साथ बच्चे, बूढ़े, और बड़ी संख्या में बढ़ते दोस्त, एक दूसरे के विचारों-भावों से दुखों को, सुखों को भावनाओं को एक दूसरे से साझा कर रहे हैं. परंतु इसके साथ एक विडंबना यह भी है कि आपसी जुड़ाव के इतने सशक्त साधन के बावजूद मानव समाज में एक दूसरे की भावनाओं की अनदेखी संभावनाएं भी विकराल रूप ले रही हैं. सोशल मीडिया का सच यही है कि जिन लोगों को हम वास्तविकता में कभी देख भी नहीं पाये, जिन्हें हम जानते भी नहीं हैं, उनके निकट होने का आभास लेते हैं और उनसे इस तरीके के गहरे रिश्ते बना लेते हैं कि भविष्य में किसी भी प्रतिक्रिया के लिए वह हमारे अपनों की तरह पेश आते हैं परंतु सोशल मीडिया पर बने यह रिश्ते दिखावे और आडंबरों के साथ वास्तविकता से कोसों दूर भी रहते हैं.

कई बार ऐसा भी लगता है कि हमारे सोशल मीडिया वाले मित्र हमारे बहुत नज़दीकी हैं और हमारी बहुत चिंता करते हुए हमारा ख्याल भी रखते हैं, किंतु सत्य यह है कि लाखों

मील दूरी पर बैठा हुआ व्यक्ति आपको बगैर जाने-पहचाने, बगैर आपके चरित्र और आपकी भावनाओं को जाने बिना तथाकथित करीबी तो प्रतीत होता है, किंतु इंसानियत और वास्तविकता से भरी भावनाओं का दूर-दूर तक इस से कोई लेना देना नहीं होता. कई बार ऐसा देखा गया है कि लोग इन सोशल मीडिया साइट से प्रभावित होकर अपनी निजी जिंदगी को खतरे में डालते हुए अनजाने लोगों को ही अपना मान लेते हैं और इस मेट्रो युगीन युग में जीवन के खोखलेपन को इन सोशल मीडिया के सहारे भरने की झूठी कोशिश में लगे रहते हैं. कहीं न कहीं यह आपको एकाकी जीवन जीने के लिए प्रोत्साहित करता है. आप की निर्भरता इन माध्यमों पर इस प्रकार हावी हो जाती है कि आप एक समय के बाद इनका उपयोग न कर पाने की वजह से परेशानी और छटपटाहट से जूझने लगते हैं, जिसे आम बोल चाल की भाषा मे हम आज ''सोशल मीडिया फीवर'' के नाम से जानते हैं.

सोशल मीडिया के माध्यम से बने रिश्ते हालांकि करीबी नहीं होते, जो कि पारंपरिक और पुरातन प्रथाओं से चली आ रही आत्मीयता को विकसित करती थी. अब वह इंसान को उसकी निजता के लिए आभासी वर्चस्व का एहसास कराती है, कहीं न कहीं सोशल मीडिया के माध्यम से हम पूरी दुनिया एक बटन के सहारे नाप लेते हैं, किंतु इसका वास्तविक सच हमें अपने पड़ोसियों से ही दूर कर देता है. इन साइटों के माध्यम से बने हुए मित्रों से बातचीत के दौरान हम अपने आप को बहुत ही बड़ा मान लेते हैं, अपने आप को सफल और सक्षम मान लेते हैं, किंतु सत्यता यही है कि हम अकेलेपन और परेशानियों से जूझते हुए जिंदगी के खोखलेपन को भरने की झूठी कोशिश में लगे हुए होते हैं. सोशल मीडिया के माध्यम से हम पूरी वैश्विक जानकारी और ज्ञानवर्धन में अग्रणी हो रहे हैं, किसी भी व्यक्ति, राष्ट्र, क्षेत्र विशेष की जानकारी क्षण भर में हमारे पास पहुंच जाती है और हम राष्ट्र विश्व के सजग और सफल जानकार लोगों की श्रेणी में आते हैं. ऐसी सफलता का एहसास क्षणिक होता है क्योंकि एक समय के बाद आप वही चीजें बार-बार नहीं दोहरा सकते और तब हमें आभासी और खोखली दुनिया का एहसास होता है. सोशल मीडिया का सकारात्मक उपयोग बहुत आवश्यक है, अन्यथा भटकाव का रास्ता बहुत आसान होता है.

सोशल मीडिया इंसान और कंप्यूटर को जोड़ने वाला समाज के लिये केंद्रित किंतु आभासी माध्यम है. आज की भाग दौड़ भरी दुनिया में हमारी युवा पीढ़ी सोशल मीडिया से ही लगभग सारे काम निकाल रही है. शोध के अनुसार यह पाया गया है कि भारत में इंटरनेट का उपयोग करने वालों की संख्या लगातार सैकडों प्रतिशत तक बढी है और साथ ही सोशल मीडिया का उपयोग करने वालों की संख्या लगभग पिछले 3 वर्षों में दो सौ प्रतिशत की वृद्धि दर से बड़ी है.

इक्कीसवीं सदी में प्रौद्योगिकी के उपयोग के साथ साथ कंप्यूटर नेटवर्किंग का उपयोग भी बढ़ गया है. इन्हीं कंप्यूटर नेटवर्किंग साइटों में सोशल मीडिया के साइट जैसे ट्विटर, इंस्टाग्राम, फेसबुक और व्हाट्सऐप आदि इसका हिस्सा है. सोशल मीडिया दूरियों को कम कर व्यक्तियों को निकट होने का आभास कराता है इसलिए यह बहुत लोकप्रिय हो चुका है और अपने उपयोगकर्ताओं में उत्तरोत्तर सैकड़ों प्रतिशत की वृद्धि दर्ज कर रहा है. सोशल मीडिया के आने के बाद आज के दौर में रिश्तें और हमारे अपने वास्तविक निजी संबंधों के स्वरुप में बहुत बदलाव आया है, जिससे सोशल मीडिया के करोड़ों उपयोगकर्ता इस बदलाव के साक्षी बनेंगे और इस बदलाव के सुनहरे स्वप्निल भविष्य की नींव रखेंगे.

दैनिक जीवन में सोशल मीडिया के सकारात्मक प्रभाव

* यह बहुत तेज गति से होने वाला संचार का माध्यम है.
* यह जानकारी को एक ही जगह इकट्ठा करता है.
* सरलता से समाचार प्रदान करता है.
* सभी वर्गों के लिए है, जैसे कि शिक्षित वर्ग हो या अशिक्षित वर्ग.
* यहां किसी प्रकार से कोई भी व्यक्ति किसी भी कंटेंट का मालिक नहीं होता है.
* फोटो, वीडियो, सूचना, डॉक्यूमेंटस आदि को आसानी से शेयर किया जा सकता है.

सोशल मीडिया का दुष्प्रभाव

* यह बहुत सारी जानकारी प्रदान करता है जिनमें से बहुत सी जानकारी भ्रामक भी होती है.
* जानकारी को किसी भी प्रकार से तोड़-मरोड़कर पेश किया जा सकता है.

* किसी भी जानकारी का स्वरूप बदलकर वह उकसावे वाली बनाई जा सकती है जिसका वास्तविकता से कोई लेना-देना नहीं होता.
* यहां कंटेंट का कोई मालिक न होने से मूल स्रोत का अभाव होना.
* प्राइवेसी पूर्णत: भंग हो जाती है.
* फोटो या वीडियो की एडिटिंग करके भ्रम फैला सकते हैं जिनके द्वारा कभी-कभी दंगे जैसी आशंका भी उत्पन्न हो जाती है.
* साईबर अपराध सोशल मीडिया से जुड़ी सबसे बड़ी समस्या है

मशहूर शायर जनाब फिराक गोरखपुरी ने एक बार कहा था:-

''देख रफ़्तार-ए-इंक़लाब 'फ़िराक़'..कितनी आहिस्ता और कितनी तेज़.''

सोशल मीडिया कैसे है फायदेमंद?

सोशल मीडिया सकारात्मक भूमिका अदा करता है जिससे किसी भी व्यक्ति, संस्था, समूह और देश आदि को आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक रूप से समृद्ध बनाया जा सकता है. मौजूदा समय में इंटरनेट की दुनिया में पैठ बना चुका हर व्यक्ति आज किसी न किसी सोशल नेटवर्किंग साइट से जुड़ा है. इसमें कोई संशय नहीं है सोशल मीडिया का मंच आज अभिव्यक्ति का नया और कारगर माध्यम बन चुका है. इससे जुड़े लोग बेबाकी से अपनी राय इस मंच के माध्यम से जाहिर करते हैं.

फेसबुक जैसी सोशल मीडिया साइटें आधुनिक जीवन का एक अहम हिस्सा बन गईं हैं. इसकी सहायता से आप अपने मित्रों के साथ तुरन्त और वास्तविक समय में जुड़ सकते हैं. उपयोगकर्ता एक दूसरे से बातचीत कर सकते हैं, बार-बार जुड़ सकते हैं और सामूहीकरण कर सकते हैं.

व्यापार के लिए सोशल मीडिया का प्रयोग बेहद फायदेमंद है. इसका प्रभावी उपयोग समग्र विपणन लागत को कम करने में मदद करता है. ऑनलाइन सफलता सोशल मीडिया के प्रभावी उपयोग के साथ आती है. सोशल मीडिया से आप संभावित ग्राहकों को संगठित कर सकते हैं और अपने व्यापार में वृद्धि कर सकते हैं. हाल ही में सोशल मीडिया परीक्षकों ने सोशल मीडिया मार्केटिंग के महत्व को समझने के लिए 3,000 से अधिक उत्तरदाताओं का सर्वेक्षण किया है. 89% उत्तरदाताओं ने कहा कि सोशल मीडिया मार्केटिंग से व्यापार को बढ़ावा मिला है. 64% उत्तरदाताओं ने नेतृत्व पीढ़ी में वृद्धि देखी और 62% उत्तरदाताओं ने कहा कि उनकी साइटों के सर्च इंजन श्रेणी में सोशल मीडिया का उपयोग करने से लगभग दो वर्ष से अधिक समय से काफी सुधार हुआ है.

लोकप्रियता के प्रसार में सोशल मीडिया एक बेहतरीन प्लेटफॉर्म है, जहां व्यक्ति स्वयं को अथवा अपने किसी उत्पाद को ज्यादा लोकप्रिय बना सकता है. आज फिल्मों के ट्रेलर, टीवी प्रोग्राम का प्रसारण भी सोशल मीडिया के माध्यम से किया जा रहा है. वीडियो तथा ऑडियो चैट भी सोशल मीडिया के माध्यम से सुगम हो पाई है जिनमें फेसबुक, व्हॉट्सऐप, इंस्टाग्राम कुछ प्रमुख प्लेटफॉर्म हैं.

सोशल मीडिया के नकारात्मक प्रभाव क्या हैं?

सोशल मीडिया जहां सकारात्मक भूमिका अदा करता है वहीं कुछ लोग इसका गलत उपयोग भी करते हैं. सोशल मीडिया का गलत तरीके से उपयोग कर ऐसे लोग दुर्भावनाएं फैलाकर लोगों को बांटने की कोशिश करते हैं. सोशल मीडिया के माध्यम से भ्रामक और नकारात्मक जानकारी साझा की जाती है जिससे कि जनमानस पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है.

एक शायर ने धोखाधड़ी करने वालो के चरित्र को निम्न शेर में बखूबी बयान किया है:-

''जिनका मकसद फरेब होता है
वो बडे सादगी से मिलते है....!!''

संवेदनशील इलाकों में नेटवर्किंग से कुछ तत्वों की ओर से साइबर हमले की आशंका हमेशा बनी रहती है. शरारती तत्व इस माध्यम का इस्तेमाल समस्या पैदा करने के लिए करते हैं, जिसे रोकने की आवश्यकता है.

लोगों के अभिव्यक्ति के अधिकार का पूरा समर्थन किया जाना चाहिए मगर सुरक्षा की कीमत पर नहीं. साइबर दुनिया के गलत इस्तेमाल पर अंकुश लगाना जरूरी. बीते कुछ सालों में भारत में सोशल नेटवर्किंग साइटों के इस्तेमाल में काफी

तेजी से बढ़ोतरी हुई है. समय बीतने के साथ ही इसकी गति और तेज होती जा रही है और आगे भी इसके और तेज होने का अनुमान है. हालांकि इसके बढ़ने के पीछे कई कारण हैं, परंतु इसके पीछे युवाओं की भागीदारी सबसे अहम है. एक अनुमान के अनुसार, यदि इस गति से सोशल साइटों का इस्तेमाल देश में बढ़ता रहा तो 2020 तक भारत दुनिया का सबसे बड़ा फेसबुक उपयोगकर्ता देश हो जाएगा. वहीं, अन्य सोशल साइटों मसलन ट्वीटर आदि पर युवाओं की तादाद खासी बढ़ी है. साइबर सुरक्षा और सोशल मीडिया के दुरुपयोग का मुद्दा ऐसा है, जिसकी अब अनदेखी नहीं की जानी चाहिये.

मशहूर शायर श्री खुर्शीद तलब ने एक बार कहा था:-

''कोई चिराग जलाता ही नही सलीके से....

मगर सभी को शिकायत हवा से है......!!''

कई उपयोगकर्ता सोशल मीडिया पर समय गुजारते हैं लेकिन सोशल मीडिया का अत्यधिक और अनियंत्रित उपयोग गंभीर लत का कारण बन सकता है. सोशल मीडिया गतिविधियों के साथ आनंद लेने की भावना हमारे मस्तिष्क के केंद्र की उत्तेजना के कारण जागृत होती है. इंटरनेट का अत्यधिक उपयोग एकाग्रता को भंग करने में प्रमुख भूमिका निभा सकता है. सोशल मीडिया पर काम करते समय आप काम को एक दूसरे में बदलते रहें. एक ही काम पर ध्यान केंद्रित करने से आपकी एकाग्रता की क्षमता कम हो जाती है. ऐसी गतिविधियाँ आपके मस्तिष्क को शिथिल कर देती हैं. इसका अधिक उपयोग मस्तिष्क को थकान और तनाव की ओर ले जाता है.

सोशल मीडिया का एक पक्ष यह भी है कि यदि इसका उपयोग सावधानी से किया जाए तो यह सुरक्षित सरल एवं विश्वसनीय है. हाल ही में ऐसा पाया गया है यह समायोजित एवं जोखिम रहित है और हमारे जैसे विकासशील राष्ट्र को विकसित राष्ट्र बनाने में जागरुक नागरिकों के साथ कदम से कदम मिलाकर डिजिटल बैंकिंग का हिस्सा बनकर योगदान देगी और राष्ट्र के निर्माण का सहारा बनेगी. सोशल मीडिया सकारात्मक भूमिका अदा करता है जिससे किसी भी व्यक्ति, संस्था, समूह और देश आदि को आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक दृष्टि से समृद्ध बनाया जा सकता है.

***

[illegible]

भावनाओं के भवसागर में चुपके से बैठी ख़ुशी ।
लेकिन परेशानियों में भी मन की गहराइयों में ख़ुशी ।।

अनंत उलझन भरे विचारों का यह युद्धक्षेत्र ।
असीम परिवर्तन का साक्षी हुआ यह कुरुक्षेत्र ।।

उलझन की दस्तक से शुरू हुआ यह परिवर्तन ।
कभी सुखद तो कभी दुखद हुआ यह परिवर्तन ।।

संभाषण के ढांचे से झांकती हुई ख़ुशी ।
व्यक्ति की सहनशीलता को आँकती हुई ख़ुशी ।।

कभी सिर्फ सब कुछ पाने को ठानी हुई ख़ुशी ।
तो कभी सबको अपना बनाने को ठानी हुई ख़ुशी ।।

कभी पर्वत लांघने की प्रेरणा लिए आशाएं ।
कभी खुशी के लिए अभिलाषाएं त्यागती हुई आशाएं ।।

खुद से छल करती हुई छोटी-छोटी आशाएं ।
अपनों की अनुपस्थिति को भी उपस्थिति बताती आशाएं ।।

खिले दिल की उम्मीदों को मनोबल देती आशाएँ ।
हवाओं मे उड़ने को लाखों पर देती आशाएँ ।।

सदा मन के एक कोने से प्यार से झांकती आशाएं ।
मन के हर कोने मे आस जगाती आशाएं ।।

अनामिका प्रसाद
मुख्य प्रबंधक (मा.सं.प्र)
कोलकाता, महानगरीय क्षेत्र-II

अखिल भारतीय वार्षिक राजभाषा समीक्षा बैठक का आयोजन

बैंक ने अंचलों एवं क्षेत्रीय कार्यालयों में पदस्थ राजभाषा प्रभारियों के लिए दिनांक 25-27 मई, 2022 तक गंगटोक में अखिल भारतीय वार्षिक राजभाषा समीक्षा बैठक का आयोजन किया. कार्यक्रम की अध्यक्षता बैंक के मुख्य महाप्रबंधक (परिचालन) श्री अजय के खोसला ने की. समारोह के पहले दिन अंचलों एवं क्षेत्रीय कार्यालयों में पदस्थ राजभाषा प्रभारियों द्वारा वर्ष 2021-22 में किए गए राजभाषा संबंधी कार्यों की समीक्षा शुरू की गई तथा नए वित्तीय वर्ष में राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा पर भी विस्तृत चर्चा की गई. कार्यक्रम की शुरुआत कोलकाता अंचल के तत्कालीन नेटवर्क उप महाप्रबंधक श्री सोनाम टी भूटिया के स्वागत संबोधन के साथ हुई. तत्पश्चात् प्रमुख (राजभाषा एवं संसदीय समिति) श्री संजय सिंह ने बैठक की पृष्ठभूमि से सभी प्रतिभागियों को अवगत कराया. मुख्य महाप्रबंधक (परिचालन) श्री अजय के खोसला ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में भाषा को संस्कृति का वाहक बताया और अपनी भाषा की समृद्धि हेतु इसके प्रचार-प्रसार पर बल दिया जिसके लिए सभी के द्वारा व्यक्तिगत स्तर पर प्रयास किए जाने की आवश्यकता पर जोर दिया. अंचलों एवं क्षेत्रीय राजभाषा प्रभारियों की समीक्षा बैठक दो दिनों में सम्पन्न हुई.

कार्यक्रम के तीसरे दिन बड़ौदा सयाजीराव लोकभाषा सम्मान एवं बड़ौदा राजभाषा वितरण समारोह का आयोजन किया गया. कार्यक्रम में प्रारम्भिक संबोधन सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा एवं संसदीय समिति) श्री पुनीत कुमार मिश्र ने दिया. इस अवसर पर प्रमुख (राजभाषा एवं संसदीय समिति) श्री संजय सिंह ने बैंक में हिंदी प्रयोग संबंधी संक्षिप्त प्रस्तुति दी. बैंक के कार्यपालक निदेशक श्री अजय के खुराना ने अध्यक्षीय वक्तव्य के माध्यम से प्रतिभागियों को संबोधित किया. तत्पश्चात् उन्होंने पद्मश्री मालिनी अवस्थी को बड़ौदा सयाजीराव लोकभाषा सम्मान - 2021-22 अर्पण किया. उसके बाद बड़ौदा राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया जिसके तहत 'क', 'ख' एवं 'ग' भाषिक क्षेत्र अनुसार अंचल कार्यालय श्रेणी एवं क्षेत्रीय कार्यालय श्रेणी में आने वाले विजेता कार्यालयों, अंचल की श्रेष्ठ पत्रिकाओं तथा हमारे बैंक के संयोजन में स्थित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों को पुरस्कृत किया गया. साथ ही इस दौरान प्रधान कार्यालय द्वारा बैंक के सभी स्टाफ सदस्यों के लिए आयोजित ''हिंदी का सरताज'' प्रतियोगिता तथा ''हम से बढ़कर कौन'' जैसी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को भी पुरस्कृत किया गया.

इस अवसर पर बैंक की गृह पत्रिका, बॉबमैत्री, अक्षय्यम् एवं बॉब अभिव्यक्ति ऐप पर चर्चा की गई एवं वर्ष 2022-23 की वार्षिक राजभाषा कार्य योजना के संबंध में परिचर्चा एवं समूह अभ्यास किया गया. कार्यक्रम का समापन सभी प्रतिभागियों के बीच सार्थक संवाद और रोचक गतिविधियों के आयोजन के साथ हुआ. तीन दिवसीय इस भव्य समारोह में धन्यवाद ज्ञापन अंचल प्रमुख, कोलकाता श्री देबब्रत दास एवं क्षेत्रीय प्रमुख, सिलीगुड़ी श्री दिलीप कुमार प्रसाद ने किया. इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में प्रसिद्ध साहित्यकार, पत्रकार एवं अनुवादक श्री सुवास दीपक भी उपस्थित रहे.

बड़ौदा मेधावी विद्यार्थी सम्मान समारोह

क्षेत्रीय कार्यालय, लखनऊ मेट्रो

दिनांक 13 अप्रैल, 2022 को लखनऊ मेट्रो क्षेत्र द्वारा बड़ौदा मेधावी विद्यार्थी सम्मान समारोह का आयोजन किया गया. इस अवसर पर क्षेत्रीय प्रमुख श्रीमती रचना मिश्रा एवं उप क्षेत्रीय प्रमुख श्री मनोज शर्मा ने लखनऊ विश्वविद्यालय के वित्तीय वर्ष 2020-2021 के मेधावी विद्यार्थी श्री शोभित द्विवेदी (प्रथम स्थान) और सुश्री आराधना दुबे (द्वितीय स्थान) को सम्मानित किया.

क्षेत्रीय कार्यालय, रायपुर

दिनांक 1 मई, 2022 को बड़ौदा मेधावी विद्यार्थी सम्मान के अंतर्गत पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर के एम. ए. हिंदी के शैक्षणिक वर्ष 2020-21 के 02 मेधावी विद्यार्थियों को समारोह के मुख्य अतिथि उच्च शिक्षा मंत्री, छत्तीसगढ़ शासन, श्री उमेश पटेल, माननीय कुलपति डॉ. केसरी लाल वर्मा तथा उप क्षेत्रीय प्रबंधक, श्री अभिषेक भारती के कर कमलों से सम्मानित किया गया.

क्षेत्रीय कार्यालय, कालिकट

दिनांक 28 अप्रैल, 2022 को क्षेत्रीय कार्यालय, कालिकट में बड़ौदा मेधावी विद्यार्थी सम्मान समारोह का आयोजन किया गया जिसमें उप अंचल प्रमुख, एर्णाकुलम अंचल श्री जियाद रहमान द्वारा कालिकट विश्वविद्यालय में वर्ष 2019-2021 में एम.ए. हिन्दी में प्रथम व द्वितीय स्थान प्राप्त छात्राओं को प्रमाण पत्र और नकद पुरस्कार से सम्मानित किया गया.

क्षेत्रीय कार्यालय, पश्चिमी दिल्ली

दिनांक 05 मई, 2022 को वर्ष 2020-21 के जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय के एम. ए. हिन्दी में प्रथम व द्वितीय स्थान प्राप्त छात्र/छात्रा को क्षेत्रीय प्रमुख श्री बी.के. सबलोक के कर कमलों से 'बड़ौदा मेधावी विद्यार्थी सम्मान योजना' के अंतर्गत सम्मानित किया गया.

क्षेत्रीय कार्यालय, सूरत शहर

क्षेत्रीय कार्यालय, सूरत शहर द्वारा अंचल कार्यालय, बड़ौदा के सहयोग से बड़ौदा मेधावी विद्यार्थी सम्मान समारोह कार्यक्रम का आयोजन दिनांक 06 अप्रैल, 2022 को एमटीबी कॉलेज, सूरत में किया गया. इस कार्यक्रम की अध्यक्षता सूरत शहर के क्षेत्रीय प्रमुख श्री आर के गोयल ने की. इस दौरान कॉलेज के स्टाफ सदस्यों एवं विद्यार्थियों को विभिन्न बैंकिंग उत्पादों के बारे में जानकारी देने हेतु एक विशेष बैठक का भी आयोजन किया गया.

क्षेत्रीय कार्यालय, एर्णाकुलम

दिनांक 21 अप्रैल, 2022 को श्री शंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय, कालड़ी के विद्यार्थियों के लिए वाद-विवाद प्रतियोगिता एवं बड़ौदा मेधावी विद्यार्थी सम्मान योजना समारोह का आयोजन किया गया. इस अवसर पर उप अंचल प्रमुख, एर्णाकुलम अंचल श्री जियाद रहमान द्वारा विजेता टीम को पुरस्कृत किया गया तथा वर्ष 2019-2021 के दौरान एम.ए. हिन्दी में प्रथम व द्वितीय स्थान प्राप्त छात्राओं को प्रमाण पत्र और नकद पुरस्कार से सम्मानित किया गया.

बड़ौदा मेधावी विद्यार्थी सम्मान समारोह

क्षेत्रीय कार्यालय, राजकोट

दिनांक 21 अप्रैल, 2022 को क्षेत्रीय कार्यालय, राजकोट द्वारा बड़ौदा मेधावी विद्यार्थी सम्मान योजना का आयोजन सौराष्ट्र विश्वविद्यालय, राजकोट में किया गया. इस अवसर पर श्री चन्द्रवीर सिंह राठौड़, मुख्य प्रबंधक, राजभाषा, अंचल कार्यालय, राजकोट द्वारा विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया.

क्षेत्रीय कार्यालय, भुज

दिनांक 06 मई, 2022 को राजभाषा विभाग द्वारा मेधावी विद्यार्थी सम्मान समारोह का आयोजन किया गया. इसके अंतर्गत क्षेत्रीय प्रमुख, भुज क्षेत्र श्री जगजीत कुमार द्वारा श्री क्रांतिगुरु श्यामजी वर्मा कच्छ विश्वविद्यालय के एम.ए. (हिन्दी) के शीर्ष 2 विद्यार्थियों प्रथम- सुश्री ऋतु शेखावत और द्वितीय - श्री मयूर माहेश्वरी को प्रशस्ति पत्र व पुरस्कार से सम्मानित किया गया.

नराकास सम्मान

नराकास, उडुपी द्वारा उडुपी क्षेत्र को राजभाषा पुरस्कार

क्षेत्रीय कार्यालय, उडुपी को वर्ष 2021-22 में उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन हेतु नराकास उडुपी से द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ. दिनांक 14 जून, 2022 को आयोजित अर्धवार्षिक बैठक के दौरान उप क्षेत्रीय प्रमुख श्री भीमाशंकर और वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) सुश्री माया एस ने सहायक निदेशक, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (दक्षिण) श्री नरेंद्र सिंह मेहरा से पुरस्कार प्राप्त किया.

नराकास, दुर्ग के तत्वावधान में दुर्ग क्षेत्र को प्रथम पुरस्कार

नराकास भिलाई-दुर्ग द्वारा वित्तीय वर्ष 2021-22 के दौरान उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन हेतु क्षेत्रीय कार्यालय, दुर्ग को प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया. दिनांक 20 मई, 2022 को आयोजित नराकास की छमाही बैठक के दौरान बैंक की ओर से यह पुरस्कार दुर्ग क्षेत्र के उप क्षेत्रीय प्रमुख श्री सिद्धार्थ वर्मा ने नराकास अध्यक्ष के कर-कमलों से ग्रहण किया.

कार्ड टोकनाइजेशनः एक आसान और सुरक्षित भुगतान की परिकल्पना

प्रस्तुतिः अम्ब्रेश रंजन कुमार
मुख्य प्रबंधक
(राजभाषा एवं संसदीय समिति)
प्रधान कार्यालय, बड़ौदा

कार्ड टोकनाइजेशन मौजूदा भुगतान उद्योग में बहुत ही चर्चित नाम उभर कर सामने आया है. यह वास्तव में भविष्य की कार्ड-आधारित भुगतान व्यवस्था की बहुत ही महत्वपूर्ण प्रक्रिया है. देश के विनियामक बैंक भारतीय रिज़र्व बैंक ने कार्ड-ऑन-फाइल (सीओएफ) टोकनाइजेशन को अपनाने पर जोर दिया है जो कि कार्ड संबंधी जानकारी को स्टोर कर रखने का एक वैकल्पिक उपाय है. आज जबकि तेजी से बढ़ती धोखाधड़ी की घटनाएं डिजिटल भुगतान को अपनाने के संबंध में लगातार चुनौती बन कर सामने आ रही है, ऐसे में टोकनाइजेशन की प्रक्रिया को उपयोगकर्ता की महत्वपूर्ण जानकारी को सुरक्षित रखने की दिशा में एक अतिरिक्त सुरक्षा व्यवस्था भी माना जा रहा है जिससे कि ऑनलाइन डिजिटल धोखाधड़ी को काफी हद तक रोका जा सकता है.

टोकनाइजेशन की आवश्यकता

मौजूदा दौर में भुगतान उद्योग की बात करें तो इस जगत में रोज ही लाखों की संख्या में कार्ड संबंधी आंकड़े साझा किए जाते हैं. भुगतान संबंधी इस प्रक्रिया को पूरा करने के लिए कार्डधारकों को प्रत्येक बार अपने कार्ड के विवरण को साझा करने की आवश्यकता होती है, ये आंकड़े वित्तीय दृष्टि से अतिसंवेदनशील होते हैं. कंपनियों द्वारा कार्डधारकों के कार्ड की जानकारी को स्टोर किया जाता है ताकि ग्राहक आसानी से ई-भुगतान कर सकें परंतु इसके साथ ही यदि ग्राहकों द्वारा कार्ड संबंधी संवेदनशील जानकारी सुरक्षित न रखी जाए तो उनके लिए यह वित्तीय खतरे की स्थिति को उत्पन्न करता है. ऐसे भी उदाहरण सामने आए हैं जब मर्चेंट की वेबसाइट पर कार्डधारकों की डेबिट अथवा क्रेडिट कार्ड की जानकारी को हैक किया गया है. अतः कार्ड टोकनाइजेशन के माध्यम से ई-भुगतान को अपेक्षाकृत अधिक सुरक्षित किया जा सकता है क्योंकि हर हाल में कार्डधारकों के कार्ड संबंधी विवरणों की सुरक्षा और निजता को बरकरार रखना जरूरी है.

हम यह भी जानते हैं कि आज डिजिटल भुगतान सबसे किफायती और आसान भुगतान साबित हो रहा है. समय के साथ डिजिटल भुगतान की प्रक्रिया को आसान बनाने तथा इसकी सुरक्षा के संबंध में नियमित कार्य किए जा रहे हैं. डिजिटल दौर ने हमें खरीदारी और भुगतान के सबसे आसान विकल्प उपलब्ध कराए हैं और हमें भी अपने विभिन्न प्रयोजनों हेतु देर-सवेर तकनीकी साधन ही सर्वाधिक आसान विकल्प के रूप में पसंद आ रहे हैं. हाल के वर्षों में हमारे द्वारा ऑनलाइन लेन-देन भुगतान की संख्या में बहुत वृद्धि हुई है और अधिकांश उपयोगकर्ताओं द्वारा भुगतान संबंधी अहम जानकारी मर्चेंट की वेबसाइट पर सेव की जा रही है. इसका सीधा मतलब यह है कि भुगतान प्राप्तकर्ता पार्टनर के पास उपयोगकर्ता की संवेदनशील वित्तीय जानकारी संबंधी एक्सेस है और यह जानकारी बहुत ही व्यक्तिगत स्वरूप की है. अतः उपयोगकर्ता की ऐसी जानकारी को सुरक्षित रखना न केवल ग्राहक की जिम्मेदारी है बल्कि बैंकों और संबंधित कंपनियों की भी समान जिम्मेदारी है. भारतीय रिज़र्व बैंक ने ऐसी संवेदनशील जानकारी की प्राईवेसी को ध्यान में रखते हुए मर्चेंट को उपयोगकर्ताओं की कार्ड संबंधी जानकारी स्टोर नहीं किए जाने संबंधी निर्देश दिए हैं. इसके विकल्प के रूप में नियामक बैंक ने टोकनाइजेशन की प्रक्रिया को बढ़ावा देने का निर्णय लिया है ताकि उपयोगकर्ताओं के कार्ड की अहम जानकारी के बदले अपेक्षाकृत कम संवेदनशील जानकारी को विशिष्ट रूप से जनरेट कोड - से प्रतिस्थापित किया जाएगा जिसे 'टोकन' का नाम दिया गया है.

इस प्रकार टोकनाइजेशन का आशय मौजूदा कार्ड विवरण को एक विशिष्ट कोड से प्रतिस्थापन करना है जिसे टोकन का नाम दिया गया है. टोकनाइजेशन को लागू करने हेतु

अनुरोध संबंधी कार्रवाई ग्राहकों की सहमति के आधार पर एक अतिरिक्त प्रमाणीकरण कारक के माध्यम से की जाती है. एक विशिष्ट निर्धारित प्रक्रिया के तहत जनरेट हुए टोकन के द्वारा कार्ड संबंधी संवेदनशील जानकारियां सुरक्षित रखी जाती हैं और अपने कार्ड के विवरणों को बताए बिना ही भुगतान की प्रक्रिया पूरी की जा सकती है जिससे कि कार्ड संबंधी धोखाधड़ी को रोका जा सकता है.

टोकनाइजेशन के जरिए भारतीय रिज़र्व बैंक की यह योजना है कि देश में भुगतान प्रणाली संबधी एक मजबूत इकोसिस्टम तैयार हो सके जिसके माध्यम से मर्चेंट और साझेदार दोनों ही कार्ड संबंधी भुगतान को टोकनाइजेशन के स्तर पर आसानी से ला सकें.

टोकनाइजेशन के फायदे:

आसान और त्वरित भुगतान: टोकनाइजेशन को अपनाने से हमें किसी भी भुगतान केंद्र पर भुगतान करते समय अपने कार्ड को प्रत्येक बार पंच करने की आवश्यकता नहीं होगी. इससे हम त्वरित भुगतान कर सकेंगे साथ ही हमारे समय की भी बचत होगी.

कार्ड संबंधी असफल लेनदेन की समस्या से बचाव: भुगतान केंद्र पर कई बार कार्ड संबंधी त्रुटि/ ख़राबी के कारण भुगतान असफल होने की परेशानी से बचा जा सकेगा.

कार्ड अपने पास रखने की आवश्यकता नहीं: टोकनाइजेशन हमें कार्ड को अपने साथ लेकर चलने की अनिवार्यता को समाप्त करता है और हमें खीरीदारी करते समय एटीएम कार्ड को अपने साथ रखने की जरूरत नहीं होती है.

बेहतर सुरक्षा: हमारे मास्टर कार्ड से संबंधित जेनरेट किया गया टोकन अपने आप में विशिष्ट होगा. इससे हमें सभी स्थानों पर अपने कार्ड संबंधी विवरणों को स्टोर या सेव करने की जरूरत नहीं होगी. जब कार्ड टोकनाइज्ड हो जाता है तो हम केवल उसके अंतिम चार अंकों को ही देख सकते हैं.

इस प्रकार से कार्ड टोकनाइज़ेशन का आशय वास्तविक कार्ड विवरणों को एक विशिष्ट वैकल्पिक कोड जिसे टोकन कहते हैं, से प्रतिस्थापित करना है जो कार्ड, ''टोकन'' अनुरोधकर्ता और डिवाइस के संयोजन के लिए विशिष्ट होगा.

शर्तें

टोकनाइजेशन – डी– टोकनाइजेशन सेवा

i. टोकनाइजेशन और डी–टोकनाइजेशन केवल प्राधिकृत कार्ड नेटवर्क द्वारा किया जाएगा और मूल प्राथमिक खाता संख्या (पैन) की रिकवरी केवल प्राधिकृत कार्ड नेटवर्क के लिए ही संभव होगी. इस बात को सुनिश्चित करने के लिए पर्याप्त सुरक्षा उपाय किए जाएंगे कि कार्ड नेटवर्क को छोड़कर किसी के भी द्वारा पैन से टोकन और टोकन से पैन का पता न लगाया जा सके. टोकन सृजन की प्रक्रिया की गोपनीयता हर समय सुनिश्चित की जाएगी.

ii. टोकनाइजेशन और डी–टोकनाइजेशन के अनुरोध कार्ड नेटवर्क द्वारा किए जाने चाहिए और यदि आवश्यकता हो तो, इसका रिट्राइवल उपलब्ध होना चाहिए.

iii. वास्तविक कार्ड डेटा, टोकन और अन्य संबंधित विवरण सुरक्षित मोड में संग्रहीत किए जाएंगे. टोकन अनुरोधकर्ता पैन या अन्य कोई कार्ड संबंधी विवरण संग्रहीत नहीं करेंगे.

कार्ड जारीकर्ता / अधिग्राहकों, टोकन अनुरोधकर्ताओं और उनके ऐप इत्यादि की प्रणालियों का प्रमाणन

i. कार्ड नेटवर्क टोकन अनुरोधकर्ता को निम्नलिखित के लिए प्रमाणित करवाएगा (क) टोकन अनुरोधकर्ता की प्रणालियों के लिए जिसमें इस प्रयोजनार्थ स्थापित किया गया हार्डवेयर भी शामिल है (ख) टोकन अनुरोधकर्ता की एप्लीकेशन की सुरक्षा (ग) आइडेंटीफाइड डिवाइस पर टोकन अनुरोधकर्ता के ऐप को प्राधिकृत एक्सेस सुनिश्चित करने की विशेषताएं, और (घ) टोकन अनुरोधकर्ता द्वारा किए गए अन्य कार्य, जिसमें ग्राहक ऑन-बोर्डिंग, टोकन प्रावधान और भंडारण, डेटा भंडारण, लेनदेन प्रोसेसिंग इत्यादि शामिल हैं.

ii. कार्ड नेटवर्क, कार्ड जारीकर्ताओं / अधिग्राहकों, उनके सेवा प्रदाताओं और भुगतान लेनदेन श्रृंखला में शामिल किसी अन्य संस्था को उनके द्वारा टोकनाइज्ड कार्ड लेनदेन की प्रोसेसिंग के लिए किए गए परिवर्तनों के संबंध में प्रमाणित करवाएंगे.

iii. कार्ड नेटवर्क द्वारा किए जाने वाले सभी प्रमाणन / सुरक्षा परीक्षण अंतरराष्ट्रीय सर्वोत्तम प्रथाओं / विश्व स्तर पर स्वीकृत मानकों के अनुरूप होंगे.

ग्राहक द्वारा पंजीकरण

i. टोकन अनुरोधकर्ता के ऐप पर कार्ड का पंजीकरण केवल प्रमाणीकरण के अतिरिक्त कारक (एएफए) के माध्यम से ग्राहक की स्पष्ट सहमति से किया जाएगा.

ii. कार्ड पंजीकरण के साथ ही साथ किसी भी लेन-देन को प्रमाणित करने के दौरान एएफए सत्यापन, कार्ड लेनदेन का प्रमाणीकरण भारतीय रिज़र्व बैंक के अनुदेशों के अनुसार ही होगा.

iii. ग्राहकों के पास किसी विशेष उपयोग के मामले में अर्थात संपर्क रहित, क्यूआर कोड आधारित, इन-ऐप भुगतान इत्यादि के संबंध में अपने कार्ड को पंजीकृत करने / पंजीकरण समाप्त करने का विकल्प होगा.

iv. ग्राहकों को टोकनाइज्ड कार्ड लेन-देन के लिए प्रति लेनदेन और दैनिक लेनदेन सीमाओं को निर्धारित करने और संशोधित करने का विकल्प दिया जाएगा.

v. टोकनाइज्ड कार्ड लेन-देन के लिए कार्ड जारीकर्ता / कार्ड नेटवर्क जैसा उचित समझें उसके अनुसार लेनदेन की संख्या को नियंत्रित करने (अर्थात एक दिन / सप्ताह / माह में ऐसे कितने लेन-देन को अनुमति दी जाएगी) की व्यवस्था करेंगे.

vi. किसी भी लेनदेन को करने के लिए, ग्राहक टोकन अनुरोधकर्ता ऐप में पंजीकृत किसी भी कार्ड का उपयोग करने के लिए स्वतंत्र होगा.

टोकन को सुरक्षित रूप से स्टोर करना

कार्ड के सफल पंजीकरण पर टोकन अनुरोधकर्ता द्वारा टोकन और संबंधित कुंजियों का सुरक्षित रूप से स्टोर किया जाना सुनिश्चित किया जाएगा.

ग्राहक सेवा और विवाद निपटान

i. कार्ड जारीकर्ता ग्राहकों तक आसान पहुंच सुनिश्चित करेंगे ताकि ''आइडेंटीफाइड डिवाइस'' के खो जाने अथवा ऐसी कोई अन्य घटना जिसके चलते टोकन का अनधिकृत उपयोग किया जा सकता है की रिपोर्टिंग ग्राहक द्वारा की जा सके. कार्ड जारीकर्ताओं और टोकन अनुरोधकर्ताओं के साथ कार्ड नेटवर्क ऐसी प्रणाली स्थापित करेंगे जो ऐसे टोकनों और संबंधित कुंजियों को तुरंत निष्क्रिय कर दें.

ii. टोकनाइज्ड कार्ड लेन-देन के लिए कार्ड नेटवर्क द्वारा वाद निपटान प्रक्रिया स्थापित की जाएगी.

लेन-देन की सुरक्षा

i. कार्ड नेटवर्क एक ऐसे तंत्र की स्थापना करेगा जो इस बात को सुनिश्चित करेगा कि लेनदेन संबंधी अनुरोध एक आइडेंटीफाइड डिवाइस से उत्पन्न हुआ है.

ii. कार्ड नेटवर्क टोकनाइज़ेशन प्रक्रिया के भीतर किसी भी खराबी, विसंगति, संदिग्ध व्यवहार या अनधिकृत गतिविधि का पता लगाने के लिए निगरानी सुनिश्चित करेगा और सभी हितधारकों को सचेत करने के लिए एक प्रक्रिया लागू करेगा.

iii. जोखिम की अवधारणा इत्यादि के आधार पर कार्ड जारीकर्ता यह तय कर सकेंगे कि उनके द्वारा जारी किए गए कार्ड को टोकन अनुरोधकर्ता द्वारा पंजीकृत करने की अनुमति दी जाए या नहीं.

स्रोतः भारतीय रिज़र्व बैंक

(अधिसूचना संख्याः डीपीएसएस.सीओ.पीडी. सं.1463/02.14.003/2018-19 दिनांक 08 जनवरी 2019)

संदर्भः https://www.livemint.com/

https://economictimes.indiatimes.com/

ई-कॉमर्स एवं ई-भुगतान की सुविधाएं

मिखिल गुप्ता
प्रबंधक (आयोजना)
क्षेत्रीय कार्यालय, लुधियाना

इंटरनेट एवं डिजिटल तकनीक के इस युग में न केवल बैंकिंग लेन-देन अपितु खरीददारी, शापिंग, कारेबार सभी कुछ वेबसाइट के जरिए हो रहा है. इस तरह होने वाले लेन-देन, क्रय-विक्रय को ही ई-भुगतान के नाम से जाना जाता है. वैसे ई-भुगतान का दायरा आरंभ से ही धीरे-धीरे बढ़ रहा है लेकिन भारत सरकार द्वारा डिजिटल इंडिया कार्यक्रम को हरी झंडी मिलते ही ई-भुगतान का बड़ी तेजी से विस्तार हुआ है. आज तकनीकी युग के दौर में ई-भुगतान के क्षेत्र में हुई प्रगति आर्थिक जगत की गतिविधियों को और भी बढ़ा रही है. ई-भुगतान के वृहद दायरे से आर्थिक विकास को भी गति मिलना स्वाभाविक है.

ई-भुगतान की पहुंच ने देश की आर्थिक एवं वाणिज्यिक प्रतिस्पर्धा को तो बढ़ाया ही है साथ ही इसने देश में निवेश के माध्यमों को भी सुगम किया है. जहां एक ओर ई-भुगतान ने उपभोक्ताओं के लिए वैश्विक खुदरा बाजार को व्यापकता प्रदान की है, वहीं दूसरी ओर नीति-निर्धारकों के सामने एक चुनौती भी प्रस्तुत की है. यह चुनौती है गली, मौहल्लों, नुक्कड़ों में मौजूद खुदरा विक्रेताओं के भविष्य को बचाये रखने की क्योंकि ई-शॉपिंग, ई-बायिंग, ई-फ्रेंचायज़ी, ई-पोर्टलों (ई-भुगतान के अंतर्गत खरीद-बिक्री के विभिन्न रूप) के जरिए रिटेल कारोबार की श्रृखंला बढ़ती ही जा रही है. ई-भुगतान को हम ई-कामर्स भी कहते हैं. ई-कॉमर्स के जरिए हम घर बैठे आसानी से किसी वेबसाइट या मोबाइल ऐप पर अपनी जरूरत की वस्तुएं देख सकते हैं और जांच कर इसे घर बैठे ही आर्डर देकर खरीद भी सकते हैं. ऐसी ऑनलाइन खरीदारी में ई-भुगतान का माध्यम हम सभी के लिए बहुत ही उपयोगी है.

दशकों से भारत की जनसंख्या ने बहुराष्ट्रीय कंपनियों को आकर्षित किया है. भारत इन कंपनियों के लिए बेहद लाभकारी बाजार साबित हुआ है. एक ओर जहां बहुराष्ट्रीय कंपनियां भारतीय बाजार को लुभाने में लगी हैं वहीं भारतीय कंपनियां भी इस प्रतिस्पर्धा में पीछे नहीं हैं. भारतीय कंपनियों ने भी देश भर में अपनी उपस्थिति को बढ़ाते हुए अपने उत्पाद एवं सेवाओं को लोकप्रिय बनाने का कार्य किया है. ई-कामर्स के प्रसार से उन्हें अपने इस लक्ष्य के साथ आगे बढ़ने हेतु बल मिला है और कंपनियों को बिना भौतिक उपस्थिति के दूरस्थ स्थित ग्राहकों को अपने उत्पाद उपलब्ध कराने में आसानी हुई इसके साथ ही ग्राहकों के लिए भी अपनी खरीद का भुगतान करना सरल हुआ है इस सुविधा ने उन्हें अपने पास नकदी रखने की अनिर्वायता को समाप्त किया है क्योंकि वे अपनी खरीद का भुगतान ऑनाइन माध्यम या ई-माध्यम से बहुत ही आसानी से कर सकते हैं:

ई-कॉमर्स सेवा प्रदाताओं के लिए भारत काफी संभावनाओं वाला देश है. इंटरनेट में नवीनतम टेकनॉलजी के आ जाने से ई-भुगतान की सेवाएं व सुविधाएं भी अधिक व्यापक हुई हैं. शुरू-शुरू में जब इंटरनेट की शुरूआत हुई थी तो ई-कामर्स/ ई-भुगतान की सेवाएं सामान्य कारोबार पर अधिक हावी नहीं थी क्योंकि इंटरनेट के जरिए लेन-देन करने में कुछ हिचक

और समस्याएं भी थीं जैसेः-इंटरनेट की खराब कनेक्टिविटी, आज जैसी उन्नत तकनीक का अभाव आदि. इसके बाद जब 3 जी एवं 4 जी सेवाए आरंभ हुई तो ब्रॉडबैंड व इंटरनेट कनेक्टिविटी को गति मिली. इंटरनेट के जरिए होनेवाले सारे लेन-देन फटाफट होने लगे और कारोबार का दायरा बढ़ता गया. जहां सिर्फ बैंकिंग व वित्तीय लेन-देन होता था वहां अब बिक्री खरीद, बुकिंग, शॉपिंग, निवेश जैसे काम भी होने लगे. ई-कॉमर्स कंपनियां 'कैश ऑन डिलीवरी' का भी विकल्प दे रही हैं. उपभोक्ता अपनी सुविधानुसार सामान डिलीवरी से पहले या बाद दोनों ही तरह से भुगतान कर सकते हैं. ग्राहक को इससे बढ़कर कोई सुविधा क्या मिलेगी, नयी पीढ़ी चूंकि नेट व टेकसेवी है तो उनकी खरीददारी ने ई-भुगतान को व्यापक धरातल प्रदान किया है. परंपरागत शॉपिंग अथवा खरीददारी उनके लिए उतनी आकर्षक व पैसा बचत करने वाली नहीं रही. इन बातों ने जहां ई-भुगतान के कारोबार को कई गुना बढ़ाने में मदद की, वहीं सदियों से परंपरागत रूप से चलनेवाली दुकानों, स्टोर्स पर भी भुगतान प्रणाली में परिवर्तन आया है.

लोगों की बदलती जीवन शैली ने भी ई-भुगतान को समृद्ध करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है. आजकल हर कोई व्यस्त है और समय न होने की शिकायत करता है. उनकी इस चिंता को और बल तब मिलता है जब परिवहन तंत्र की खामियां, बाजार में सही माल का ना मिलना, कार्ड का स्वीकार न किया जाना एवं दुकानों का एक विशिष्ट जगह पर ही मौजूद होना आदि ने ई-भुगतान को बढ़ावा देने का काम किया है. इसके अतिरिक्त ई-भुगतान के जरिए माल बेचने वाले विक्रेताओं ने लोगों को अच्छा खासा डिस्काउंट देना शुरू कर दिया. साथ ही साथ ई-भुगतान में प्रतिस्पर्धा इतनी बढ़ गई है कि कई उत्पादकों ने विभिन्न प्रदाताओं के जरिए डील व डिस्कांउट देना शुरू कर दिया है. जिनके लिए कोई चीज़ खरीदनी पहले बहुत मुश्किल हुआ करती थी उनके लिए वह चीज खरीदनी अब इतनी आसान है कि घर बैठे ही वह सामान खरीद लेंगे, घर पर ही सामान की डिलीवरी भी हो जाएगी और पैसा भी चाहे तो किस्तो में दे सकते हैं. किसी ज़माने में सिर्फ नये माल या सामान को खरीदने के लिए भीड़ देखी जाती थी, लेकिन आजकल पुराना सामान बेचने के लिए भी ई-भुगतान पर प्लेटफॉर्म उपलब्ध है, जिसके जरिए लोग अपना पुराना व अनचाहा माल आसानी से बेच रहे हैं. भारत सरकार ने जब से डिजिटल इंडिया कार्यक्रम की घोषणा की है तब से जैसे ई-भुगतान कारोबार को पंख लग गये हैं. सभी वस्तुएं अगर एक ही जगह मिलती हैं और वह भी बाजार से कम दाम पर तो ग्राहक को और क्या चाहिए. ई-भुगतान ने ग्राहकों की इस चाहत को पूरा किया है. माल की विविधता, लागत की कमी, कार्ड से भुगतान, घर बैठे सामान की प्राप्ति व किस्तों में चुकौती ने ग्राहक के वारे-न्यारे कर दिए हैं.

भारत में ई-भुगतान के विस्तार ने खुदरा व्यापारियों एवं दुकानदारों के लेनदेन के स्वरूप को बदला है साथ ही इसकी वजह से रोजगार के अवसरों में लगातार वृद्धि हो रही है. ऑनलाइन शॉपिंग कंपनियों ने लोगों के लिए बड़ी संख्या में रोजगार के अवसर प्रदान किए हैं. अनुमान लगाया जा रहा है कि ई भुगतान के क्षेत्र में आने वाले वर्षों में 1.5 से 2.00 लाख तक के रोजगार सृजित हो सकते हैं. वर्तमान में ई-भुगतान का व्यापार बहुत तेजी से बढ़ रहा है. भारत में ई-कॉमर्स का व्यापार जिस गति से बढ़ रहा है, उसको देखते हुए अब यह निश्चित है कि आने वाले दिनों में बड़ी-बड़ी कंपनियां इनमें पार्टनरशिप के लिए अथवा निवेश के लिए तैयार हो जाएंगी जिससे भारतीय अर्थव्यवस्था को और मजबूती मिलेगी. ब्रिक एंड मोर्टार पद्धति पर कारोबार चलानेवाली बड़ी कंपनियां ई-भुगतान में पूर्ण रूप से परिवर्तित हो सकती हैं, हालांकि इनमें से कई कंपनियां आज भी ऑनलाइन के जरिए बिक्री करती हैं लेकिन इनके अपने शोरूम जगह-जगह पर हैं. शोरूम को मेनटेन करने का खर्च बहुत ज्यादा होता है. कम होते लाभ व अनुरक्षण की बढ़ती लागत ने इन कंपनियों को अपने कई शोरूम बंद करने व कम करने पर मजबूर कर दिया है. बिक्र एवं मोटार की तरह अपने कारोबार के अनुरक्षण की समस्या का न होना ई-कामर्स/ई भुगतान कारोबार का सबसे बड़ा हितकर पक्ष होता है. ई-कॉमर्स पोर्टल की सफलता देखकर बड़े-बड़े घराने अब इससे कारोबार करने के लिए आगे आ रहे हैं जिसके फलस्वरूप भारतीय अर्थव्यवस्था और सुदृढ़ एवं विस्तृत बन सकेगी. अतः आने वाले दिनों में भारतीय अर्थव्यवस्था में ई-भुगतान का योगदान और भी बढ़ने वाला है.

***

कार्यशाला/ अभिप्रेरणा कार्यक्रम

अंचल कार्यालय, अहमदाबाद एवं अहमदाबाद क्षेत्र-1

दिनांक 08 अप्रैल, 2022 को अंचल कार्यालय, अहमदाबाद एवं अहमदाबाद क्षेत्र-1 द्वारा संयुक्त रूप से बैंक मित्र पर्यवेक्षक एवं वित्तीय समावेशकों हेतु 'डिजिटल उत्पाद में भारतीय भाषाओं का महत्व' विषय पर सेमिनार का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य प्रबंधक (राजभाषा) सुश्री वंदना जैन द्वारा सत्र लिया गया.

अंचल कार्यालय, नई दिल्ली

दिनांक 30 मई, 2022 को नई दिल्ली अंचल की विभिन्न शाखाओं में कार्यरत स्टाफ सदस्यों के लिए कार्यशाला आयोजित की गई. कार्यशाला के समापन सत्र में उप अंचल प्रमुख श्री भवानी शंकर गुप्ता ने प्रतिभागियों को संबोधित किया. कार्यशाला में कुल 20 स्टाफ-सदस्यों ने भाग लिया.

अंचल कार्यालय, एर्णाकुलम

दिनांक 24 जून, 2022 को एर्णाकुलम अंचल के स्टाफ सदस्यों के लिए हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया. इस कार्यशाला में राजभाषा नीति, वार्षिक कार्यक्रम, तिमाही प्रगति रिपोर्ट और सामर्थ्य टूल पर सत्र लिया गया. इस कार्यशाला में अंचल के 18 स्टाफ सदस्य ऑनलाइन माध्यम से उपस्थित थे.

अंचल कार्यालय, राजकोट तथा बड़ौदा अकादमी, राजकोट

दिनांक 13 मई, 2022 को अंचल कार्यालय, राजकोट तथा बड़ौदा अकादमी, राजकोट के संयुक्त तत्वावधान में अपने अधिकारियों एवं कर्मचारियों हेतु एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें लीला हिंदी प्रवाह टूल प्रशिक्षण हेतु केंद्रीय हिन्दी शिक्षण संस्थान, भारत सरकार नई दिल्ली से श्री विक्रम सिंह विशेष रूप से उपस्थित रहें .

क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलूरु उत्तर एवं ग्रामीण

दिनांक 14 जून, 2022 को उप महाप्रबंधक एवं क्षेत्रीय प्रमुख, क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलूरु उत्तर श्री सत्यनारायण के, उप महाप्रबंधक एवं क्षेत्रीय प्रमुख श्रीमती परिमिता मिश्रा, साथ ही मुख्य प्रबंधक, क्षेत्रीय कार्यालय-बेंगलूरु-ग्रामीण श्री प्रभु सी एस द्वारा शाखा के स्टाफ सदस्यों के लिए एक पूर्ण दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया.

नराकास सम्मान

नराकास, नागपुर के तत्वावधान में सम्मान समारोह का आयोजन.

दिनांक 01 अप्रैल, 2022 को नराकास, नागपुर के तत्वावधान में विविध बैंकों द्वारा आयोजित प्रतियोगिताओं में नागपुर क्षेत्र के विजेता स्टाफ सदस्यों हेतु सम्मान समारोह का आयोजन किया गया जिसमें क्षेत्र के 12 स्टाफ सदस्यों को क्षेत्रीय प्रबंधक श्री संजीव सिंह ने पुरस्कार एवं प्रमाणपत्र देकर सम्मानित किया.

नराकास, आणंद का वार्षिक राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह

दिनांक 28 अप्रैल, 2022 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, आणंद द्वारा वार्षिक राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित किया गया. कार्यक्रम में वार्षिक शील्ड योजना के अनुसार प्रशासनिक कार्यालयों एवं शाखा कार्यालयों को पुरस्कृत किया गया. इस अवसर पर समिति के अध्यक्ष श्री अरविंद विमल एवं उपाध्यक्ष श्री एस. पी. शारदा उपस्थित रहे.

नराकास, करनाल द्वारा करनाल क्षेत्र को पुरस्कार

क्षेत्रीय कार्यालय, करनाल को नराकास, करनाल की ओर से वर्ष 2021-22 के दौरान उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन हेतु द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया.

नराकास, लुधियाना द्वारा लुधियाना क्षेत्र को पुरस्कार

दिनांक 22 जून, 2022 को नराकास, लुधियाना द्वारा आयोजित बैठक में क्षेत्रीय कार्यालय, लुधियाना को 2021-22 के दौरान बेहतरीन कार्यनिष्पादन हेतु द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया. इस अवसर पर क्षेत्रीय प्रमुख श्री विपिन कुमार एवं प्रबंधक (राजभाषा) सुश्री नारायणी देवी ने पुरस्कार प्राप्त किया.

नोएडा क्षेत्र की गाजियाबाद शाखा को नराकास का पुरस्कार

दिनांक 25 मई, 2022 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति गाजियाबाद (बैंक) की छमाही बैठक में सदस्य शाखा गाजियाबाद को वित्तीय वर्ष 2021-22 में राजभाषा में उत्कृष्ट कार्यनिष्पादन हेतु प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त हुआ.

नराकास, विशाखापट्टनम द्वारा विशाखापट्टनम क्षेत्रीय कार्यालय को प्रथम पुरस्कार

दिनांक 27 जुलाई, 2022 को नराकास विशाखापट्टनम की 21 वीं अर्द्ध वार्षिक बैठक में राजभाषा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु विशाखापट्टनम क्षेत्रीय कार्यालय को वर्ष 2020-21 के लिए प्रथम पुरुस्कार के रूप में राजभाषा शील्ड व प्रमाण पत्र प्रदान किया गया.

अन्य गतिविधियां

पणजी क्षेत्रीय कार्यालय में पुस्तकालय का उद्घाटन

दिनांक 08 अप्रैल, 2022 को क्षेत्रीय कार्यालय, पणजी में प्रधान कार्यालय, बड़ौदा के महाप्रबंधक (सीआईएडी) श्री तपन कुमार दास के कर कमलों से पुस्तकालय का उद्घाटन किया गया. इस अवसर पर पुणे अंचल प्रमुख श्री मनीष कौड़ा, उप-अंचल प्रमुख श्री चंद्रमणि त्रिपाठी, पणजी क्षेत्र के क्षेत्रीय प्रमुख श्री दीपक कुमार सिंह तथा पुणे अंचल के अधीनस्थ क्षेत्रों के क्षेत्रीय प्रमुख तथा कार्यपालकगण उपस्थित रहे.

अंचल कार्यालय, बड़ौदा द्वारा वित्तीय साक्षरता कार्यक्रम का आयोजन

दिनांक 29 अप्रैल, 2022 को आर-सेटी वडोदरा में चल रहे प्रशिक्षण कार्यक्रम में हिस्सा ले रहे प्रतिभागियों हेतु वित्तीय साक्षरता कार्यक्रम का आयोजन किया गया. मुख्य प्रबंधक श्री नितेश कुमार, अंचल कार्यालय, बड़ौदा ने सभी प्रतिभागियों को वित्तीय साक्षरता से अवगत करवाया. इसके साथ बैंक के विभिन्न उत्पादों में उपलब्ध भारतीय भाषाओं की सुविधाओं से भी प्रतिभागियों को अवगत करवाया गया. इस अवसर पर आर-सेटी के निदेशक श्री दिनेश पवार भी उपस्थित थे.

अबोहर शाखा, लुधियाना क्षेत्र द्वारा प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन

दिनांक 09 मई, 2022 को लुधियाना क्षेत्र की अबोहर शाखा द्वारा स्वामी विवेकानंद पब्लिक स्कूल, अबोहर में प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन किया गया. इस अवसर पर सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता, चित्रकला प्रतियोगिता, पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता एवं कविता लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. इस दौरान शाखा प्रमुख श्री पी.सी. तुंगरिया एवं अन्य स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे.

झुंझुनू क्षेत्र की नवलगढ़ शाखा में हिंदी जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन

झुंझुनू क्षेत्र द्वारा दिनांक 01 जून, 2022 को नवलगढ़ शाखा में हिन्दी जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया. कार्यक्रम में क्षेत्रीय प्रमुख श्री बी.एल. सुंडा द्वारा हिन्दी की महत्ता के बारे में बताया गया एवं हिंदी में अधिकाधिक कार्य करने हेतु प्रेत्साहित किया.

भाषा बहता नीर

क्र.	हिंदी	तेलुगु	तमिल	मलयालम
1	क्या आप इन सभी पत्रों का जवाब भेज सकती हैं?	ई लेखलन्निंटिकी मीरु समाधानं इव्वगलरा?	इन्तक् कटितमळ् अनैत्तिन्कुम् उमळाल् पतिलळिक्क मुडियुमा?	ई कत्तुकळ्क्कल्लां मरुपटि नल्कामो?
2	हां, मैं दिन के अंत तक सभी का जवाब भेज दूंगी.	अवुनु, नेनु रोजु चिवरिलोगा अंदरि प्रत्युत्तरान्नि पंपुतानु.	आम्, नाळ् मुटिवत्न्कुळ् अनैवरिन् पतिलैयुम् अनुप्पुवेन्.	हां, दिवसावसानमावुम्बोल ञान् एल्लावरक्कुम मरुपटि अयय्क्कुं.
3	क्या आपने इन पत्रों को टाइप कर लिया है?	मीरु ई अक्षरालनु टैप् चेसारा?	इन्त कटितमळै नीमळ् तट्टच्चु चय्तीर्कळा?	निङ्ङळ् ई कत्तुकल टैप्प् चय्तिट्टुण्टो?
4	नहीं, अभी मैं इसे टाइप कर रही हूँ, कुछ देर में टाइप करके इसे भेज दूंगी.	लेदु, इप्पुडे टैप् चेस्तुन्नानु, कासेपट्लो टैप् चेसि पंपुतानु.	इल्ल इप्प टैप् पण्ऱेन्, कञ्च नेरत्तुल टैप् पण्णि अनुप्पुरेन्.	इल्ल, ञानिप्पोळ् टैप्प् चय्युकयाण्, अल्प्पसमयत्तिनुळ्ळिल् टैप्प् चय्त् अयक्कां.
5	इन दिनों काम का बहुत ज्यादा बोझ है.	ई रोजुल्लो पनि भारं क्कुव.	इन्त नाट्कळिल् वेलै चुमै अतिकम्.	ई दिवसङ्ङळिल् जोलिभारं कूटुतलाण.
6	आपने तो इस मामले को आसानी से हल कर दिया है.	मीरु ई विषयान्नि सुलभंगा परिष्करिंचारु.	इन्त विषयत्तै ळिताक तीर्त्तुविट्टीर्कळ.	निङ्ङळ् ई विषयं ळुप्पत्तिल् परिहरिच्चु.
7	आज की बैठक को रद्द किया गया है.	नेटि समावेशं रद्दु चेयबडिंदि.	इन्नैय कूट्टम् रत्तु चय्यप्पट्टुळ्ळतु.	इन्नत्त योगं ऱ्द्दाक्कि.
8	अगर आपके पास थोड़ा समय है, तो क्या आप यह काम कर सकती हैं?	मीकु कंच समयं उंटे, मीरु दीन्नि चेयगलरा?	उमळुक्कु चिरितु नेरम् इरुन्ताल्, इतैच् चय्य मुडियुमा?	निङ्ङळ्क्क् कुऱच् समयमुण्टगिल, निङ्ङळ्क्क् इत् चय्यान् कऴियुमो?
9	मेरे पास अभी थोड़ा काम बचा है, उसके बाद मैं अवश्य आपकी सहायता करूंगी.	नाकु इप्पुडु कंत पनि मिगिलि उंदि, आ तर्वात नेनु खच्चितंगा मीकु सहायं चेस्तानु.	नक्कु इप्पोतु चिल वेलैकळ् उळ्ळन, अतन् पिऱ्कु नान् निच्चयमाक उमळुक्कु उदवुवेन्.	निक्क् इप्पोळ् कुऱच् जोलियुण्ट्, अतिनुशेषं ञान् तीर्च्चयायुं निङ्ङळ सहायिक्कुं.
10	आपको यह कार्य खत्म करने में कितना समय लगेगा?	ई पनिनि पूर्ति चेयडानिकि मीकु ंत समयं पड्तुंदि ?	इन्त वेलैयै मुटिक्क व्वळवु नेरम् आगुम्?	ई जोलि पूर्त्तियाक्कान् निङ्ङळ्क्क् एत्र समयमट्कुं?
11	जी मैं दोपहर तक अपना कार्य खत्म कर लूंगी.	अवुनु, नेनु मध्याह्नानिकि ना पनि पूर्ति चेस्तानु.	आम्, मतियत्तिन्कुळ् न् वेलैयै मुडित्तुविडुवेन्.	अत, उच्चयोट ञान् एन्टे जोलि पूर्त्तियाक्कुं.
12	क्या तुम आज कार्यालय आ रही हो?	नुव्वु ई रोजु आफीसुकि वस्तुन्नावा ?	इनु अलुवलकत्तिन्कु वरुकिऱाया?	नी इन् ओफीसिल् वरुन्नुण्टो?
13	नहीं, मैंने दफ्तर से एक दिन की छुट्टी ली है.	लेदु, नेनु आफीसु नुंडि क रोजु सलवु तीसुकुन्नानु.	इल्लै, नान् अलुवलकत्तिन्कु रु नाळ् विडुमुऱै टुत्तुळ्ळेन्.	इल्ल, ञान् ओफीसिल् निन् रु दिवसं अवधियट्टु.
14	इससे पहले, आप कहां काम करती थी?	अंतकु मुंदु मीरु क्कड पनि चेशारु?	अतन्कु मुन्, नीमळ् मे वेलै चय्तीर्कळ्?	इतिनुमुम्प्, निङ्ङळ् विटयाण् जोलि चय्तत्?
15	मैं एक आईटी कंपनी के लिए काम करती थी.	नेनु क आईटी कंपनीलो पनि चेसेवाडिनि.	नान् रु ऐटि निरुवऩत्तिल् वेलै पार्त्तेन्.	ञान् रु आई टी कम्पनियिल् जोलि चय्युकयायिरुन्नु.

आइये ! सीखें भारतीय भाषाएं

क्र.	कन्नड	गुजराती	बांगला	मराठी
1	निमगे ई एल्ला पत्रगळिग उत्तरिसलु आगुत्तदेये?	शुंतमेआबधापत्रोनोजवाबआपीशकशो?	तुमि कि एइ सब चिठिर उत्तर दिते पारबे?	तुम्ही या सर्व पत्रांना उत्तर देऊ शकता का?
2	हौदु, नानु दिनद अंत्यदळग एल्ला पत्रगळिगे उत्तरवन्नु कळुहिसुत्तेन.	हा, हुं दिवसना अंत सुधीमां दरेकना जवाब मोकलीश.	ह्याँ, आमि दिन शेष होवार मोध्ये सबार उत्तर पाठिये दोबो.	होय, मी सर्वांचे उत्तर दिवसाच्या शेवटी पाठवीन.
3	एनु नीवु ई एल्ला पत्रगळन्नु टैप माडिद्दीरा?	शुं तमे आ पत्रोंने टाईप करी लिधा छे?	आपनि कि एइ चिठिगुलो टाइप करेछेन?	तुम्ही ही अक्षरे टाईप केली आहेत का?
4	इल्ला, ईग इदन्नु टैप माडुत्तिद्देन, स्वल्प समयदल्लि इदन्नू टैप माडि कळुहिसुत्तेन.	ना, हुं अत्यारे टाइप करी रही छुं, थोडी वारमां टाइप करीने मोकलीश.	ना, आमि एखनइ टाइप करछि, किछुख्यनेर मध्ये टाइप करे पाठाच्ची	नाही, मी आत्ता टाईप करत आहे, थोड्या वेळाने टाईप करून पाठवीन.
5	इत्तीचिन दिनगळल्लि कलसद हर हेच्चागिद.	आजकाल कामनो बोज घणों वधारे छे.	आजकाल काजेर चाप अनेक बेशि.	आजकाल कामाचा ताण खूप आहे.
6	नीवु ई विषयवन्नु सुलभवागि परिहरिसिद्दीरि.	तमे आ मुद्दाने सरळताथी हल करी दीधो छे.	आपनि तो एइ बिषयटि सहजेइ सम ाधान करेछेन.	तुम्ही हे प्रकरण सहज सोडवले आहे.
7	इंदिन सभयन्नु रद्दुगळिसलागिद.	आजनी बेठक रद करवामां आवी छे.	आजकेर बोइठक बातिल करा हयेछे.	आजची बैठक रद्द करण्यात आली आहे.
8	निम्म बळि स्वल्प समयविद्दर, नीवु ई केलसवन्नु माडुत्तीरा?	जो तमारी पासे थोडो समय होय, तो शुं तमे आ काम करी शको छो?	आपनार काछे जदि एकटु समय थाके, आपनि कि एटि करते पारेबेन?	जर तुमच्याकडे थोडा वेळ असेल तर तुम्ही हे करू शकता का?
9	नन्न बळि ईग स्वल्प कलस उळिदिद, अदाद नंतर नानु निमग खंडितवागि सहाय माडुत्तेन.	मारी पासे हमणा थोडुं काम बाकी छे, ते पछी हुं तमने चोक्कस मदद करीश.	आमार एखन किछु काज बाकि आछे, तार परे आमि अबश्यइ आपनाके साहाज्य करब.	मला आता काही काम बाकी आहे, त्यानंतर मी तुम्हाला नक्कीच मदत करेन.
10	निमग ई कलसवन्नु पूर्ति माडलु एष्टु समय बेकागुत्तद?	आ काम पूरुं करवामां तमने केटलो समय लागशे?	एइ काजटि शेष करते आपनार कतख्यन लागबे?	हे काम पूर्ण करण्यासाठी तुम्हाला किती वेळ लागेल?
11	हां, नानु मध्याह्नद हत्तिग नन्न कलसवन्नु मुगिसुत्तेने.	हा, हुं बपोर सुधीमां मारुं काम पूरुं करी लईश.	ह्याँ, दुपुरेर मध्ये आमार काज शेष करब.	होय, मी माझे काम दुपारपर्यंत पूर्ण करेन.
12	एनु, नीवु इवत्तु आफिसिग बरुत्तीरा?	शुं तमे आजे ओफिसमां आवो छो?	आपनि कि आज अफिसे आसछेन?	तू आज ऑफिसला येत आहेस का?
13	इल्ला, नानु आफिसिनिंदंदु दिन रज तेगेदुकोंडिद्देन.	ना, में ओफिसमांथी एक दिवसनी रजा लीधी छे.	ना, अफिस थेके एकदिन छुटि नियेछि.	नाही, मी ऑफिसमधून एक दिवस सुट्टी घेतली आहे.
14	इदक्कू मदलु नीवु एल्लि कलस म ाडुत्तिद्दिरि?	ते पहेलां, तमे क्यां काम कर्युं हतुं?	तार आगे, आपनी कोथाय काज करतेन?	त्यापूर्वी, तुम्ही कुठे काम केले?
15	नानु ओंदु ऐटि कंपनिगे कलस माडुत्तिद्द.	हुं एक आईटी कंपनीमां काम करती हती.	आमि एकटा आइटि कोम्पानिते काज करताम.	मी एका आयटी कंपनीत काम करत होतो.

देश के सांस्कृतिक विस्तार में भाषा की भूमिका

संतोष तुकाराम टेलकीकर
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)
मुंबई मेट्रो उत्तर क्षेत्र

भाषा संस्कृति की संवाहिका है. भाषा के बिना देश की संस्कृति का विकास असंभव है. देश के विकास में भी भाषा के योगदान को नजरअंदाज़ नहीं किया जा सकता है. भारत की संस्कृति हजारों वर्ष पुरानी है. अगर यह कहें कि हिंदुस्तान की संस्कृति विश्व की सबसे पुरानी संस्कृतियों में से एक है, यह कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी. समय के साथ संस्कृति में परिवर्तन भी आती है और यह समृद्ध भी होती है. परिवर्तनों को हमने स्वीकार भी किया है. कहा जाता है कि परिवर्तन ही प्रकृति का नियम है.

देश आजादी के अमृत महोत्सव का उत्सव मना रहा है. हमने देखा भी है और अनुभव भी किया है कि देश को आजाद कराने से लेकर देश को आज भी विकसित बनाने की राह में हिंदी भाषा की भूमिका महत्वपूर्ण रही है. लाल किले की प्राचीर से हमारे प्रधानमंत्री जब हिंदी में भाषण देते हैं तब उनको केवल भारत ही नहीं विश्व के हर कोने के लोग सुनते हैं, तब हिंदी भाषा का गौरव और स्वाभिमान बढ़ जाता है. देश में अनेक भाषाएं हैं लेकिन विविधता में एकता का प्रधिनिधित्व हिंदी भाषा ही करती है. देश के विभिन्न स्थानों पर किसी भी सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है तो उसमें सर्वोपरि हिंदी ही रहती है. साथ ही देश के शिक्षा संस्थानों में भी हिंदी भाषा का ही बोलबाला दिखाई देता है. भारतीय संस्कृति में अभिवादन की परंपरा है जिसमें प्रणाम और नमस्कार भारतीयता की पहचान है. जब किसी देश के प्रधानमंत्री द्वारा जनता के साथ 'मन की बात' हिंदी भाषा के माध्यम से की जाती है तो निश्चित रूप से हिंदी भाषा के सम्मान में 'चार चांद' लग जाते हैं. इन्हीं बातों से हम अंदाजा लगा सकते हैं कि देश के सांस्कृतिक विस्तार में हिंदी की भूमिका कितनी महत्वपूर्ण है.

विश्व के विभिन्न स्थानों पर हिंदी से जुड़े कार्यक्रम या सम्मेलनों का आयोजन किया जाता है और मेरा दावा है कि हिंदी भाषा के अलावा अन्य किसी भी भाषा के सम्मेलनों को इतने बड़े पैमाने पर श्रोता नहीं मिल सकते हैं जितने कि हिंदी भाषा में सुननेवालों की संख्या है. लेकिन वास्तविक बात तो यह भी है कि वर्तमान समय में हिंदी की पढ़ाई कम होती जा रही है. अंग्रेजी भाषा का वर्चस्व बढ़ता जा रहा है. चिंता का विषय यह है कि हमारी आनेवाली पीढ़िया हमारी संस्कृति को याद करेगी या नहीं क्योंकि भाषा ही संस्कृति की संवाहक है और इसका अस्तित्व बना रहना जरूरी है. इस दिशा में हमें गंभीरता से सोचने की आवश्यकता है. हिंदी भाषा को केवल 14 सितंबर तक सीमित न रखते हुए उसे जन की और मन की भाषा बनानी पड़ेगी. भारत के सांस्कृतिक धरोहर को संजोकर रखने वाली भाषा के लिए हमें अधिक जागरूक और सजग बनने की जरूरत है. किसी भी राष्ट्र के विकास में भाषा की भूमिका सर्वोपरि रहती है. साथ ही किसी भी स्वतंत्र राष्ट्र के लिए एक भाषा का होना उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि उसे देश की उन्नति. भाषा भी राष्ट्र का प्रतीक है.

भाषा केवल आदान-प्रदान का साधन मात्र नहीं है, बल्कि यह संस्कृति का आदान-प्रदान करने का एक सशक्त माध्यम है. किसी भी राष्ट्र के विकास में एक भाषा का योगदान तो है ही साथ-साथ उस राष्ट्र को एकता के सूत्र में बांधने का महत्वपूर्ण कार्य भी भाषा करती है. हिंदी भाषा हमारी संस्कृति का प्रतिबिंब है. भारत की सबसे लोकप्रिय, बोली जाने वाली और समझनेवालों की तुलना में हिंदी भाषा ही प्रथम स्थान पर है. लेकिन वर्तमान समय में हमें भाषा के विस्तार को बढ़ाने की जरूरत है और यह तभी संभव हो सकता जब हम नयी तकनीकों को अपनाते हैं. यह युग तकनीक का युग है, जिसने

इसे अपनाया नहीं वह दुनिया की दौड़ से पिछड़ जाएगा. इसलिए यह बात भाषा पर भी लागू होती है. हमें हिंदी भाषा के बदलाव और तकनीकी साधनों का प्रचार-प्रसार करने की आवश्यकता ही नहीं ज़रूरत भी है. जब हिन्दुस्तान की आज़ादी के लिए राष्ट्रीय आंदोलनों में एक भाषा की आवश्यकता पड़ी तब हिंदी भाषा को ही सर्व सहमति से सभी की स्वीकार्यता मिली. इसमें केवल हिंदी प्रदेश के लोगों ने ही नहीं अपितु देश के हर कोने से इसे स्वीकारा गया. सरलता और सहजता के कारण ही हिंदी भाषा ने जनसामान्य के हृदय में अपना स्थान बना लिया है और यही कारण है कि हिंदी भाषा के साहित्य में भारत के विभिन्न भाषाओं के साहित्य का अनुवाद प्राप्त होता है. इस साहित्य में देश की सांस्कृतिक धरोहर का विस्तार देखने को मिलता है इसलिए हिंदी भाषा का साहित्य समृद्ध होता हुआ नज़र आता है.

हिंदी फिल्म जगत ने भारत की सांस्कृतिक धरोहर को विश्व पटल पर रेखांकित किया है. विभिन्न क्लासिक फिल्मों के माध्यम से हिंदुस्तान की संस्कृति, परंपरा, रीति-रिवाजों, रहन-सहन, और सबसे महत्वपूर्ण कि जिसे भाषा की विशेषता कही जाए. हिंदी भाषा का महत्वपूर्ण उपन्यास चंद्रकांता को पढ़ने के लिए बहुत से लोगों ने हिंदी सीखी. उसी तरह भारत के ही नहीं विश्व के विभिन्न देशों के लोगों ने हिंदी फिल्मों को देखने और समझने के लिए हिंदी भाषा सीखी. मनोरंजन जगत के साथ-साथ भारत के पर्यटन जगत ने भी हिंदुस्तान की सांस्कृतिक धरोहर को संजोकर रखा है. देश-विदेश के पर्यटक जब भारत की यात्रा करते हैं तब उस स्थान की विशेषताओं को हिंदी भाषा में रेखांकित किया हुआ पाते हैं. इसीलिए हिंदी भाषा सांकृतिक विरासत की धरोहर है. विश्व के लगभग 150 विश्वविद्यालयों में हिंदी भाषा की पढ़ाई की जाती है. भारत में देश-विदेश से विद्यार्थी हिंदी भाषा का अध्ययन करने के लिए हर वर्ष आते हैं, जैसे आगरा का 'केंद्रीय हिंदी संस्थान' आदि. ये विद्यार्थी हिंदी भाषा के माध्यम से हमारी संस्कृति भी सीखते और अपनाते भी हैं.

भारत बहुभाषी राष्ट्र है, इसके बावजूद देश के सांस्कृतिक विरासत के विस्तार की बात आती है तो बेशक हिंदी भाषा का ही चुनाव करना पड़ेगा. बहरहाल यह बात स्पष्ट है कि देश के सांस्कृतिक विस्तार में हिंदी भाषा की भूमिका महत्वपूर्ण ही नहीं सर्वोपरि भी है.

* * *

खुद को ज़िंदा करके, आज मैं जीना चाहती हूं
गिरती जो रोज़ हूं, आज फिर उड़ना चाहती हूं

देखे जो सपने, अब फिर उन्हें जगाना चाहती हूं
जान फूंक कर उनमें, मैं खुद उड़ना चाहती हूं

ऊंचाई बहुत है मंज़िलों की, फिर भी कोशिश करना चाहती हूं
जीतूं या हारुं, परवाह नहीं, खुद के लिये बस कुछ करना चाहती हूं

कमी नहीं है धक्के देने वालों की मुझे
पर धक्के खाकर भी आगे कदम बढ़ाना चाहती हूं
आम लगती हूं कुछ खास लोगों को मैं
उन लोगों को भ्रम में भटकना चाहती हूं
नज़रें मिलाये फिर कभी वो मुझ से अगर
उनमें सम्मान कुछ अधिक मैं मिलाना चाहती हूं

कुछ हंसेंगे, कुछ मज़ाक बनाएंगे
कुछ बात-बात मेरे पीछे बनाएंगे
पर घबरा कर नहीं, सुनकर भी नहीं
मैं बस खुद को आजमाकर उन्हें शर्मिंदा बनाना चाहती हूं

कई बार लगा चुकी हूं आग मैं अपने अरमानों को
आज उस आग को हथियार मैं बनाना चाहती हूं
जो बची थी राख मेरे हुनर की थोड़ी सी
आज उस राख को सर माथे मैं लगाना चाहती हूं

हां मैं खुद को खुद से मिलाना चाहती हूं
किसी और के लिये नहीं बस कुछ खुद के लिए थोड़ा सा जीना चाहती हूं

– रुचिका जैन
अधिकारी
कोणनकुंटे शाखा
बेंगलूरु अंचल

बैंक गारंटियों में अनुपालन

अंकित सुनेजा
मुख्य प्रबंधक
बड़ौदा अकादमी, जयपुर

प्रस्तावना – बैंक गारंटी क्या है?

बैंक गारंटी खरीददार और विक्रेता के बीच एक समझौता होता है. इस समझौते में बैंक मध्यस्थ के रूप में कार्य करता है. बैंक गारंटी बैंकों द्वारा एक वादे के रूप में जारी की जाती है. इसके अनुसार यदि ग्राहक ऋण चुकाने में विफल रहते हैं, तो बैंक आपके वित्तीय दायित्वों को पूरा करता है. ग्राहक बैंक गारंटी के माध्यम से लेनदार को आश्वस्त कर सकते हैं कि यदि वह भुगतान करने या अपनी देनदारियों को पूरा करने में विफल होंगे, तो बैंक ग्राहक की ओर से भुगतान कर देगा.

बैंक गारंटी आमतौर पर व्यावसायिक संस्थाओं के बीच उपयोग की जाती है. खरीददार बैंक गारंटी का उपयोग करके उपकरणों, मशीनरी या कच्चे माल की खरीदी करता है या व्यवसाय के लिए पूंजी प्राप्त करता है. बैंक गारंटी में वादा किया जाता है कि खरीददार द्वारा भुगतान समय पर किया जाएगा. यदि खरीददार समय पर भुगतान नहीं करता है, तो बैंक द्वारा भुगतान किया जाता है.

गतावधि बैंक गारंटियों में अनुपालन

गतावधि बैंक गारंटियों के बारे में जानने की लिए दो तरीकों से रिपोर्ट निकाली जा सकती है.

1) फिनेकल मेनू – OGM - इस मेनू में आप मांगी गयी जानकारी डाल कर रिपोर्ट को निकाल सकते हैं.

2) फिनेकल मेनू – HGILR- इस मेनू में भी आप मांगी हुई जानकारी देकर रिपोर्ट निकाल सकते हैं.

भारतीय रिज़र्व बैंक की पूंजी पर्याप्तता मानदंडों के अनुसार प्रत्येक बकाया बैंक गारंटी के लिए बैंक को पूंजी रखनी होती है जहां एक और गतावधि बैंक गारंटी किसी कमीशन का अर्जन नहीं करता वहीं बैंक को ऐसे बैंक गारंटी पर अतिरिक्त पूंजी रखने के लिए लागत का वहन करना पड़ता है जिससे बैंक को हानि होती है. बैंक गारंटी की नियमित समीक्षा और बैंक के दिशानिर्देशों के अनुसार उन्हें समय पर बंद करके इससे बचा जा सकता है.

अन्तर्देशीय बैंक गारंटी के संदर्भ मे

अब प्रश्न यह उठता है कि अगर शाखा में कोई बैंक गारंटी समाप्त हो गई है तो क्या करना चाहिए. इस संबंध में तीन चीजें हो सकती हैं, पहला जिसको बैंक गारंटी दी गई है उसने विधिवत डिस्चार्ज की गई बैंक गारंटी को वापस दे दिया हो, दूसरा बैंक गारंटी वापस नहीं किया पर उसके स्थान पर डिस्चार्ज पत्र दे दिया और तीसरा लाभार्थी ने ना ही मूल बैंक गारंटी दी और ना ही डिस्चार्ज पत्र दिया.

शाखा को इन तीनों स्थितियों में क्या करना चाहिए? इसका उत्तर निम्ननुसार है :

1. सबसे पहली स्थिति में यदि लाभार्थी ने हमें विधिवत डिस्चार्ज की गई बैंक गारंटी दे दी है तो हमें उसको अपने सिस्टम में तत्काल बंद कर देना चाहिए.

2. यदि लाभार्थी ने विधिवत डिस्चार्ज की गई बैंक गारंटी नहीं दी लेकिन उसके स्थान पर एक डिस्चार्ज पत्र दिया

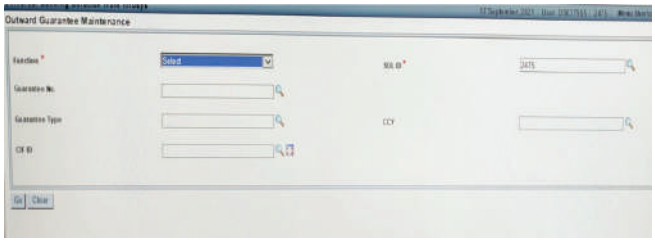

है, तो वह पत्र प्राप्त होते ही सिस्टम में उस गारंटी को तत्काल बंद कर देना चाहिए और बंद करने के उपरांत लाभार्थी को तत्काल इसकी सूची ई-मेल या पंजीकृत पोस्ट के माध्यम से भेज देना चाहिए.

3. यदि ऊपर दी हुई दोनों ही चीजें प्राप्त नहीं हुई, बैंक गारंटी भी नहीं मिली और डिस्चार्ज पत्र भी नहीं मिला, तो जैसे ही बैंक गारंटी की अवधि समाप्त हो, लाभार्थी को एक पंजीकृत पोस्ट द्वारा सूचित किया जाना चाहिए कि आपकी बैंक गारंटी की अवधि समाप्त हो चुकी है और अब आप इस

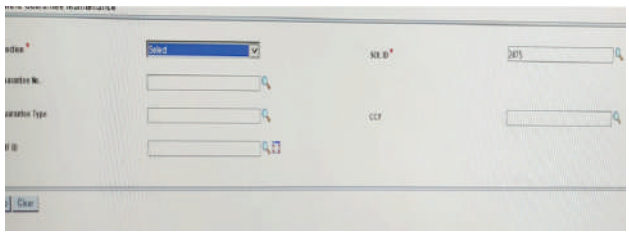

गारंटी को इन्वोक करने हेतु पात्र नहीं है. यदि लाभार्थी से इससे संबंधित कोई भी प्रत्युत्तर नहीं मिलता है तो शाखा को पहली सूचना की तारीख से 15 दिनों के बाद पुनः अनुस्मारक सूचना भेजनी चाहिए तथा दूसरी सूचना के बाद भी यदि कोई प्रतिउत्तर नहीं मिलता है तो पहली सूचना के 30 दिन बाद शाखा को सिस्टम में गारंटी को बंद कर देना चाहिए.

अन्तर्देशीय सरकारी बैंक गारंटी के संदर्भ में

सरकारी गारंटी के मामले में अगर बैंक गारंटी 18 जनवरी 2013 से पहले या 14 मई 2015 के बाद जारी की गई है तो बैंक गारंटी जारी करने वाली शाखा द्वारा लाभार्थी को ई-मेल और पंजीकृत पोस्ट से एक पत्र भेजा जाना चाहिए कि विधिवत डिस्चार्ज की गई मूल बैंक गारंटी की वापसी की मांग करते हुए यह उल्लेख किया जाए कि बैंक गारंटी के तहत दावा अवधि समाप्त हो गई हैं और अब लाभार्थी बैंक गारंटी इन्वोक करने हेतु पात्र नहीं हैं. यदि इस पत्र का कोई उत्तर प्राप्त नहीं होता है तो शाखा को पहले नोटिस से 15 दिनों की अवधि के बाद एक अनुस्मारक भेजना चाहिए. यदि दूसरे नोटिस का भी कोई उत्तर नहीं मिलता है तो शाखा को पहले नोटिस भेजने की तारीख से 30 दिनों की अवधि के बाद सिस्टम में बैंक गारंटी को बंद कर देना चाहिए.

ऐसी सरकारी गारंटी जो कि दिनांक 18 जनवरी 2013 और 14 मई 2015 के बीच जारी की गई है वहां कानूनी राय प्राप्त करने के लिए बैंक गारंटी की प्रति के साथ क्षेत्रीय कार्यालय या अंचल कार्यालय के विधि विभाग के साथ मिलकर मामले दर मामले आधार पर उन मामलों का विचार करना चाहिए. तदनुसार, कानूनी राय के अनुसार उक्त दावा अवधि की समाप्ति के बाद शाखा बैंक गारंटी को बंद कर सकती है.

विदेशी बैंक गारंटी के संदर्भ में

अन्तर्देशीय बैंक गारंटी में यदि विदेशी बैंक गारंटी बंद करने की बात करें तो उसमें बैंक गारंटी की अवधि समाप्त होने के तुरंत बाद शाखा को एडवाइजिंग लाभार्थी बैंक को स्विफ्ट मैसेज भेजना चाहिए जो कि निम्नानुसार होगी :

''आपको जारी की गयी बैंक गारंटी की अवधि समाप्त हो चुकी है और अभी तक हमें कोई भी क्लेम प्राप्त नहीं हुआ है क्योंकि अब इसकी वैधता समाप्त हो गई है इसीलिए अब आप इस बैंक गारंटी को इनवोक नहीं कर सकते हैं और हम इस बैंक गारंटी को अपने सिस्टम में बंद कर रहे हैं''

यदि लाभार्थी को बैंक से कोई भी पावती नहीं मिलती है तो शाखा को पहले स्विफ्ट संदेश के 7 दिनों के बाद अनुस्मारक भेजना चाहिए तथा दूसरे स्विफ्ट मैसेज के बाद भी यदि प्रत्युत्तर नहीं मिलता है तो शाखा को पहले संदेश के 15 दिनों के भीतर सिस्टम में गारंटी को बंद कर देना चाहिए.

इन पहलुओं का ध्यान रखते हुए शाखाएं ऐसी बैंक गारंटी जिनकी अवधि समाप्त हो गई है उससे संबंधित उचित कार्रवाई कर बैंक को नुकसान से बचा सकती हैं.

संदर्भ:

बीसीसी::बीआर::112/498 दिनांक 21.08.2020

बीसीसी::बीआर::113/424 दिनांक 19.07.2021

बेटी का पिता

पूजा शर्मा
शाखा प्रबंधक
खरोरा शाखा, रायपुर क्षेत्र

लंबे समय से गर्मी की तपिश से परेशान हम रायपुर वासियों के लिए आज की सुबह कुछ नयी सी थी क्योंकि सूरज चाचू आज थोड़े अच्छे मूड में थे. उनके थोड़े से ठंडे तेवर से प्रभावित मैं भी तमाम टार्गेट के दबाव के बावजूद थोड़ा खुशनुमा सा महसूस करते हुए अपने आज के टारगेट्स को पूरा करने का दुस्साहस करने का असफल प्रयास कर रही थी जो कि एक असंभव कार्य प्रतीत हो रहा था.

इसी व्यस्त माहौल में अचानक एक बुजुर्ग मेरी केबिन में दाखिल हुए. दुबले पतले अत्यंत साधारण कुछ मटमैले वस्त्रों में एक थैला हाथ में लिए उन बुजुर्ग की हालत दयनीय सी प्रतीत हो रही थी. मैंने उन्हें सामने रखी कुर्सी पर बैठने का इशारा किया.

उन्होंने एक एफडी मेरे हाथ में दी और उसके ब्याज की जानकारी मांगने लगे. मैंने समझाया इस एफडी का मासिक ब्याज आपके खाते में आता है. फिर उन्होंने दूसरी और तीसरी एफडी भी मुझे थमाई और उसके भी ब्याज के बारे में पूछने लगे. सभी की ब्याज राशि और परिपक्वता की तिथि वो एक पुरानी सी कॉपी में बड़े-बड़े अक्षरों में लिख रहे थे. लगभग 8 लाख की एफडी थी अर्थात् बुजुर्ग इतने भी दयनीय नहीं थे जितना प्रतीत हो रहे थे.

पेशे से बैंकर परंतु स्वभावत: पत्रकार मेरे हृदय में यह प्रश्न आया कि फिर इनकी दयनीय वेषभूषा का कारण क्या है ? जैसे मानो राधा-रानी ने मेरी इस जिज्ञासा को समझ लिया हो ...उनकी कृपा से तुरंत उन बुजुर्ग ने रुँधे स्वर में बताया उनकी 5 बेटियाँ हैं. सब अपने घर पर हैं. बाकी सब तो ठीक से हैं एक ही बेटी की जिंदगी में कुछ परेशानियाँ हैं (अपने स्वभाव के अनुरूप मैंने उनसे अधिक गहराई से कारण नहीं पूछा). उनकी बातों से समझ आया कि उनके दुख की वजह थी कि उनका कोई बेटा नहीं है और इसलिए वो इस उम्र में (उनकी उम्र लगभग 70-75 वर्ष रही होगी) भी अकेले ही सारी ज़िम्मेदारी उठा रहे हैं. कोई उनकी मदद करने वाला नहीं है. अब इस बेटी की परेशानी भी उन्हें ही अकेले संभालनी होगी.

कुछ समय पहले जिनकी दयनीय स्थिति पर मुझे दुख हो रहा था अब उनकी दयनीय सोच पर मुझे तरस आ रहा था. 5 बेटी के पिता थे इस बात का फ़क्र तो कहीं नहीं दिखा एक बेटा न होने का दुख उनके पूरे व्यक्तित्व पर नज़र आ रहा था. उन्होंने बताया कि उनके पास लगभग 15 एकड़ जमीन थी गाँव के वर्तमान प्रभावशील लोग कभी उनके अधीनस्थ थे किन्तु उन्हें औने-पौने दाम पर ज़मीन बेचनी पड़ी और अब उनके पास कुछ नहीं बचा.

अब उनकी इस स्थिति का सम्पूर्ण कारण मेरे समक्ष था. वो शुरू से ही बेटियों के होने के बोझ से दबे रहे. बेहतर ससुराल मिले इस आशा में सब कुछ दाव पर लगा दिया. सामाजिक दृष्टि से उन्होंने पिता के दायित्वों का निर्वहन किया किन्तु मेरी नज़र में वे एक जिम्मेदार पिता नहीं हैं. मेरे विचार

से एक पिता को अपनी औलाद की परवरिश ऐसे करनी चाहिए कि वो आत्मनिर्भर बन सके. अपनी व अपने परिवार कि ज़िम्मेदारी स्वयं उठाने में सक्षम हों. फिर चाहे वो बेटी हो या बेटा. अगर ये बुजुर्ग 5 बेटियों के होने के कारण नकारात्मक न होते और दहेज की चिंता के तले दबे न होते तो शायद आज इनकी स्थिति बेहतर होती. अगर बेटियों की शादी की चिंता से पहले वे उनके आत्मनिर्भर बनने की चिंता करते तो बेहतर होता. कम से कम आज उन्हें अपनी एक बेटी के बुरे हालात के लिए दुखी नहीं होना पड़ता क्योंकि वह इतनी सक्षम होतीं की अपनी परेशानियों को खुद संभाल सके. अगर उन्होंने अपनी बेटियों को उचित परवरिश दी होती तो शायद आज उन्हें यह नहीं कहना पड़ता कि इस उम्र में वो बेचारे अकेले ही सारी जिम्मेदारियाँ उठा रहे हैं क्योंकि उनके पास बेटा नहीं है. सही परवरिश से आज उनकी बेटी ही उनके बेटे के समान उनके जीवन के हर उतार चढ़ाव में उनके कंधे से कंधा मिलाकर उनका साथ देती.

इसलिए हमें चाहिए कि हम बेटा होने पर गौरवान्वित और बेटी होने पर कोसना छोड़ कर लिंग भेद से ऊपर उठकर उस नन्हें फरिश्ते को सिर्फ अपना बच्चा मानें. बच्चे के जन्म के समय का ये लिंग भेद ही उनके और हमारे भविष्य की नींव का पत्थर होता है. अत: हम सही तरह से एक मजबूत नींव का निर्माण करने का प्रयास करें. यह ना सोंचे कि बेटी है तो पराए घर जाएगी और बेटा है तो बुढ़ापे का सहारा बनेगा. (अगर ऐसा होता तो हमारे देश में इतने वृद्धाश्रम न होते). बेटा हो या बेटी दोनों को समान परवरिश दें. दोनों को आत्मनिर्भर बनाएं और दोनों को उच्च शिक्षा प्रदान कर अपना मार्ग चुनने की स्वतन्त्रता दें. सही संस्कार उन्हें यकीनन एक अच्छा इंसान बनाएगा और वो अपने परिवार तथा देश को गौरवान्वित करेंगी.

मुझे गर्व है अपने माता –पिता पर जिन्होंने कभी हम भाई बहनों में लिंग–भेद नहीं किया. हम बहनों को बेचारी, लाचार अबला न बनाकर आत्मनिर्भर बनाया.

जितना गर्व एक बेटे के पिता को होता है उससे कहीं अधिक गर्व मैंने उनकी आँखों में अपने लिए देखा है ..... और ऐसा इसलिए नहीं कि मैं इस काबिल हूं .....बल्कि ऐसा इसलिए है कि उन्होंने मुझे इस काबिल बनाया है.

***

एक दिन बाग में टहलते हुए
मुझ से गुलाब के फूल ने यह कहा

क्यों उदास रहते हो, मेरी तरह मुस्कुराते क्यों नहीं
मैंने जवाब दिया
डरता हूँ कि कहीं मुस्कुराने से मेरा भी
यही हाल न हो जो तुम्हारा होता है
इस पर गुलाब का फूल आश्चार्यचकित था
और बोला
ऐसा क्या होता है

मैंने जवाब दिया
जब तुम मुस्कुराए नहीं यानी कि
पूरी तरह खिलते नहीं हो तब तक ही तुम जी पाते हो
और जिस दिन तुम मुस्कुराना सीख जाते हो
तुम तोड़ लिए जाते हो
अगर कहीं बच गए तो
तुम्हारी मुस्कुराहट ही तुम्हारी दुश्मन बन जाती है
तुम टूट कर बिखर जाते हो
इसलिए मैंने तुमसे सीख लेकर मुस्कुराना ही छोड़ दिया
ताकि कहीं मेरा भी वही हाल न हो
जो तुम्हारा होता है क्योंकि मेरी मुस्कुराहट भी
किसी से देखी नहीं जाएगी
ज्यादा खुश नहीं होता ताकि कहीं ज्यादा खुशी मुझ से
बर्दाश्त न हुई तो टूट कर बिखर न जाऊं

विनोद कुमार बस्नौत्रा
वरिष्ठ प्रबंधक
लेखा परीक्षा और निरीक्षण विभाग
क्षेत्रीय कार्यालय, जलन्धर

भारतीय अर्थव्यवस्था में ई-भुगतान का योगदान

सुखनिन्द्र कौर गिल्ल
क्षेत्रीय कार्यालय, लुधियाना

कहते हैं कि ठहरा हुआ पानी और धन, दोनों ही हित की बजाय अहित करते हैं. इसी संदर्भ में ''लिक्विडिटी'' शब्द का जन्म हुआ. पानी तरल रूप में बहता रहे और धन की भी तरलता लगातार बनी रहे, यही शुभ है और लाभदायक भी. किसी भी तरह के विकास के प्रमुख घटकों में से एक घटक तरलता बहुत ही प्रमुख है. विशेषकर आर्थिक विकास के लिए.

हम सब जानते हैं कि आज के युग में बैंकिंग क्षेत्र कितना महत्त्वपूर्ण है. बैंकिंग हमारे आर्थिक विकास की रीढ़ है एक मजबूती है और एक बैंक ही है जो उपयुक्त तरलता के लिए भुगतान और निपटान प्रणाली का आधार बिन्दु है. किसी भी अर्थव्यवस्था में भुगतान प्रणाली की भूमिका वैसी ही होती है जैसी किसी भौगोलिक प्रदेश में मार्गों की.

जब हम भुगतान की बात करते हैं तो इसके बारे में क्या विचार आता है? रोजमर्रा के बिल जैसेः- विद्युत व फोन बिल, मकान, कार आदि के लिए गए ऋण का भुगतान, मकान किराया व क्रेडिट कार्ड, डेबिट कार्ड का मासिक भुगतान आदि. विश्व में भुगतान प्रणाली के क्षेत्र में और मुख्यतः इलेक्ट्रॉनिक व्यापार के क्षेत्र में हुए सतत् विकास एवं परिवर्तन कागजी लेन-देन पर आधारित भुगतान प्रणाली के स्थान पर इलेक्ट्रॉनिक माध्यम को बढ़ावा दिया जा रहा है. इसका एक मुख्य कारण रख रखाव में आसानी एवं इसका सुविधाजनक उपयोग है. इलेक्ट्रॉनिक डिलीवरी को ई-भुगतान यानी कि डिजिटल भुगतान भी कहा जाता है. ई-भुगतान प्रणाली के सभी माध्यमों जैसेः- ई-निधि अंतरण, ई-समाशोधन, क्रेडिट कार्ड, डेबिट कार्ड, स्मार्ट कार्ड आदि में ई-मुद्रा की संकल्पना को विगत कुछ वर्षो में गति मिली है.

पिछले कुछ वर्षों में बड़ी तादाद में लोगों ने ऑन-लाइन भुगतान और डिजिटल भुगतान को अपनाया है. किसी भी भुगतान के लिए ई-वॉलेट का इस्तेमाल किया जा रहा है. आज हर एक छोटे-बड़े व्यापार में ई-भुगतान का प्रयोग हो रहा है. विमुद्रीकरण के फैसले से ई-भुगतान करने वाली कंपनियां उभर कर सामने आई हैं. छोटी से लेकर बड़ी कंपनियों ने अपने-अपने ई-वॉलेट ऐप लांच किए हैं, जैसे कि पेटीएम, ऑक्सीजन वॉलेट फ्री-चार्ज, एयरटेल, मोवी-क्विक आदि. इन कम्पनियों के संस्थापकों और मुख्य अधिकारियों का मानना है कि सरकार का यह फैसला सही है और यह फैसला भारतीय अर्थव्यवस्था में एक नया दौर लाया है, जिस से हमारे देश की अर्थव्यवस्था और मजबूत होगी. इसके अतिरिक्त देश के बैंक -संस्थानों ने भी अपने ई-वॉलेट लांच किए हैं जैसेः-कि यूपीआई, ईवॉलेट, वी पे क्विक आदि और तो और भारत सरकार ने भी ई-भुगतान को बढ़ावा देने के लिए 'भीम' नामक ऐप को लांच किया. ई-भुगतान के जरिए जो लेन-देन होते हैं उसकी विस्तृत जानकारी आयकर विभाग के पास जाती है, जिससे हमारे देश का खजाना मजबूत होता है. प्राचीन युग से ही यह माना जाता है कि एक राष्ट्र तभी समृद्ध और सुसज्जित हो सकता है जब राष्ट्र में खाद्यान और खजानों की आपूर्ति में कमी न हो. जिसके लिए प्रत्येक नागरिक का निष्ठावान और ईमानदार होना अनिवार्य है यह तभी संभव है जब देश का प्रत्येक नागरिक अपनी आय और व्यय का संतुलित लेखा-जोखा सरकार को बताएगा. अतः एक कैशलेस लेन-देन ही इसका सरल उपाय है. तभी कोई राज्य या देश विकासशील से विकसित की ओर अग्रसर हो सकता है. पूर्व में देश की समस्या यह थी कि बड़े उद्योगपति से लेकर बड़े पूंजीपति दिन-ब-दिन अपनी जमापूंजी बढ़ाते जा रहे थे, जिसका लेखा-जोखा रखना एक चुनौती थी. इसका मुख्य कारण यह है कि सारे लेन-देन कैश में हो रहे थे. परिणामस्वरूप मंहगाई और गरीबी देश की अर्थव्यवस्था को प्रभावित कर रही थी. भारतीय अर्थव्यवस्था की सुदृढ़ता को सशक्तिकरण करने के लिए भारतीय खजानों का सदउपयोग तभी संभव है जब सम्पूर्ण भारत के नागरिक अपना लेन-देन कैश की बजाय पारदर्शी रूपी धन अर्थात् ई-भुगतान करें, जिससे हर लेन-देन में पारदर्शिता आ सके और देश में काले धन का कारोबार न हो ताकि भारतीय खजानों

में आवश्यकतापूर्ण खजानों की पूर्ति हो सके और भारतीय अर्थव्यवस्था सशक्त हो सके.

कहते हैं कि हर सिक्के के दो पहलू होते हैं. ई-भुगतान के फायदों के साथ-साथ कुछ नुकसान भी जुड़े हैं. यह कहना गलत नहीं होगा कि अगर संपूर्ण व्यवस्था ई-भुगतान पर निर्भर हो जाए तो इसका सीधा दुष्प्रभाव निम्न वर्गीय अर्थात आर्थिक रूप से अत्यंत पिछड़े लोगों के जन-जीवन पर पड़ेगा क्योंकि अगर देखा जाए तो भारत की कुल आबादी में से 30 से 40% लोग प्रतिदिन मजदूरी करके जीवनयापन करते हैं.

कम शिक्षित होने के साथ-साथ लोग तकनीकी ज्ञान की कमी की वजह से वह ई-भुगतान सर्विस का उपयोग नहीं कर पाते हैं और उनका जीवनयापन तथा लेन-देन कैश पर ही निर्भर है. इसके अतिरिक्त अगर सुरक्षा की बात की जाए तो ई-भुगतान का सीधा संपर्क इंटरनेट से जुड़ा हुआ है और आधुनिक युग में हैकिंग और सायबर अपराध इस प्रणाली को चुनौतियां दे रहे हैं. कभी-कभी हमारे द्वारा की गई भुगतान राशि इंटरनेट संपर्क टूटने से या धीमा होने की वजह से असफल हो जाती है जबकि राशि हमारे खाते से कट जाती है और पुनः उसे प्राप्त करने के लिए हमें इंतजार भी करना पड़ता है कभी-कभी तो हमें वस्तु के वास्तविक मूल्य से अधिक भुगतान करना पड़ता है और कई बार एक ही रकम दो या अधिक बार चुकता हो जाती है. फिर वापसी में समय लगता है.

अंततः अगर निष्कर्ष की बात करें तो ई-भुगतान सेवा भारतीय अर्थव्यवस्था को समृद्ध बनाने के लिए ठीक उसी प्रकार भूमिका निभा रही है जिस प्रकार एक पौधे को हरा-भरा रखने के लिए जलवायु और मिट्टी करती है. ई-भुगतान के साथ साथ ई-निधि अंतरण, ई-समाशोधन आदि में नागरिकों का भी बढ़-चढ़ कर सहयोग होना चाहिए. हर वर्ग के नागरिकों को यह संकल्प लेना होगा कि कोई भी लेन-देन अवैध न करें बल्कि ई-भुगतान का उपयोग करें जिससे एक सुसज्जित और संगठित राष्ट्र का निर्माण हो सके. जिस दिन यह प्रणाली संपूर्ण रूप से स्वीकार कर ली जाएगी उस दिन अमीरी और गरीबी के बीच का बहुत बड़ा फासला कम हो जाएगा. मंहगाई और बेरोजगारी की समस्या भी काफी हद तक दूर हो जाएगी. प्रसिद्ध अर्थशास्त्री चाणक्य के अनुसार, ''देश से ही नागरिक होता है, नागरिक से देश नहीं. इसलिए देश की अर्थव्यवस्था के हित के लिए प्रत्येक नागरिक का एक समान दायित्व होता है जिसके लिए प्रत्येक नागरिक को देश निर्माण में संपूर्ण सहयोग देना चाहिए. देश की रक्षा से बढकर कोई धर्म नहीं होता.''

प्रतियोगिताएं

'हिंदी निबंध लेखन तथा हिंदी व तेलुगू वाक प्रतियोगिता' का आयोजन

दिनांक 02 अगस्त, 2022 को क्षेत्रीय कार्यालय, विशाखापत्तनम द्वारा सेइंट जोसफ महिला महाविद्यालय की छात्राओं के लिए हिंदी निबंध लेखन तथा हिंदी व तेलुगू वाक प्रतियोगिता का आयोजन किया गया.

'आशुभाषण प्रतियोगिता' का आयोजन

दिनांक 25 मई, 2022 को श्री विनोवा भावे विद्यालय, राजकोट में क्षेत्रीय कार्यालय, राजकोट द्वारा हिंदी आशुभाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें 7वीं एवं 8वीं कक्षा के विद्यार्थियों ने भाग लिया.

प्रतियोगिताएं

'बॉब काव्यपाठ प्रतियोगिता' का आयोजन

दिनांक 10 मई, 2022 को क्षेत्रीय कार्यालय, फतेहपुर एवं अमौली शाखा के संयुक्त तत्वावधान में बलदेव गिरि पाठशाला, सरकारी स्कूल में बॉब काव्यपाठ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. इस प्रतियोगिता में कुल 75 छात्र-छात्राओं ने हिस्सा लिया.

'निबंध लेखन प्रतियोगिता' का आयोजन

दिनांक 03 मई, 2022 को हिसार क्षेत्र की धारूहेड़ा शाखा द्वारा रॉयल इंटरनेशनल पब्लिक स्कूल, अलवलपुर में 'बॉब निबंध लेखन प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया जिसमें 346 विद्यार्थियों ने प्रतिभागिता की.

'चित्रकला, निबंध लेखन एवं प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता' का आयोजन

दिनांक 07 जून, 2022 को अंचल कार्यालय, मंगलूरु द्वारा श्री कटील दुर्गा परमेश्वरी विद्यालय मंगलूरु में आयोजित चित्रकला, निबंध लेखन एवं प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया. इस अवसर पर विद्यार्थियों को फल वृक्ष के पौधे भी वितरित किए गए.

'चित्रकला प्रतियोगिता' का आयोजन

दिनांक 30 जून, 2022 को स्मृति नगर भिलाई शाखा, दुर्ग क्षेत्र द्वारा 'बंबल बी' स्कूल में विद्यार्थियों के लिए चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. उक्त प्रतियोगिता के विजेता प्रतिभागियों को दुर्ग क्षेत्र के उप क्षेत्रीय प्रमुख श्री सिद्धार्थ वर्मा के कर कमलों से सम्मानित किया गया.

'बैंकिंग संबंधी सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता' का आयोजन

दिनांक 07 जून, 2022 को क्षेत्रीय कार्यालय, नवसारी द्वारा श्री मन मंदिर ट्रस्ट द्वारा संचालित आई आई एच टी ट्रेनिंग सेंटर में बैंकिंग संबंधी सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. प्रतियोगिता के साथ-साथ सभी को वित्तीय साक्षारता के विषय में जानकारी प्रदान की गयी. प्रतियोगिता में कुल 52 छात्रों द्वारा सहभागिता की गयी. सभी विजेता छात्रों को पुरस्कृत किया गया.

'सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता' का आयोजन

दिनांक 13 अप्रैल, 2022 को भरूच क्षेत्र की दयादरा शाखा द्वारा स्थानीय स्कूल दयादरा उच्च माध्यिमक विद्यालय में 11वीं कक्षा के छात्र-छात्राओं के लिए सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया तथा विजयी छात्र-छात्राओं को उपहार से सम्मानित किया गया. इस अवसर पर दयादरा शाखा प्रमुख श्री धर्मेन्द्र कुमार एवं क्षेत्रीय कार्यालय के राजभाषा अधिकारी श्री कार्तिक कुमार उपस्थित रहे.

प्रतियोगिताएं

'प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता' का आयोजन

दिनांक 09 मई, 2022 को क्षेत्रीय कार्यालय, बड़ौदा शहर एवं अंचल कार्यालय, बड़ौदा द्वारा संयुक्त रूप से जवाहर नवोदय विद्यालय, साधी, वडोदरा में वित्तीय साक्षरता कार्यक्रम एवं प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. साथ ही विद्यार्थियों के लिए प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया. इस अवसर पर जिला अग्रणी प्रबन्धक श्री सूचित कुमार एवं श्री अमर साव, राजभाषा प्रभारी, अंचल कार्यालय उपस्थित रहे.

'हिन्दी आशुभाषण प्रतियोगिता' का आयोजन

दिनांक 28 जून, 2022 को आदर्श शाखा रणु द्वारा स्थानीय विद्यालय – रणु कन्याशाला विद्यालय में विद्यार्थियों के लिए हिन्दी आशुभाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. इस अवसर पर रणु शाखा के शाखा प्रमुख श्री मेहर चैतन्य, क्षेत्रीय कार्यालय के राजभाषा प्रभारी, श्री राजेश कुमार महतो एवं शाखा के अन्य स्टाफ सदस्यगण मौजूद थे. इस अवसर पर प्रथम 10 विजेता विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया गया.

'चित्रकला एवं निबंध लेखन प्रतियोगिता' का आयोजन

उडुपी क्षेत्र की कंबदकोणे शाखा द्वारा सरकारी पदवी पूर्व कॉलेज, कंबदकोणे के हाईस्कूल विभाग में चित्रकला एवं निबंध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. प्रतियोगिताओं में 42 बच्चों ने भाग लिया.

'चित्रकला प्रतियोगिता' का आयोजन

दिनांक 25 मई, 2022 को टाउन हॉल शाखा (मॉडल हिन्दी शाखा) अमृतसर द्वारा पी.बी.एन विद्यालय अमृतसर में बॉब चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें 40 विद्यार्थियों ने प्रतिभागिता की.

'बॉब चित्रकला प्रतियोगिता' का आयोजन

दिनांक 17 जून, 2022 को त्रिशूर क्षेत्र की रिनजालकुड़ा शाखा द्वारा लिट्टल फ्लावर कानवेंट के बच्चों के लिए बॉब चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें 40 बच्चों ने भाग लिया. सभी बच्चों को प्रतिभागिता प्रमाण पत्र प्रदान किया गया और पुरस्कार प्राप्त बच्चों को मुख्य प्रबंधक और प्राचार्य के कर कमलों से पुरस्कृत किया गया.

'निबंध प्रतियोगिता' का आयोजन

दिनांक 08 अप्रैल, 2022 को क्षेत्रीय कार्यालय, गुवाहाटी द्वारा संत विवेकानंद इंग्लिश स्कूल, मालीगांव में असम के प्रसिद्ध पर्व बिहू उत्सव पर निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. इस प्रतियोगिता में कक्षा 8 के 130 विद्यार्थियों ने भाग लिया. उक्त कार्यक्रम में शाखा प्रमुख श्री मनोज कुमार शर्मा ने अपने वक्तव्य में बैंक के डिजिटल उत्पादों के संबंध में जानकारी प्रदान की.

प्रतियोगिताएं

'चित्रकला व निबंध प्रतियोगिता' का आयोजन

दिनांक 19 अप्रैल, 2022 को अजमेर क्षेत्र द्वारा केंद्रीय विद्यालय, अजमेर में विद्यार्थियों के लिए चित्रकला व निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें कुल 65 विद्यार्थियों ने सहभागिता की.

'चित्रकला प्रतियोगिता' का आयोजन

दिनांक 16 अप्रैल, 2022 को उदयपुर क्षेत्र की तीतरडी शाखा द्वारा स्थानीय राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय फंदा में 5-7 कक्षा के छात्र-छात्राओं के लिए चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया.

'कल्पनाओं के रंग, बॉब वर्ल्ड के संग कार्टून एवं पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता' का आयोजन

जयपुर क्षेत्र द्वारा कालवाड़ रोड शाखा के सहयोग से किरण बाल भारती उच्च माध्यमिक विद्यालय, गोविन्दपुरा में 'कल्पनाओं के रंग, बॉब वर्ल्ड के संग' कार्टून एवं पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. इस प्रतियोगिता में 130 विद्यार्थियों ने भाग लिया.

'चित्रकला एवं पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता' का आयोजन

दिनांक 13 मई, 2022 को लुधियाना क्षेत्र की संगरूर मुख्य शाखा एवं गौशाला रोड संगरूर शाखा द्वारा आदर्श मॉडल सीनियर सेकंडरी स्कूल, संगरुर में बॉब चित्रकला एवं बॉब पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. इस दौरान शाखा प्रमुख श्री अजय मेहता एवं अन्य स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे.

'हिन्दी कहानी वाचन प्रतियोगिता' का आयोजन

दिनांक 25 मई, 2022 को क्षेत्रीय कार्यालय, जालन्धर द्वारा आर्य सीनियर सेकेन्डरी स्कूल, बस्ती गुजा, जालन्धर में कक्षा 6 से 8 तक के विद्यार्थियों हेतु हिन्दी कहानी वाचन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें 50 विद्यार्थियों द्वारा प्रतिभागिता की गई.

'चित्रकला प्रतियोगिता' का आयोजन

दिनांक 21 मई, 2022 को करनाल क्षेत्र की खोजकीपुर शाखा द्वारा डी. ए. वी पब्लिक स्कूल, अम्बाला छावनी में 'बॉब चित्रकला प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया जिसमें -82- विद्यार्थियों ने प्रतिभागिता की. इस अवसर पर वित्तीय साक्षरता कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया.

नराकास गतिविधियां

नराकास (बैंक), जालंधर के तत्वावधान में हिन्दी कार्यशाला का आयोजन

दिनांक 29 अप्रैल, 2022 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक), जालंधर के तत्वावधान में माइक्रोसॉफ्ट टीम के माध्यम से हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया. कार्यशाला में सदस्य सचिव श्रीमती सरिता ने सत्र लिया.

नराकास, कोच्चि के तत्वावधान में अंचल कार्यालय, एर्णाकुलम द्वारा तकनीकी कार्यशाला का आयोजन

दिनांक 23 जून, 2022 को नराकास, कोच्चि के तत्वावधान में अंचल कार्यालय, एर्णाकुलम द्वारा तकनीकी कार्यशाला का आयोजन किया गया. इस कार्यशाला का उद्घाटन श्री अनीश कुमार केशवन, क्षेत्रीय प्रबंधक, क्षेत्रीय कार्यालय, एर्णाकुलम ने किया.

नराकास, भोपाल के तत्वावधान में अंचल कार्यालय, भोपाल द्वारा ई संगोष्ठी का आयोजन

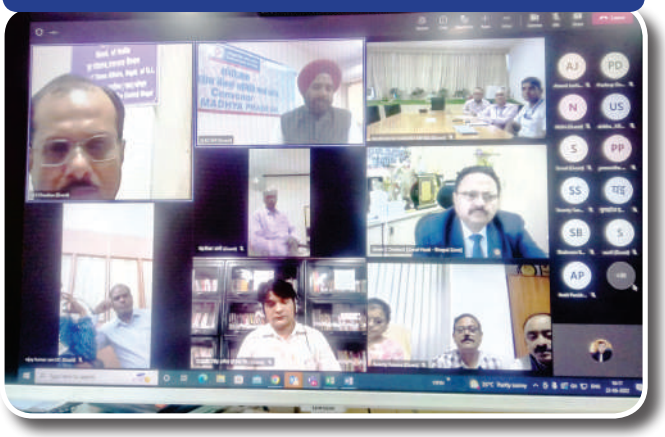

दिनांक 22 जून, 2022 को अंचल कार्यालय, भोपाल द्वारा महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख श्री गिरीश सी. डालाकोटी की अध्यक्षता में 'राजभाषा कार्यान्वयन को सहज-सरल बनाने में तकनीक की भूमिका' विषय पर ई संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें 44 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया. उक्त संगोष्ठी के दौरान मुख्य अतिथि सहायक निदेशक (कार्यान्वयन) एवं कार्यालयाध्यक्ष, भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (मध्य), भोपाल श्री हरीश सिंह चौहान ऑनलाईन माध्यम से उपस्थित रहे.

नराकास, पटना के तत्वावधान में अंचल कार्यालय, पटना द्वारा विचार गोष्ठी का आयोजन

नराकास, पटना के तत्वाधान में दिनांक 21 जुलाई, 2022 को बैंक ऑफ़ बड़ौदा के पटना अंचल प्रमुख श्री सोनाम टी भूटिया की अध्यक्षता में आजादी का अमृत महोत्सव के अवसर पर 'आजादी में भाषा और संस्कृति का योगदान' विषय पर एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया. इस कार्यक्रम में पंजाब नैशनल बैंक के डॉ. साकेत सहाय ने मुख्य वक्ता के रूप में अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया.

'सामर्थ्य' आधारित प्रशिक्षण कार्यक्रम

बैंक की राजभाषा टीम द्वारा एक नवोन्मेषी पहल के रूप में नवीनतम भाषा संबंधी तकनीकी सुविधाओं को शामिल करते हुए 'सामर्थ्य–भाषायी तकनीक संबंधी टूलकिट' को तैयार किया गया है. इस टूलकिट में डिजिटल रूप से हिंदी के उपयोग में सहायक नवीनतम तकनीकी माध्यमों की विस्तृत जनकारियों को शामिल किया है. इस टूलकिट को तैयार करने का उद्देश्य बैंक के स्टाफ सदस्यों को डिजिटल प्लेटफॉर्म पर हिंदी के उपयोग को सरल बनाना है. तदनुसार, इस टूलकिट के माध्यम से पिछली तिमाही में प्रत्येक अंचल के स्टाफ सदस्यों के लिए ऑनलाइन कार्यशाला के जरिए अंचलवार आवश्यक जानकारी दी गई. प्रस्तुत है विभिन्न अंचलों में आयोजित कार्यक्रमों की झलकियां:

–संपादक

अंचल कार्यालय, चैन्ने

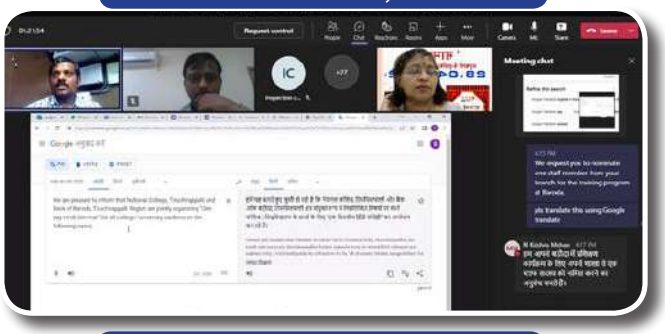

अंचल कार्यालय, बेंगलुरू

क्षेत्रीय कार्यालय, दुर्ग

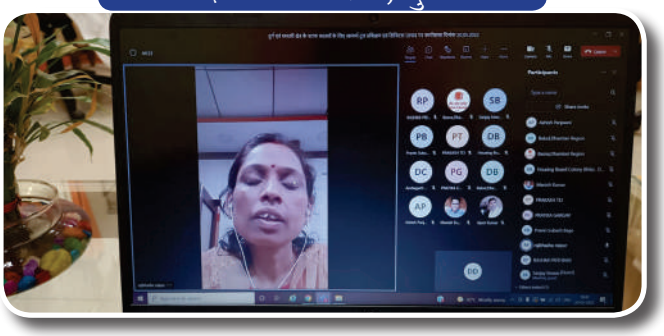

क्षेत्रीय कार्यालय, भरूच

क्षेत्रीय कार्यालय, जबलपुर

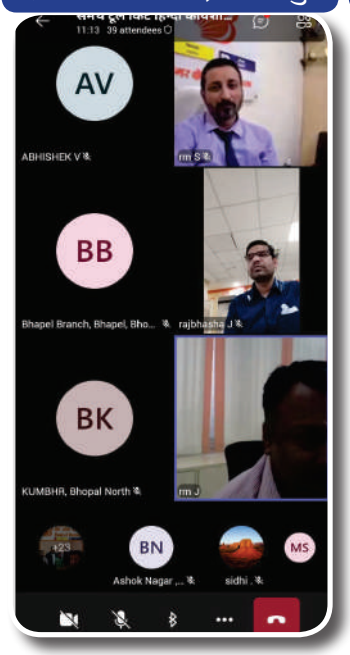

क्षेत्रीय कार्यालय, पश्चिमी दिल्ली

क्षेत्रीय कार्यालय, गुड़गांव

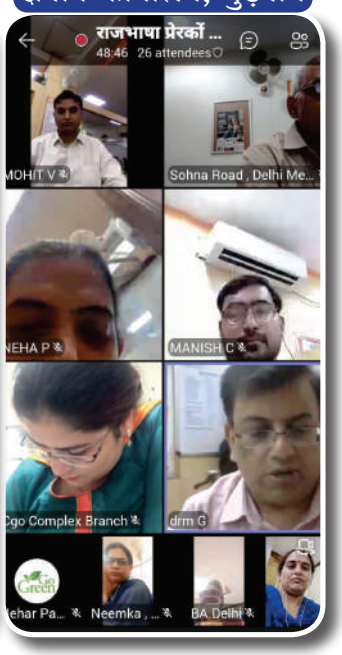

क्षेत्रीय कार्यालय, करनाल

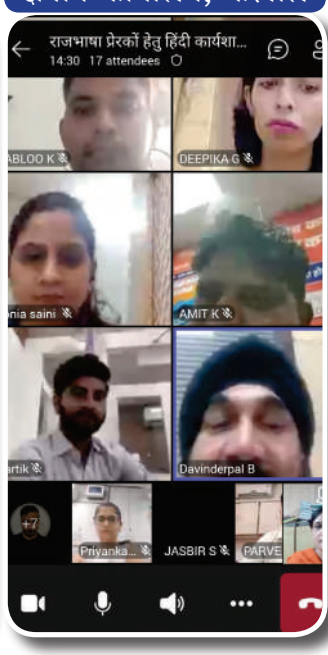

'सामर्थ्य' आधारित प्रशिक्षण कार्यक्रम

क्षेत्रीय कार्यालय, जलंधर

क्षेत्रीय कार्यालय, नागपुर

क्षेत्रीय कार्यालय, तेलंगाना उत्तर

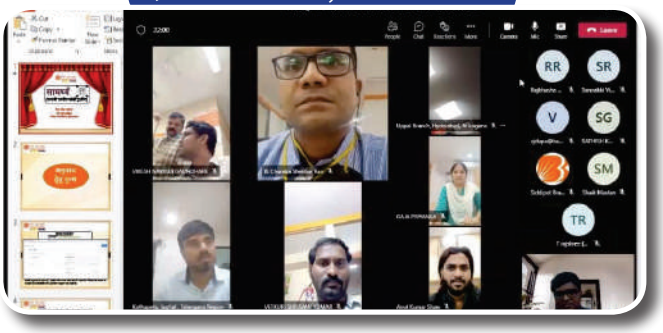

क्षेत्रीय कार्यालय, राजकोट

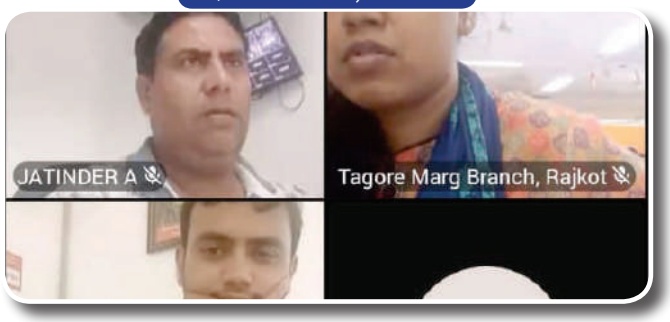

निरीक्षण

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप समिति द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय, हल्द्वानी का निरीक्षण दौरा

दिनांक 06 जून, 2022 को संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप समिति द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय, हल्द्वानी का राजभाषा विषयक निरीक्षण किया गया. इस निरीक्षण बैठक की अध्यक्षता माननीय सांसद डॉ. मनोज राजोरिया ने की. इस अवसर पर माननीय सांसद श्री दिनेश चंद्र यादव, सुश्री सरोज पाण्डेय, श्रीमती कांता कर्दम, डॉ. अमी याज्ञिक, श्री धर्मराज खटीक, समिति सचिवालय के पदाधिकारीगण, वित्त मंत्रालय, भारत सरकार के अधिकारीगण, मेरठ अंचल के महाप्रबंधक श्री अश्विनी कुमार, प्रधान कार्यालय, बड़ौदा से प्रमुख (राजभाषा एवं संसदीय समिति) श्री संजय सिंह, हल्द्वानी क्षेत्र से क्षेत्रीय प्रमुख श्री विपिन आर्य उपस्थित रहे.

जयपुर क्षेत्र की न्यू सांगानेर रोड शाखा का गृह मंत्रालय द्वारा निरीक्षण

दिनांक 19 अप्रैल, 2022 को जयपुर क्षेत्र की न्यू सांगानेर रोड शाखा का सहायक निदेशक, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार श्री नरेन्द्र मेहरा द्वारा राजभाषायी निरीक्षण किया गया. श्री मेहरा जी ने शाखा के राजभाषा कार्यान्वयन और पत्राचार से जुड़ी रिकॉर्ड पत्रावलियों का सूक्ष्म अवलोकन किया और शाखा के स्टाफ सदस्यों को मार्गदर्शन प्रदान किया.

बैंकिंग शब्द मंजूषा

Actuarysset-Backed Security (BS) आस्ति–आधारित प्रतिभूति

बंधक ऋण से इतर किसी भी ऋण के प्रतिभूतिकरण से सृजित आस्ति द्वारा समर्थित ऋण–प्रतिभूति (प्रतिभूतिकृत बंधक ऋण बंधक– आधारित प्रतिभूति अथवा संपार्श्विक बंधक दायित्व कहलाते हैं). आस्ति आधारित प्रतिभूति निर्गम की संरचना विशिष्ट होती है ताकि किसी निहित (अंडरलाइंग) उधारकर्ता के दिवालिया होने की स्थिति में प्रतिभूति के स्वामी द्वारा प्राप्त नकदी–प्रवाह पर कोई प्रभाव न पड़े.

Business facilitator व्यवसाय–सुलभकर्ता

बैंक–सुविधा रहित क्षेत्रों में बैंकिंग और वित्तीय सेवाएँ पहुँचाने के लिए बैकों और उस क्षेत्र में कार्य करनेवाली संस्थाओं के बीच एक कड़ी स्थापित करने के लिए व्यवसाय–सुलभकर्ता मॉडल तैयार किया गया है, जिसमें स्थानीय स्तर पर कार्यरत गैरसरकारी संगठन, किसान क्लब, डाक– एजेंट, बीमा एजेंट, पंचायत, ग्रामीण कियोस्क/ज्ञान केंद्र, बैंकों द्वारा वित्तपोषित एग्री–क्लिनिक / व्यवसाय केंद्र और केवीआइसी इकाइयाँ शामिल हैं. ये सभी बैंक और उपभोक्ताओं के बीच व्यवसाय–सुलभकर्ता के रूप में कार्य करते हैं और बैंकों को (क) उधारकर्ता की पहचान, (ख) उधार के आवेदनपत्रों को इकट्ठा कर प्रस्तुत करने, (ग) प्राथमिक तौर पर उनका मूल्यांकन करने, (घ) वित्तीय सेवाओं और उत्पादों के विपणन, (ङ) ऋण–स्वीकृति के बाद उस पर निगरानी रखने, (च) स्वयं सहायता समूहों के निर्माण और उनके विकास तथा (छ) वसूली पर निगरानी रखने में सहायता प्रदान करते हैं.

Credit squeeze ऋण–संकुचन

ऋण–संकुचन से तात्पर्य है कम मात्रा में ऋण का वितरण करना. जब बैंकों द्वारा अधिक ऋण दे दिया जाता है तो बाजार में मुद्रा की आपूर्ति बढ़ जाती है और नतीजतन वस्तुओं की माँग में इजाफा होता है, जिसका क्रमिक प्रभाव वस्तुओं की कीमतों पर पड़ता है और उनमें वृद्धिपरक रुख देखने को मिलता है. इन सबका परिणाम होता है अर्थव्यवस्था में मुद्रास्फीति की स्थिति पैदा हो जाना. ऐसी स्थिति न आने पाए इसके लिए केंद्रीय बैंक द्वारा साख–संकुचन की नीति अपनाई जाती है.

Leasehold mortgages पट्टेदारी बंधक

उधारकर्ता द्वारा पट्टे पर दी गई स्थावर संपत्ति में उधारदाता का संपार्श्विक हित. उदाहरणार्थ हो सकता है कि पट्टागत भूमि पर एक उधारकर्ता का अपना भवन हो. ऐसे मामले में ऋणदाता एक पट्टेदारी बंधक ले लेगा; जिसमें पट्टागत जमीन और इमारत, दोनों के उधारकर्ता के हितों को शामिल किया गया हो.

Negative amortization नकारात्मक ऋण– चुकौती

जब ऋण पर लगाए गए ब्याज की राशि चुकता की जाने वाली राशि से अधिक हो जाती है तो वह मूल ऋण में जुड़ती जाती है जिससे ऋण की शेष राशि में बढ़ोत्तरी हो जाती है. समायोजन–योग्य दर के मामले में यदि मासिक भुगतान मूल राशि और ब्याज की चुकौती करने में असमर्थ रहता है तो शेष रही राशि को मूल में जोड़ दिया जाता है. यह स्थिति तब सामने आती है जब ऋण–चुकौती उच्चतम सीमा पर होती है और साथ–साथ ऋण पर लगाई गई ब्याज दर भी बढ़ती जाती है.

Performance guarantee निष्पादन गारंटी

गारंटी के हिताधिकारी को तय राशि का भुगतान करने हेतु किसी बैंक की अप्रतिसंहरणीय गारंटी, जो तब लागू होती है जब संविदाकार संविदा के निबंधनों और शर्तों के अनुसार संविदा का निष्पादन करने में असफल रहता है.

Reference rate संदर्भ दर

एक ब्याज दर जिसका प्रयोग सूची–दर के रूप में किया जाता है. उदाहरण के लिए यदि एक ऋण द्वारा 6–माह लिबोर (LIBOR) से अधिक 50 आधार अंकों की दर से ब्याज का भुगतान किया जाता है तो संदर्भ दर 6–माह लिबोर होती है.

Running account credit चालू खाता उधार

किसी बैंक या अन्य लेनदार से किया गया व्यक्तिगत समझौता, जिसके द्वारा कोई व्यक्ति समय–समय पर ऋण ले सकता है बशर्ते निर्धारित उधार सीमा से अधिक न हो. किसी भी अवधि के दौरान दिए गए उधार पर ही ब्याज लगाया जाता है.

Straight-line depreciation मूल्य ह्रास की सीधी पद्धति

अचल परिसंपत्तियों के बही–मूल्य में आवधिक कटौतियाँ प्राप्त करने की एक विधि, जिसमें प्रत्येक आवधिक कटौती की राशि उतनी ही होती है जितनी उसी प्रकार की अन्य परिसंपत्ति के लिए कटौती की राशि होती है.

Young economy नवोदित अर्थव्यवस्था

नवोदित अर्थव्यवस्था या युवा अर्थव्यवस्था का तात्पर्य युवकों की अर्थव्यवस्था से है. समाज का एक बड़ा वर्ग, जिसमें निर्यातक, उद्यमी, वकील, डॉक्टर, सनदी लेखाकार, सॉफ्टवेयर इंजीनियर, बैंकर, व्यवसायी, फिल्म अभिनेता, खिलाड़ी आदि शामिल हैं, जो नवयुवक हैं. भारत एवं चीन जैसे देशों में ऐसी अर्थव्यवस्थाएँ उभरी हैं, जिनकी लालसा आमोद–प्रमोद एवं विलासिता वाली वस्तुओं में है तथा वे तड़क–भड़क वाली जिंदगी जीने के शौकीन हैं.

नराकास बैठक

नराकास, विजयवाड़ा की 9वीं छः माही बैठक का आयोजन

दिनांक 23 मई, 2022 को बैंक नराकास, विजयवाड़ा की 9वीं अर्द्ध-वार्षिक बैठक का आयोजन किया गया. बैठक की अध्यक्षता श्री एस आर टागोर, उप क्षेत्रीय प्रमुख द्वारा की गई. इस अवसर पर श्री नरेंद्र सिंह मेहरा, उप निदेशक (कार्यान्वयन) क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, बेंगलूर एवं प्रधान कार्यालय से श्री पुनीत कुमार मिश्र, सहायक महाप्रबंधक - (राजभाषा एवं संसदीय समिति) विशेष रूप से उपस्थित रहे.

नराकास, राजकोट की 22वीं अर्द्ध-वार्षिक बैठक का आयोजन

दिनांक 29 अप्रैल, 2022 को अंचल कार्यालय राजकोट के संयोजन में कार्यरत बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, राजकोट की 22वीं अर्द्ध-वार्षिक बैठक एवं पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया. बैठक की अध्यक्षता बैंक नराकास के अध्यक्ष, श्री विजय कुमार बसेठा द्वारा की गई. इस अवसर पर प्रधान कार्यालय से प्रमुख (राजभाषा एवं संसदीय समिति) श्री पुनित कुमार मिश्र भी विशेष रूप से उपस्थित रहे.

नराकास, भुज की 31वीं अर्द्ध-वार्षिक बैठक का आयोजन

दिनांक 17 जून, 2022 को नराकास, भुज की 31 वीं बैठक का आयोजन किया गया. बैठक की अध्यक्षता नराकास, भुज के अध्यक्ष श्री जगजीत कुमार द्वारा की गई. इस अवसर पर प्रधान कार्यालय, राजभाषा विभाग से सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा एवं संसदीय समिति) श्री पुनित कुमार मिश्र उपस्थित रहे.

नराकास, अलीराजपुर की अर्द्ध-वार्षिक बैठक का आयोजन

दिनांक 29 जून, 2022 को श्री सौरभ जैन, अग्रणी जिला प्रबंधक, अलीराजपुर की अध्यक्षता में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, अलीराजपुर की 8वीं अर्द्ध-वार्षिक बैठक का आयोजन किया गया. उक्त बैठक के दौरान क्षेत्रीय प्रमुख, रतलाम क्षेत्र श्री सुबोध इनामदार, तथा नराकास, अलीराजपुर के सदस्य कार्यालयों के स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे.

पुरस्कार एवं सम्मान

हल्द्वानी क्षेत्र द्वारा सम्मान समारोह का आयोजन

हल्द्वानी क्षेत्र द्वारा अंचल प्रमुख एवं महाप्रबंधक श्री अश्विनी कुमार एवं क्षेत्रीय प्रमुख श्री विपिन आर्य के कर कमलों से वित्तीय वर्ष 2021-22 के दौरान राजभाषा के क्षेत्र में किए गए श्रेष्ठ कार्यनिष्पादन हेतु शाखा प्रमुखों को सम्मानित किया गया.

अजमेर क्षेत्र द्वारा वार्षिक सम्मान समारोह का आयोजन

अजमेर क्षेत्र में आयोजित वार्षिक सम्मान समारोह 2021-22 में विभिन्न पैरामीटर्स में उत्कृष्ट कार्य करने वाली शाखाओं को दिनांक 25 अप्रैल, 2022 को सम्मानित किया गया. इसी क्रम में, शाखा स्तरीय राजभाषा रेटिंग प्रणाली के अंतर्गत राजभाषा कार्यान्वयन में उत्कृष्ट कार्य करने वाली श्रेष्ठ 3 शाखाओं को पुरस्कृत किया गया.

हिसार क्षेत्र द्वारा 'सम्मान समारोह कार्यक्रम' का आयोजन

दिनांक 23 जून, 2022 को हिसार क्षेत्र द्वारा महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख महोदय श्री विमल कुमार नेगी की अध्यक्षता में 'सम्मान समारोह कार्यक्रम' का आयोजन किया गया. इस अवसर पर शहरी, अर्द्ध शहरी एवं ग्रामीण श्रेणी में उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन करने वाली शाखाओं को वार्षिक राजभाषा शील्ड पुरस्कार, उत्कृष्ट राजभाषा प्रेरक पुरस्कार एवं एसएमएस एक्टिवेशन अभियान में बेहतरीन कार्यानिष्पादन करने हेतु बीसी सुपरवाइज़र सुश्री अनीता कुमारी को सम्मानित किया गया.

वेबिनार/ सेमिनार

अंचल कार्यालय, मंगलूरु

दिनांक 30 अप्रैल, 2022 को मंगलूरू अंचल द्वारा स्टाफ सदस्यों को 'वीडियो स्क्रिप्ट लेखन' विषय पर मार्गदर्शन देने के लिए हिन्दी वेबिनार का आयोजन किया गया. उक्त वेबिनर में डॉ. कल्पना प्रभु, हिंदी विभागाध्यक्ष केनरा कॉलेज, मंगलूरु ने सत्र लिया. वेबिनार में अंचल से कुल 42 प्रतिभागियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया.

अंचल कार्यालय, एर्णाकुलम

श्री शंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय, कालड़ी के सभी केंद्र के एम.ए. हिन्दी के छात्र -छात्राओं के लिए राजभाषा के क्षेत्र में रोजगार के अवसर विषय पर दिनांक 21 अप्रैल, 2022 को शाम 3.00 -5.00 बजे तक वेबिनार का आयोजन किया गया जिसमें ऑफलाइन और ऑनलाइन मोड पर 100 से ज्यादा अध्यापक और विद्यार्थियों ने भाग लिया.

आत्म अनुशासन और व्यक्तिगत सफलता

प्रकाशन: एस पी बुक्स
पेपरबैक कीमत: रु. 244

भावना सिन्हा
वरिष्ठ प्रबंधक
अनुपालन अधिकारी
बड़ौदा शहर ॥ क्षेत्र

ज्यादातर लोग सोचते हैं कि सफलता की कुंजी खुश किस्मती या प्रतिभा है, लेकिन बहुत से कामयाब लोग इससे भी सरल तरीके से सफल हुए हैं और वह तरीका है – ''आत्म – अनुशासन.''

ब्रायन ट्रेसी ने अपनी पुस्तक "NO EXCUSES! - The Power of Self Discipline" में आत्म – अनुशासन के इन्हीं छिपे रहस्यों की चर्चा की है. लेखक स्वयं भी इस बात के प्रमाण हैं. वे हाई स्कूल की पढ़ाई पूरी नहीं कर पाए और कई सालों तक मजदूरी करने के बाद भी अपने ''आत्म – अनुशासन'' की शक्ति द्वारा उन्होंने अपना जीवन बदल लिया और बिक्री, मार्केटिंग, निवेश, रियल – स्टेट डेवलपमेंट तथा मैनेजमेंट कंसल्टेशन आदि क्षेत्रों में सफलता हासिल की है और 45 पुस्तकें लिख चुके हैं.

आत्म अनुशासन

जिस प्रकार ''आत्म – अनुशासन'' सफलता की कुंजी है, उसी प्रकार इसका अभाव जीवन में असफलता, कुंठा, कमतर उपलब्धियाँ और दुख का प्रमुख कारण है. ''आत्म – अनुशासन'' को ''आत्म – दमन'' भी कहा जाता है. यानी हमें उन आसान खुशियों के प्रलोभन में नहीं पड़ना चाहिए, जिनके कारण बहुत सारे लोग राह से भटक जाते हैं. इसके बजाय हमें अनुशासित रहकर सिर्फ वे कार्य करने चाहिए, जो दीर्घकालीन और वर्तमान दोनों दृष्टि से उचित हो.

सौभाग्य से ''आत्म – अनुशासन'' की आदत डाली जा सकती है. इसके लिए स्वयं को सही समय पर जरूरी काम करने (चाहे वह काम हमें पसंद ना हो) के लिए अनुशासित करने का नियमित अभ्यास करना होगा. अपने मनचाहे व्यक्तित्व के लिए हमें जिस भी आदत की जरूरत हो उसे हम सीख सकते हैं. आवश्यकता चाहे जिस गुण की हो, हम आत्म – अनुशासन का अभ्यास करके उसमें उत्कृष्ट बन सकते हैं.

इस पुस्तक के 290 पृष्ठों में लेखक ने जीवन के उन महत्वपूर्ण 21 क्षेत्रों की विस्तार से चर्चा की है, जिसमें हम 'आत्म – अनुशासन' का अभ्यास करते हुए अपनी पूर्ण संभावना तक पहुंच जाएं और अपने लिए संभव हर चीज प्राप्त कर लें. लेखक ने 21 क्षेत्रों को 3 खंडों में विभाजित किया है तथा पढ़ने में सुविधा की दृष्टि से प्रत्येक खंडों को 7 अध्यायों में विभाजित किया है.

पहला खंड है: आत्म अनुशासन और व्यक्तिगत सफलता, इसके निम्न 7 अध्याय हैं :

1. आत्म – अनुशासन और सफलता
2. आत्म – अनुशासन और चरित्र
3. आत्म – अनुशासन और उत्तरदायित्व
4. आत्म – अनुशासन और लक्ष्य
5. आत्म – अनुशासन और व्यक्तिगत उत्कृष्टता
6. आत्म – अनुशासन और साहस
7. आत्म – अनुशासन और लगन

इन 7 अध्यायों में आपने यह बताया है कि व्यक्तिगत जीवन के हर क्षेत्र में आत्म – अनुशासन का अभ्यास करके अपनी संभावना या क्षमता तक कैसे पहुंच सकते हैं. इन

क्षेत्रों में लक्ष्य तय करना, चरित्र निर्माण करना, उत्तरदायित्व स्वीकार करना, साहस बढ़ाना और लगन तथा संकल्प द्वारा अपना हर काम पूरा करना शामिल हैं.

दूसरा खंड है: व्यवसाय बिक्री और आर्थिक क्षेत्रों में आत्म – अनुशासन, जिनके 7 निम्न अध्याय हैं;

1. आत्म – अनुशासन और काम धंधा
2. आत्म – अनुशासन और नेतृत्व
3. आत्म – अनुशासन और व्यवसाय
4. आत्म – अनुशासन और बिक्री
5. आत्म – अनुशासन और धन
6. आत्म – अनुशासन और समय प्रबंधन
7. आत्म – अनुशासन और समस्याएं सुलझाना.

व्यवसाय, बिक्री और आर्थिक क्षेत्र में अनुशासन के खंड 2 के इन सातों अध्याय में से एक बैंकर होने के नाते मैं इस खंड के अध्याय 9, 12, 13 एवं 14 को अपनी कार्यकुशलता को और अधिक बढ़ाने के लिए बेहद उपयोगी समझती हूँ और इन अध्यायों को "MUST READ CATEGORY" में रखना चाहूंगी.

अंतिम परंतु महत्वपूर्ण खंड 3 है, आत्म – अनुशासन और सुखी जीवन, इनके निम्न 7 अध्याय हैं:

1. आत्म – अनुशासन और खुशी
2. आत्म – अनुशासन और स्वास्थ्य
3. आत्म – अनुशासन और शारीरिक चुस्ती
4. आत्म – अनुशासन और वैवाहिक जीवन
5. आत्म – अनुशासन और बच्चे
6. आत्म – अनुशासन और मित्रता और आखिरी
7. आत्म – अनुशासन और मानसिक शांति

इस खंड में लेखक ने बताया है कि आत्म – अनुशासन के चमत्कार को अपने व्यक्तित्व जीवन में उतारना कैसे संभव हो पाता है. आप खुशी, स्वास्थ्य, चुस्ती – फुर्ती, वैवाहिक जीवन, बच्चों, मित्रता और मानसिक शांति आदि क्षेत्रों में अनुशासन का अभ्यास करके इसमें पूर्ण सफलता पा सकते हैं. इस खंड का अत्यधिक महत्व इसलिए भी है क्योंकि जीवन में आगे बढ़ने के रास्ते में हम इतने खो जाते हैं कि खुद को और अपने रिश्तों को "TAKEN AS GRANTED" समझने की भूल करते हैं. ज़िंदगी की आपाधापी में न तो अपने स्वास्थ्य का ख्याल रखते हैं और न ही अपनों को समय दे पाते हैं. यह खंड हमें हमारी पूर्णता का अहसास दिलाती है, क्योंकि सफलता का जश्न तो अपनों के साथ ही मनाया जा सकता है.

यह पुस्तक किसे पढ़नी चाहिए?

यह पुस्तक उन महत्वाकांक्षी और संकल्पवान लोगों के लिए लिखी गई है, जो जीवन में अपने लिए हर संभव चीज प्राप्त करना चाहते हैं. यह उन लोगों के लिए भी लिखी गई है, जिनमें वर्तमान से अधिक कार्य करने, अधिक चीजें पाने की और अधिक सफल होने की भूख है. दरअसल संकल्पवान लोगों को यह पता है कि अनुशासन न होने पर हम बहाने बनाते हैं और अपनी राह में खुद बाधक बन जाते हैं. महत्वाकांक्षी व्यक्ति यह मानते हैं कि आत्म – अनुशासन का विकास सफलता का वह राजमार्ग है, जिससे हर चीज संभव हो जाती है. यह पुस्तक आपको श्रेष्ठ बनने और उपलब्धियां प्राप्त करने का कदम दर कदम मार्ग दर्शन देगी. आत्म – अनुशासन व्यक्तिगत महानता की कुंजी है. यह वह जादुई गुण है, जो आपके लिए हर द्वार खोल देता है और हर चीज को संभव बना देता है.

आत्म – अनुशासन होने पर सामान्य व्यक्ति भी शिखर तक पहुंच जाता है और ज्यादा तेज तरक्की कर सकता है, दूसरी ओर आत्म – अनुशासन न होने पर प्रतिभाशाली व्यक्ति भी नाकाम रहता है. अनुशासनहीन व्यक्ति कभी भी सामान्य से ऊपर नहीं उठ सकता भले ही वह संपन्न परिवार में पैदा हुआ हो, वह शिक्षित हो और उसे हर प्रकार के अवसरों का वरदान मिला हो.

इस पुस्तक के 21 अध्याय आपको जीवन के किसी विशेष पहलू में ज्यादा अनुशासित होने का रास्ता बताते है. हर अध्याय के अंत में अभ्यास दिया गया है ताकि आप *''कोई बहाना नहीं की नीति''* को अपने जीवन में उतार सकें. इसलिए बहाने बनाना छोड़ दें और समय निकालकर पुस्तक अवश्य पढ़ें.

अपने ज्ञान को परखिए उत्तर (पृष्ठ सं. 49)

1.	ख	8.	ख	15.	ख
2.	ख	9.	क	16.	ख
3.	ग	10.	ग	17.	ग
4.	क	11.	घ	18.	ख
5.	ग	12.	ग	19.	घ
6.	ग	13.	घ	20.	ख
7.	क	14.	ख		

डिजिटल उत्पादों का उपयोग- कितना सार्थक

चिन्नी सुहासिनी
प्रबंधक,
क्षेत्रीय कार्यालय,
विशाखापट्टनम

आज कल की भागदौड़ भरी जिन्दगी, समयाभाव, व्यस्तता, काम का बोझ उस पर कोविड-19 की महामारी ने सभी के जीवन को बड़ा प्रभावित किया है. आज जीवन के हर क्षेत्र में भौतिक और वर्चुअल रूप दोनों का असर काफी पड़ा है. या यूं कहें कि आज पूरे विश्व का झुकाव डिजिटल की तरफ अधिक है. डिजिटलीकरण के इस युग में कोई वर्ग भी पीछे नहीं है. आज कंपनियां नयी-नयी तकनीक को अपना कर अपने उत्पादों को डिजिटल के माध्यम से ग्राहकों तक पहुंचा रही हैं. घर बैठे ग्राहक डिजिटल के माध्यम से अपनी जरुरत की हर एक वस्तु को आसानी से पा सकता है. कोविड की इस महामारी की स्थिति में तो प्रसिद्ध तीर्थ स्थलों में पूजा-पाठ और दर्शन तक को डिजिटल रूप से करने में मजबूर कर दिया. इतना ही नहीं शादी-व्याह, समारोह जैसे आयोजन भी डिजिटल हो गए. ऐसी स्थितियों में हमें डिजिटल उत्पादों पर निर्भर होना पड़ रहा है.

आज की डिजिटल वर्चुअल की दुनिया में ढेरों ऐप्स उपलब्ध हैं. हर एक उत्पाद के अलग-अलग विभिन्न प्रकार की ऑनलाइन शॉपिंग की सुविधाएं भी मौजूद हैं. व्यापारियों में होड़ लगी हुई है कैसे ग्राहकों को लुभाएं और इसी होड़ में कंपनियां ग्राहकों को अपने उत्पादों में भारी छूट देने और कम दाम पर भी उपलब्ध करवाने से नहीं हिचकती हैं. रोजमर्रा की वस्तुएं, कपड़े, फैशन की वस्तुएं, कीमती वस्तुएं, फर्नीचर, आभूषण, जूते-चप्पल, दवाइयां, मोबाइल फोन, कंप्यूटर-टीवी जैसे इलेक्ट्रॉनिक वस्तुएं, टिकट बुकिंग, बिल भुगतान, फोन रिचार्ज, ई-पुस्तकें, विभिन्न भाषाओं की फिल्में-सीरियल और भी बहुत कुछ ऑनलाइन पर उपलब्ध हैं. एक जमाना था लोग स्वयं दुकान जा कर वस्तुओं को देख-परख कर, उसके मूल्य को आंक कर पूरी तरह से संतुष्ट होने पर ही खरीदते थे, किन्तु अब की स्थिति उसके पूरे विपरीत है. डिजिटल उत्पादों की गुणवत्ता, मूल्य और टिकाऊपन को जानना उतना आसान नहीं होता फिर भी लोग उन वस्तुओं की खरीदारी करते हैं. पहले लोग आवश्यकता के अनुसार वस्तुओं की खरीदारी करते थे परंतु अब कम दर पर या डिस्काउंट सेल के चक्कर में जरुरत न हो तो भी वस्तुएं खरीदने लगते हैं. आज के समय में जहां लोगों की पसंद हर क्षण बदलती है वहां ऑनलाइन उत्पादों और उसके विपणन के तरीके भी बदलने लगे हैं जहां लोगों की पसंद के अनुसार वस्तुएं उपलब्ध कराई जाती हैं.

डिजिटलीकरण के इस दौड़ में बैंक भी अछूते नहीं रहे हैं. राष्ट्रीयकृत बैंक हो या निजी क्षेत्र के बैंक सभी अपने बैंकिंग उत्पादनों को ऑनलाइन मुहैया करा रहे हैं. चुटकियों में ग्राहक

अपनी बैंकिंग जरुरतों को घर बैठे डिजिटल बैंकिंग के माध्यम से पूरा कर सकता है. इसी दिशा में डिटिजल भुगतान के क्षेत्र में भी काफी विकास हुआ है. आज डिजिटल भुगतान के कई ऐप्स उपलब्ध हैं. ग्राहक अपनी सुविधानुसार किसी भी भुगतान में ऐप्स का उपयोग करने लगे हैं.

भारत सरकार के डिजिटल भारत कार्यक्रम से भारत जैसे देश को जिसमे ज्यादा संख्या में ग्रामीण क्षेत्र का विस्तार है उसमें भी डिजिटलीकरण का प्रसार बहुत ही तेजी से हुआ है. यही नहीं नकदी रहित लेनदेन वाला समाज गठित करने का सपना भी साकार हुआ. आज के दौर में हर एक व्यक्ति डिजिटल दुनिया से किसी न किसी रुप में जुड़ा हुआ है.

डिजिटलीकरण ने व्यवसायी और ग्राहक दोनों को अत्यधिक सुविधा के साथ काम करने हेतु सक्षम बनाया है. लोग अपने व्यवसाय के उत्पादों एवं सेवाओं की बिक्री को बिना बाजार में गए बढ़ाने में सक्षम हुए हैं. स्थिति ऐसी है कि कुछ भी गूगल करो और वो पाओ जो आप चाहते हैं. डिजिटल उत्पादों की उपलब्धता से लोगों की समय की बचत होती है, पैसा बचता है. डिजिटल उत्पादों से बेहतर परिणाम कम खर्चे और कम समय से प्राप्त होता है. एक समय था जब उत्पाद या सेवा वस्तु-विनिमय के माध्यम से बिकता था और आज डिजिटल उत्पादों की उपलब्धता इंटरनेट के माध्यम से ऑनलाइन मौजूद है. यह एक ऐसा माध्यम है जिसके कारण विक्रेता और ग्राहक के बीच नियमित लेनदेन, खरीददारी कायम रहती है. डिजिटल उत्पादों की उपलब्धता से वस्तुओं की बिक्री समय से पहले होने लगी है. जबकि एक समय ऐसा था जब यही वस्तुएं दुकानों में गोदामों में बहुत दिनों तक रखी रहती थीं. अपने उत्पादों को बेचने के लिए ऑफलाइन विज्ञापनों की मदद लेनी पड़ती थी जो बहुत महंगा होता था और कम लोगों तक ही विज्ञापन पहुंच पाता था. इन दिनों स्थिति में काफी परिवर्तन आया है, विभिन्न सर्च इंजन जैसे गूगल, फेसबुक, यूट्यूब इत्यादि के माध्यम से एक क्षण में लोगों तक पहुंच जाता है. ऑनलाइन के माध्यम से इन उत्पादों को सही लोगों तक सही समय में पहुंचा दिया जाता है और इसके बदले भुगतान भी ऑनलाइन किया जाता है. डिजिटल स्रोतों से सारा काम आसानी से हो जाता है.

यही नहीं उत्पाद या वस्तु पसंद न आने पर पैसे वापस करना, सुविधाजनक रुप से वस्तु का प्रतिस्थापन्न या वापसी, बदले में और भी अच्छा माल उपलब्ध करवाने के आसान तरीके देते हुए ग्राहकों को बांधे रखने में सक्षम है, यही है डिजिटल उत्पादों की दुनिया. आखों से अपनी पसंद की वर्चुअल वस्तु देखो और खरीदो. आधुनिकीकरण के इस दौर में लोगों को सही समय पर सही जानकारी के साथ सही उत्पाद और सेवाएं मिल रही हैं.

डिजिटल उत्पादों की उपलब्धता कम लागत वाला और समय बचाने वाला एक ऐसा स्रोत है जिसकी मदद से व्यापार को बढ़ाया जा सकता है. ये विक्रेता और ग्राहक के बीच बेहतर और प्रत्यक्ष सामंजस्य बनाये रखता है. विक्रेता नैतिकता से ग्राहकों का भरोसा जीतने में सफल हो पाया है. वो इस कोशिश में रहते हैं कि अपने क्लाइंट्स को अच्छी सेवा प्रदान कर सकें ताकि उनके ग्राहक लम्बे समय तक उनसे जुड़े रहें. ग्राहक ऑनलाइन रूप में ही कंपनियों के विज्ञापन देखते हैं और उत्पाद खरीदते हैं.

आज के परिवेश में डिजिटल उत्पादों का क्रय-विक्रय, डिटिजल लेन-देन, डिजिटल भुगतान आदि का उपयोग और उपलब्धता सार्थक ही नहीं अपितु समय की मांग है और अनिवार्य भी है अतः इसकी सार्थकता खुद बखुद प्रकट होने लगी है. आवश्यकता है तो नैतिकता, विश्वसनीयता की. ताकि कोई किसी के भरोसे को न तोड़े और जालसाजी या धोखाधड़ी न करे. उपभोक्ताओं के ज्यादा जागरूक होते हुए डिजिटल उत्पादों को प्राप्त करना होगा ताकि किसी प्रकार के मायाजाल या धोखे का शिकार न हो पाएं. जागो ग्राहक जागो के नारे को सार्थक करते हुए खुद ग्राहक अपनी सूझबूझ से डिजिटल उत्पादों के उपयोग को सार्थक कर सकता है भले ही किसी भी क्षेत्र विशेष की ऑनलाइन प्रक्रिया हो.

***

अपने ज्ञान को परखिए

1. वर्ष 2022 की हेनले पासपोर्ट इंडेक्स में भारतीय पासपोर्ट को कौन सा स्थान मिला है?
   (क) 81वां (ख) 87वां
   (ग) 97वां (घ) 99वां
2. किस राज्य में भारत की पहली 'डिजिटल लोक अदालत' लॉन्च की गई है?
   (क) पंजाब (ख) राजस्थान
   (ग) केरल (घ) उत्तरप्रदेश
3. प्रतिवर्ष पूरे भारत में राष्ट्रीय ध्वज दिवस (National Flag Day) कब मनाया जाता है?
   (क) 19 जुलाई को (ख) 21 जुलाई को
   (ग) 22 जुलाई को (घ) 24 जुलाई को
4. किस भारतीय बैडमिंटन खिलाड़ी ने सिंगापुर ओपन (Singapore Open) 2022 में महिला एकल का ख़िताब जीता है?
   (क) पीवी सिंधु (ख) साएना कावाकामी
   (ग) वांग जी यी (घ) हॉन यू
5. मानसून शब्द की व्युत्पत्ति किस भाषा से हुई है?
   (क) स्पेनिश (ख) हिंदी
   (ग) अरबी (घ) आंग्ल
6. भारत के किस राज्य में दुनिया का पहला लिक्विड मिरर टेलीस्कोप स्थापित किया गया है?
   (क) झारखण्ड (ख) बिहार
   (ग) उत्तराखंड (घ) हरियाणा
7. मेट्रोपोलिटन नगरो में प्रदूषण का प्रमुख स्रोत क्या है?
   (क) स्वत चालित वाहन (ख) रेडियोधर्मी पादप
   (ग) उद्योग (घ) कीटनाशक
8. इंडिया पोस्ट की इन सेवाओं में से किस एक को स्थायी रूप से बंद कर दिया गया है?
   (क) मनीआर्डर (ख) तार
   (ग) डाक जीवन बीमा (घ) अंतर्देशीय पत्र
9. किस राज्य में भारत के पहले अमृत सरोवर का उद्घाटन किया गया है?
   (क) उत्तरप्रदेश (ख) पंजाब
   (ग) राजस्थान (घ) हरियाणा
10. किसके प्रतीक चिन्ह में बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय अंकित है?
    (क) दूरदर्शन (ख) भारत संचार निगम लिमिटेड
    (ग) आकाशवाणी (घ) भारतीय जीवन बीमा निगम
11. किस भारतीय पत्रकार को मरणोपरांत पुलित्जर पुरस्कार – 2022 मिला है?
    (क) रोहित सरदाना (ख) राधाकृष्ण मुरलीधर
    (ग) अंजन बंदोप्ध्याय (घ) दानिश सिद्दिकी
12. निम्नलिखित में से कौन माउंट कंचनगंगा को फतह करने वाली पहली भारतीय महिला बनी है?
    (क) दीप्ती सिन्हा (ख) गीता सामोता
    (ग) प्रियंका मोहिते (घ) कमला बिश्नोई
13. किस राज्य की सरकार ने जेल में बंद कैदियों के लिए जिवहाला नामक ऋण योजना शुरू की है?
    (क) राजस्थान (ख) छत्तीसगढ़
    (ग) उत्तराखंड (घ) महाराष्ट्र
14. भारतीय सांख्यिकी संस्थान (ISO) कहाँ स्थित है?
    (क) चेन्नई (ख) कोलकाता
    (ग) मुंबई (घ) चंडीगढ़
15. हाथी मैराथन निम्नलिखित में से किस शहर में आयोजित होता है?
    (क) कोहिमा (ख) त्रिचुर
    (ग) गंगटोक (घ) मंगलूर
16. निम्नलिखित में से कौन सी झील भारत के पश्चिमी तट पर स्थित है?
    (क) चिल्का (ख) अष्टमुदी
    (ग) पुलिकट (घ) कोल्लेरू
17. किस शहर में 'रेडियो अक्ष' नाम से नेत्रहीनों के लिए भारत का पहला रेडियो चैनल लांच हुआ है?
    (क) जोधपुर (ख) चंडीगढ़
    (ग) नागपुर (घ) बेंगलूरू
18. किस प्रथम भारतीय क्रिकेटर के नाम पर इंग्लैंड में किसी क्रिकेट स्टेडियम का नाम रखा गया है?
    (क) सचिन तेंदुलकर (ख) सुनील गावस्कर
    (ग) कपिल देव (घ) सौरव गांगुली
19. नीलगिरी के पर्वतीय क्षेत्र में कौन सा जलप्रपात स्थित है?
    (क) जोग (ख) येन्ना
    (ग) धुआंधार (घ) पायकारा
20. निम्नलिखित में से कौन सा कार्बन का एक रूप नहीं है?
    (क) काजल (ख) हेमाटाईट
    (ग) ग्रेफाईट (घ) चारकोल

(उत्तर के लिए पेज नं. 46 देखें)

चित्र बोलता है.

1

नि:शब्द यात्रा पर पतित पावनी,
शान्त पवन, विहंगम का शोर,
मैं कूल पर खड़ी अचंभित,
मुझे दिशा मिलेगी किस ओर.

त्रिलोकी नाथ पाण्डेय
परिचालन एवं सेवाएं विभाग
क्षेत्रीय कार्यालय, जमशेदपुर

2

ढलता सूरज बहता पानी,
हमें सुनाती एक कहानी
चाहे कितनी भी हो परेशानी,
चलती जानी है जिन्दगानी.

जहानुमा दरगाहवाला
लिपिक
अंचल कार्यालय, अहमदाबाद

3

नई उमंग नई तरंग,
लेकर सूर्य फिर आया है.
अंधेरों से लड़कर जिसने,
हमको जीना सिखाया है.

– श्री संजय पंवार
प्रबंधक
अंचल कार्यालय, अहमदाबाद

नदियों के मोहक घाटों पर,
जीवन का मेला लगता है.
जीवनयापन का है सहारा,
जल की बहती अविरल धारा.

– शाकिर अली
शहडोल शाखा

प्रथम तीन विजेताओं को पुरस्कार स्वरूप रू. 500 का गिफ्ट कार्ड / राशि दी जा रही है

'चित्र बोलता है' के स्थायी स्तंभ के अंतर्गत जनवरी-मार्च, 2022 अंक में प्रकाशित चित्र पर पाठकों से काफी उत्साहवर्धक प्रतिक्रियाएं/रचनाएं प्राप्त हुई हैं. पाठकों से अनुरोध है कि इस शृंखला में प्रकाशित इस चित्र पर आधारित अपने विचार पद्य के रूप में हमें अधिकतम चार पंक्तियों में लिख कर भेजें. श्रेष्ठ तीन रचनाओं को पुरस्कृत (प्रत्येक को रू. 500/-) किया जाएगा और उन्हें हम 'अक्षय्यम्' के आगामी अंक में भी प्रकाशित करेंगे. पाठक अपने विचार हमें डाक से या ई-मेल पर अपने व्यक्तिगत विवरण और स्वरचित घोषणा सहित 15 अक्तूबर, 2022 तक भेज सकते हैं.

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप समिति द्वारा देहरादून क्षेत्र की रुद्रप्रयाग शाखा का निरीक्षण दौरा

दिनांक 17 मई, 2022 को संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप समिति द्वारा देहरादून क्षेत्र की रुद्रप्रयाग शाखा का राजभाषा विषयक निरीक्षण किया गया. इस निरीक्षण बैठक की अध्यक्षता माननीय सांसद डॉ. मनोज राजोरिया ने की. इस अवसर पर माननीय सांसदगण श्री प्रताप राव जाधव, डॉ. अमी याज्ञिक, समिति सचिवालय के पदाधिकारीगण, वित्त मंत्रालय, भारत सरकार के अधिकारीगण, मेरठ अंचल के महाप्रबंधक श्री अश्विनी कुमार, प्रधान कार्यालय, बड़ौदा से प्रमुख (राजभाषा एवं संसदीय समिति) श्री संजय सिंह, देहरादून क्षेत्र से क्षेत्रीय प्रमुख श्री अनूप शर्मा, शाखा प्रमुख, रुद्रप्रयाग शाखा श्री सूर्यकांत तनालिया उपस्थित रहे.

चण्डीगढ़ अंचल में नवगठित पुस्तकालय का उद्घाटन

दिनांक 13 जून, 2022 को कार्यपालक निदेशक श्री अजय के. खुराना द्वारा चण्डीगढ़ अंचल कार्यालय के नवगठित पुस्तकालय का उद्घाटन किया गया. इस अवसर पर मुख्य महाप्रबंधक श्री जे. एन. चोपड़ा, अंचल प्रमुख श्री विमल कुमार नेगी, उप अंचल प्रमुख श्री सुरेश गजेंद्रन, अंचलाधीन क्षेत्रों के क्षेत्रीय प्रमुख, उप क्षेत्रीय प्रमुख, अन्य कार्यपालकगण व स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे.

ସାହସ ହେଉ ମୋହର ସାଥୀ ହେ

ଦୁଃଖ ଦେଲେ ମାଆଟି ମୋର ଦୁଃଖ ନାହିଁ,
ଭୋକ ଦେଲେ ମୋହରି ଦେଉ ।ଦ।
ଦିନ-ରାତି ଦିଅଁଥାଉ ମୋତେ
ଦୁଃଖି ଭାଇମାନେ ପୁଣି ଦୁଃଖି ନୋହେ,
ଦାରିଦ୍ରତାରେ ଯେ ଜୀବନ
ଦୁଃଖି ଦୁଃଖୀମାନେ ଦେଉ ।ଦ,
ଦୁଃଖ ଦେଲେ ମାଆଟି ଦେଉ ।ଦ।

ଦୁଃଖ ମୋହରାରେ ନ ଦେଲି ମୋତେ
ଦୁଃଖ-ଦାନ୍ତ ନ ଦେଖାଏ ଦୁଃଖ,
ଦୁଃଖି ଦୁଃଖୀର ଦୁଃଖ ଦୁଃଖରେ ଦି
ଦୁଃଖରେ ଦୁଃଖି ନ ଦୁଃଖ-ଦୁଃଖ ନ
ଦୁଃଖ ମୋ ଦୁଃଖ ନ ଦୁଃଖି ନ ଦୁଃଖୁ ନ
ମୋର -ଦୁଃଖୁମୋର-ଦୁଃଖୁ ଦୁଃଖିନ
ଦୁଃଖି ଦୁଃଖି ମୋହରି ଦେଉ ।ଦ।
ଦୁଃଖ ଦୁଃଖି ମୋହରି ଦେଉ ।ଦ।

ଦୁଃଖି ଦୁଃଖିମାନଙ୍କ
ଦୁଃଖ-ଦୁଃଖ ଦୁଃଖୁମୋହରିଦେଉ
ଦୁଃଖି ଦୁଃଖ ନ ଦୁଃଖି ଦୁଃଖି
ମୋତେ ନ ମୋହରାରେ ଦୁଃଖୁମୋ-
ନ ଦୁଃଖି ଦୁଃଖୁମୋ ଦିଅଁ-ଦିଅଁ ନ
ଦୁଃଖି-ଦୁଃଖି ନ ଦୁଃଖୁମୋହରି ଦିଅଁ
ଦୁଃଖି ଦୁଃଖୁମୋହରି ଦେଉ ।ଦ।
ଦୁଃଖ ଦୁଃଖି ମୋହରି ଦେଉ ।ଦ।

- ଦାନୁଗୁରୁ